सूचना.

राम वर्षा का मुल्य ०॥) प्रति भाग केवल मास फरवरी तक रहेगा। मास मार्च सन १९१२ से दाम ०॥=) प्रति भाग हो जायगा, अर्थात् दोनों भागों का मुल्य फिर १।) रुपय होगा॥

प्रबन्ध कर्त्ता

विज्ञापन.

विदित हो कि स्वामी राम तीर्थ जी महाराज की अन्य पुस्तकें और उन के परम शिष्य स्वामी नारायण जी के अन्य संशोधित तथा रचित ग्रन्थ भी निम्न लिखित पते पर मिल सक्ते हैं:—

(१) अंग्रेज़ी भाषा में स्वामी राम तीर्थ जी के कुल उपदेश सहित संक्षिप्त जीवन चरितके॥ पृष्ट १६०० के लगभग। तीन भागों (जिल्दों) में विभक्त॥
मूल्य प्रति भाग विना जिल्द के १॥)　　१–८–०
,,　सहित जिल्द के २)　　२–०–०

(२) श्री वेदानुवचन (उर्दू भाषा में) बावा नगीना सिंह जी कृत और स्वामी नारायण जी से संशोधित॥ इस में उपनिषदो के गूढ़ रहस्य अति उत्तम तथा वचित्र रीति से स्पष्ट खोल कर वर्णित हैं
मूल्य विना जिल्द के १)....................१–०–०
,,　सहित　,,　१॥)...............१–८–०

(३) राम वर्षा उर्दू भाषा में भी छप रही है और स्वामी जी के कुल उपदेश अन्य भाषाओं में भी छपने वाले हैं। यह सब निम्न लिखित पते पर ही मिलेंगे॥

अमीरचंद
प्रेम धाम, बड़ा दरीबा—देहिली

NOTICE.

Books of special interest to brothers of religious trend :—

(1) Complete works of Swami Ramá Tirtha M. A. in 3 volumes, containing nearly 1600 pages and 6 photos (quite new publication)
Price cloth-bound each volume Rs. 2-0-0
" paper cover " 1-8-0

(1) Select teachings (lectures) of Swami Ráma with a brief sketch of life by Mr. Puran.
All those who cannot afford to purchase the above big work should read this small publication. Price paper cover—1-0-0

(3) Sri Shankaracharya's select works in English..................................1-8-0

(4) Aspects of the Vedànta...............0-12-0

For Catalogues &c, apply to

Amir Chand and sons
Premdhám
Bará Dareeba
DELHI.

शुद्धिपत्र.

शुद्धिपत्र. (प्रस्तावना का)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	१२	२५। १५	२५। ५५
७	१६	(मौलवी महम्मद दीन जी)	(मौलवी महम्मद अली जी)
८	५	दश (१०)	सात (७)
९	१६	सर्वदा प्रथम	बहुधा प्रथम
१०	१	सारे पंजाब भर	अपने स्कूल भर
१०	१५	तमाम पंजाब भर	तमाम स्कूल भर
१८	९	नितान्त अपरिचित	अधिक परिचय नहीं रखते थे
१९	६	(संस्कृत) से तो हीन और बेखबर	संस्कृत से तो कम प्रेम और रुचि रखते हो
१९	९	यवन भाषा में तो चतुर	यवन भाषा में अधिक रुचि रखता हो .
१९	९	कुछ	अधिक
२१	७	संस्कृत से	संस्कृत-व्याकरण से
२१	९	संस्कृत भाषा से	संस्कृत व्याकरण से

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५७	७	मास मार्गशिर	मास पौष
७५	७	एक बड़े	एक बड़े
७५	नोट की पंक्ति २	केशो आश्रम	केश्आश्रम

———()———

शुद्धि पत्र भजनों का

४०४	१२	यज़ुग	यु.ज़ुग
४११	१२	घुनता	धुनना
४३२	८	* गेत्र से	* .रोत्र से
४३२	नोट की पंक्ति ३	* .गुस्सा	दबदबा
४३९	१०	मलिया भेट	मलिया मेट
४४१	३	* क़दर	क़दर
,,	६	क़दम	* क़दम रंजा
४४०	नोटकी पंक्ति २	१७ अबर	१७ अम्बर ६८
	११	ज़ात बेहत	ज़ात बेहत
४६८	३	कटल	कुटल

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७८	६	अंजव	.अंजब

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४८०	नोट की पंक्ति २	प्रमाणु	परमाणु
४९८	नोट	समद्र	समुद्र
४९७	१	पर्दा	पर्दा
५०१	६	दो पंक्ति रह गयीं	हर दांदाः शोलाः चार है ! बिजली है खारा .आम ॥ वह तालियों की गूंज में यक दिल हुए तमाम ।
५०२	नोट	१४ दिल...१५...	१३ दिल...नम्बर १५ सारा काट दो
५०४	१	चब रंग हो दिलखाह	जब रंग हो दिलख्वाह (२)
५०६	२	हवासे .आम	हवासे .आम
,,	६	शास्त्र, युक्ति	(१) शास्त्र, युक्ति
,,	नोट	ऐलो	ऐ लो
५०७	३	हैं गाव	हैं आब
५०८	१०	मुसत्व्वर	मुत्सव्वर
५०८	नोट, ४	अरु दर्गा	और दरया

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५१०	८	१९ अमि	१९ केन्द्र
५१२	१३	सुली	सूली
५२४	१४	ओर ही	औंर हां
५२७	७	५ पनाह (आश्चर्य)	५ पनाह, आश्रय
५२८	११	पोपन	पोषण
५३५	९	जाक दर जौक़	जौक दर जौक़
५५५	९	क़ात्रू	क़ाबू
५५६	१४	५७ वाणि	७७ वाणि
५६१	९	बनीये	बंनिये
५७२	१६	२७ माप	२७ नखरे टखरे
५७५	१४	ज़ ॥ ने	ज़माने
५७६	९	९ राहत	१० राहत (सब के ऊपर १ : और बढ़ा दो)
५८०	१०	काक शास्त्र	कोक शास्त्र
५८९	१०	पौद पौदे	पौदे पौदें
५९०	११	३८ मुर्दे	३८ मुर्दे

प्रस्तावना

अर्थात

स्वामी रामतीर्थजी का संक्षिप्त जीवन चरित्र.

इस भजन पुस्तक में स्वामी राम तीर्थजी महाराज की अन्दरूनी जिन्दगी अर्थात आन्तरिक मानासिक अवस्था तो उन के मस्ती भरे भजनों से फूट २ कर स्वतः प्रकट हो रही है परन्तु उन की शारीरिक जिन्दगी अर्थात बाह्य जीवन चरित्र का इन (भजनों) से कुछ पता नहीं मिलता और न यह स्पष्ट होता है कि स्वामीजी को यह अंतिम दशा अर्थात निजानन्द का अनुभव किन २ अवस्थाओ के बीच में गुज़र कर अथवा किन २ उपायों से प्राप्त हुई॥ इस त्रुटि को पूरा करने के अर्थ उचित समझा गया कि इस प्रस्ताव में स्वामी जी का संक्षेप से जीवन चरित भी दीया जाय जिस से राम वर्षा के पाठक कुछ शिक्षा ग्रहण कर के लाभ उठा सकें॥

विक्रमीय संवत १९३०, कार्तिक शुक्ल १, बुधवार, तदनुसार

२२ अक्तूबर सन् १८७३ ईस्वी को स्वामी जी के शरीर का जन्म पञ्जाब देश, जिला गुजरां वाले के मुरारी वाले ग्राम में एक उत्तम गोस्वामी कुल में हुआ था। यह वही कुल है जिस में गोस्वामी तुलसीदासजी रामायण के कर्ता उत्पन्न हुए थे। स्वामी रामजी उन्हीं के वंशज थे। यह कुल पहले से ही अपनी प्राचीन पवित्रता के लिये प्रसिद्ध था मगर अब स्वामी राम तीर्थ जी ने इस में जन्म ले कर इस की प्रतिष्ठा और भी बढ़ा दी॥

स्वामी जी के पूज्य पिता का नाम गोस्वामी हीरानन्द जी था। स्वभाव से यह बहुत सरल सीधे सादे और क्रूर थे। स्वामी जी के जन्म लेने के थोड़े ही दिन पश्चात् उन की परम सुशीला माता का देहान्त होगया। तदनन्तर उन के पिता की प्रेम भरी बहिन अर्थात स्वामी जी की बुआ ने उन का पालन पोषण किया॥ उत्पत्ति काल में माता का दुग्ध न पाने के कारण स्वामी जी बाल्यावस्था में बहुत दुर्बल और कृश शरीर थे, परन्तु पीछे से यही शारीरिक शक्ति हीन बालक तीर्थराम जी जिस भान्ति आत्मिक बल में

प्रबल होगये उसी प्रकार शारीरक स्वास्थ्य और पुष्टता में भी इतनी उन्नति कर गये कि तीस (३०) मील दिन भर में पर्वतों पर चलना उन के लिये बालकों का सा खेल होगया ॥ और हिमालय तथा अन्य शीतल स्थानों में बिलकुल नग्न या केवल एक वस्त्र में रहना किञ्चित् मात्र भी उन्हें कष्ट न देसका ॥

स्वामी जी की बुवा (अर्थात उन के पिता की बहिन) बड़ी धार्मिक वृत्ति रखती थीं, और नित्य प्रति मन्दिरों, शिवालों और कथा स्थानों में जाया करती थीं ॥ जब जब उत्तम स्थानों में जातीं बालक तीर्थ रामजी को भी अपने साथ ले जाया करतीं ॥ बुवा जी के प्रेम भरे व धार्मिक सुभाव ने बालक तीर्थ रामजी के चित्त पर ऐसा उत्तम असर डाला कि वह अपनी बाल्यावस्था में ही उदार चित्त होगये, और नित्य मन्दिरों तथा कथा स्थानों में जाने से ईश्वर भजन और धर्म्म में लीन तथा युक्त होने लग पड़े। इतनी छोटी सी आयु में ही तीर्थ राम जी को शङ्ख ध्वनि अथवा प्रणव ध्वनि मोहने अर्थात आकर्षण करने लग पड़ी ॥ एक समय स्वामी जी ने अपने

मुखारविन्द से स्वयं यह वर्णन कीया कि:—" बाल्यावस्था में ही राम के चित्त को प्रणव या शंख की ध्वनि अपनी ओर बलपूर्वक खैंच लिया करती थी, वरन् यहां तक अपना असर डालती कि अगर राम रो भी रहा हो तो झट उस के सुनने से चुप होजाया करता था " ॥

अपने एक अङ्ग्रेजी भाषा के व्याख्यान में स्वामी जी ने अपने विषय में इस प्रकार वर्णन किया है कि:—" तीर्थ राम के दादा जी ज्योतिःशास्त्र में बड़े निपुण थे, जब राम (बालक तीर्थराम) का जन्म हुआ तो वह जन्म लग्न देखते ही रोये और हंसे ॥ जब इस हंसने और रोने का कारण पूछा गया, तो कहने लगे कि 'रोये हम इसलिये है कि यह बालक ऐसी घड़ी उत्पन्न हुआ है कि या तो यह स्वयं नहीं रहेगा और या अपनी माता पर भारी होने के कारण अपनी परम सुशीला जननी को हाथ से जल्द खो देगा। और हंसे हम इसलिये हैं कि यदि यह बालक जीता रहा तो ऐसा महात्मा और उपकारी होगा कि हमारे सारे कुल को तारेगा औ इस की

अपनी कीर्ति भी देश, देशांतर तथा लोक, परलोक में तीव्र वेग से फैलेगी ' ॥ ईश्वर की कुछ ऐसी ही इच्छा थी, या भारत वर्ष के कुछ भाग्य ही ऐसे थे कि राम की परम सुशीला माता तो एक, दो मास के भीतर ही भीतर परलोक सुधार गयीं और स्वयं राम अकेला रह गया। कुछ काल तक तो राम गाये के दूध (दुग्ध) से पला, और कुछ समय तक बुवा ने अपनी प्रेम भरी गोद में रख कर इस का पालण पोषण किया ॥ "

इस स्थान पर स्वामी जी का जन्म पत्र भी दिया जाता है, ताकि पाठकों को विदित होजाये कि स्वामी जी के पूर्व जन्म के संस्कार भी कैसे उत्तम और प्रबल थे कि जो बाल्यावस्था में ही अपना रंग दिखाने और जमाने लग पड़े ॥

विक्रमीय संवत् १९३०, शाके १७९५, कार्तिक शुक्ल १, प्रविष्टे ८, बुधवार २५। १९ स्वाति नक्षत्र मीन लग्न, तदनुसार सन १८७३ ईसवी, तारीख २२ अक्तूबर की शुभ घड़ी में गुसांई राम लालजी के लड़के गुसांई हीरानन्दजी के घर में बालक (तीर्थ राम)

का जन्म हुआ जिस का जन्म नाम स्वाति नक्षत्र में उत्प...
कारण ताराचंद रक्खा गया था ॥

मेष १ राहु	५ सिंह	९ धन्य मंगल
२ वृष	६ कन्या शुक, बृहस्पति	१० मकर शनि
३ मिथुन	७ तुला सूर्य, चन्द्रमा, बुध, केतु	११ कुम्भ
४ कर्क	८ वृश्चक	१२ मीन

(नोट) यह जन्म पत्र ज्योतिःशास्त्र के एक पूर्ण वेत्ता (पं० लाभ चन्द जी) को दिखलाया गया। उन्हों ने निम्न लिखित दश (१०) फल वर्णन कीये:—

(१) अति विद्वान हो।

(२) २१, या २२ वर्ष की आयु में परमार्थ का अधिक विचार हो।

(३) इष्ट अद्भूत हो, जैसें ओङ्कार।

(४) विलायत (देशान्तर) भी जावे।
(५) राज दरबार का नमस्कार होकर रहे नहीं।
(६) शरीर रोग ग्रस्त रहे या किसी अङ्ग में न्यूनता (नुक़्स) हो।
(७) पिछली अवस्थामें काम (विषय वृत्ति) नितान्त नष्ट हो, अर्थात काम रहित हो जावे।
(८) दो पुत्र अवश्य होने चाहियें।
(९) अल्प आयु हो, अर्थात २८ से ३५ वर्ष तक।
(१०) यदि ब्राह्मण हो तो मृत्यु जल में, और यदि क्षत्री हो तो मकान से गिर कर॥

मुराली वाले ग्राम में (जो स्वामी जी की जन्म भूमि है) एक प्राइमरी स्कूल बहुत दिनों से स्थापित था। तीर्थ राम जी बहुत ही छोटी अवस्थामें इस पाठशाला में प्रविष्ट हुए। शरीर के छोटे और पढ़ने तथा स्मरण शक्ति में अधिक चतुर देख कर पाठशाला (उस स्कूल) के बड़े अध्यापक (मौलवी महम्मददीन जी) इन पर बड़े प्रसन्न

रहते थे। स्कूल की पुस्तकों के अतिरिक्त तीर्थ राम जी ने प्राइमरी में ही गुलिस्तान् और बोस्तान् फारसी ज़ुबान् में कण्ठाग्र करलीं। प्राइमरी स्कूल की परिक्षा पास करने के पश्चात् तीर्थ राम जी आगे पढ़ने के लिये अपने पिता जी के साथ कुजरां वाले नगर में गये। यह नगर मुरालीवाला ग्राम से लग भग दश (१०) मील की दूरी पर है॥ यहां आकर तीर्थराम जी मिडल हाई स्कूल में प्रविष्ट हुए। इस समय इन की आयु लगभग दश वर्ष की थी॥ इतनी छोटी अवस्था में बालक को विना किसी संरक्षक के अकेला छोड़ना पिता जी से उचित न समझा गया, इसलिये पिता जी अपने एक परिचित मित्र भगत धन्ना राम जी के निरीक्षण (निगहबानी) में, उन के समीप एक छोटे से मकान में उन्हें आगे पढ़ने के लिये छोड़ आये॥

यह धन्ना भगत जी, उस नगर में बड़े सज्जन पुरुष और धर्मात्मा माने जाते थे। नित्य प्रति उन दिनों योग वासिष्ठ की कथा किया करते थे। कथा ऐसे उदार चित्त और प्रेम में रते हुए हृदय से होती था कि सब श्रोतागण समाधिस्थ हो जाया करते थे॥

पढ़ने में कुछ समय निकाल कर तीर्थ राम जी भी उस कथा को दत्त चित्त हो सुना करते थे ॥ स्कूल की पढ़ाइ से अतिरिक्त जो भी समय मिलता, उसे तीर्थ राम जी उन्हीं महापुरुष के सत्संग में व्यतीत कर देते थे ॥ भगत जी की प्रेम भरी और सुरीली कथा, उन की निय संङ्गति और उपदेशों ने बालक तीर्थ राम जी के चित्त पर कुछ ऐसा प्रभाव डाला कि कुछ समय के लिये वह सारे के सारे भगत जी के हो लिये। और तन, मन, धन से उन की सेवा प्रेम पूर्वक करने लगे ॥ वह अपने हृदय में भगत जी की यहां तक प्रतिष्ठा करते थे कि कोइ भी अपना काम विना उन की आज्ञा के कदाचित न करते ॥ भगत जी भी तीर्थ राम जी की श्रद्धा भक्ति और सेवा से इतने प्रसन्न रहते थे कि वह उन्हें अपना ही अङ्ग तथा रूप मानते और उन से अत्यन्त स्नेह करते थे ॥

साथ इस धार्मिक उन्नति के तीर्थ राम जी अपनी पढ़ाई (अध्ययन) में भी बड़े चतुर और अद्वितीय रहते थे। स्कूल की सब श्रेणियों में सर्वदा प्रथम ही रहे। मिडिल और इन्स्ट्रैन्स की परीक्षा

में सारे पञ्जाब भर में प्रथम (अव्वल) रहे थे। इन्ट्रैन्स कक्षा (जमाअत) के पास करने के पीछे तीर्थ राम जी के पिता उन्हें आगे पढ़ाना नहीं चाहते थे, अतः प्रति दिन उन को किसी दफतर में नौकरी करने के लिये विवश (मजबूर) करने लगे॥ तीर्थ राम जी इस छोटी (१.९ वर्ष की) आयु में इतनी जल्दी किसी दफतर की नौकरी करने में अपनी वास्तविक उन्नति न देखते थे, इसलिये इस विषय में अपने पिता जी की एक न मानी॥ इस पर पिताजी बड़े क्रोध को प्राप्त हुए, और १.९ वर्ष के युवक तीर्थ राम जी को घर से बाहर निकाल दीया, और आगे पढ़ाने के लिये एक कौड़ी भी न देने का सङ्कल्प कर लिया॥ इस तरह से असहाय (बेमदद) तीर्थ राम जी, केवल ईश्वर पर निश्चय और आश्रय (भरोसा) रखते हुए, शान्त चित्त से घर से निकलकर, आगे पढ़ाई आरम्भ करने के अर्थ लाहौर नगर में आ गये॥

तमाम पञ्जाब में इन्ट्रैन्स की परीक्षा में तो प्रथम रहे ही थे इस लिये अपनी श्रेणी के सब विद्यार्थियों से अधिक छात्र वेतन

(वज़ीफा) इन के भाग में आया हुआ था, इस वृत्ति (वज़ीफे) की सहायतासे युवक तीर्थ राम जी लाहौर के 'फोरमैन क्रिश्चियन' (मिशन) कालज में भरती हो गये। और ऐफ़, ए, कक्षा की पढ़ाई पढ़ने लगे॥ शारीरक निर्वाहर्थ एक, दो प्राइवेट ट्यूशन (अध्यापकता का काम) भी कर लिये ताकि पढ़ने में कुछ विक्षेप न आ पड़े॥

अपनी ऐसी दशा में भी तीर्थ राम जी ऐफ़, ए की परीक्षा में प्रथम रहे, और अब पहिले से भी अधिक छात्र वृत्ति (वज़ीफा) पाने लगे॥ इस वृत्ति की सहायता से फिर आगे बी, ए की कक्षा में पढ़ने लगे॥ इस समय के लगभग तीर्थ राम जी के पिताजी क्रोड़ में आकर उन की अर्धङ्गी को भी उन के पास सौंप गये और उस के पालण पोपण का कुल ज़िम्मा तथा अधिकार उन के ऊपर ही छोड़ गये थे जिस से अब खर्च पहिले से भी विशेष बढ़ गया। अब केवल वृत्ति (वज़ीफे) से निर्वाह होना अति कठिन था, इस लीये राय बहादुर लाला मेला राम (लाहौर के रईस) के दोनो सुशील पुत्रों के पढ़ाने की डियोटियां लेलीं। इन दिनों एसी अवस्था

के प्राप्त होने पर भी तीर्थ राम जी के चित्त की जो दशा तथा वृत्ति रहती थी वह उन के पत्रों से, जो उन्हों ने उन दिनों अपने पूजनीय भगत धन्ना राम जी के पास भेजे थे, स्पष्ट प्रकट हो रही है। दृष्टान्त के तौर पर एक या दो पत्रों का यहां उल्लेख कीया जाता है:—

९ फरवरी सन् १८९४ (१.१ बजे रात्रि)

भगवन्,

आप का एक कृपा पत्र इस समय और मिला! निहायत खुशी हुई! मैं आज कल पांच बजे सवेरे सो कर उठता हूं और सात बजे तक पढ़ता रहता हूं, फिर शौच आदि से निवृत्त होकर स्नान करता हूं, और व्यायाम (कसरत) करता हूं। उस के बाद पंडित जी की तर्फ जाता हूं! रास्ते में पढ़ता रहता हूं। वहां एक घंटे के बाद रोटी खा कर उन के साथ गाड़ी में कालिज से डेरे आते समय रास्ते में दूध पीता हूं। डेरे पर कुछ मिनट ठैहर कर नदी की ओर जाता हूं। वहां जाकर नदी किनारे पर कोई आध घंटे के

लगभग टहलता रहता हूं, वहां से वापस आती वार सारे शहर के गिर्द बाग़ में फिरता हूं। वहां से डेरे आन कर कोठे पर टहलता रहता हूं! इतने में अन्धेरा होजाता है। (मगर यह याद रहे कि मैं चलते फिरते पढ़ता बराबर रहता हूं), अन्धेरा होते कसरत करता हूं और लैम्प जला कर सात बजे तक पढ़ता हूं। फिर रोटी खाने जाता हूं और प्रेम तर्फ भी जाता हूं। वहां से आन कर कोई १० या १२ मिनट अपने मकान में कसरत करता हूं। फिर कोई १०॥ (साढे दस) बजे तक पढ़ता हूं। मेरे तजरुबे में यह आया है कि अगर हमारा मेदा ऐन सिहत की हालत में रहे तो हमें क-माल दर्जे का सरूर (आनन्द) फरहत (सुख) दिल का यकसू होना (चित्तकि एकाग्रता) परमेश्वर की याद और पाक बातनी (अन्तःकरण की पवित्रता) हासिल होती है। और बुद्धि: और धारणा शक्ति निहायत तेज़ होती है! अव्वल तो मैं खाता ही बहुत कम हूं, दोयम जो खाता हूं खूब पचा लेता हूं॥

राम

दूसरा पत्र,

५ जुलाई सन् १८९४।

महाराज जी। परमेश्वर बड़ा ही चंगा है। मुझे बड़ा ही प्यारा लगता है। आप उस के साथ सुलह (मेल) रक्खा करो। आप के साथ जो कभी २ ज़रा सख्ती से पेश आता है यह उस के विलास हैं। वह आप के साथ हंसी मखौल करना चाहता है। हमें चाहिये कि हंसने वालों से खफा न हो जायें। किसी और खत (पत्र) में मैं आप की खिदमत में उस की कई बातें .अर्ज़ करूंगा। यह खत मैं मेज़ पर रख कर लिख रहा हूं। यहां सुबह थोड़ी सी खांड गिर पड़ी थी। उस खांड के पास चार पांच कीड़ियां इकट्ठी हो रही हैं और वह सब मेरी क़लम की तर्फ और हर्फों की तर्फ तक रही हैं। और आपस में बड़ी बातें कर रही हैं॥ जितनी बात चीत मैं ने उन से सुनी है वह .अर्ज़ करता हूं। मगर पेहले मैं यह .अर्ज़ करना चाहता हूं कि गो मेरा खत (लिखना) बहुत ही खराब और नाक़िस है मगर उन कीड़ियों की निगाह में तो चीन के

नक़्शो निगार से कम नहीं ॥ जो कीड़ी सब से पैहले बोली वह बड़ी अज्ञान थी। अभी वह नन्हीं (बहुत छोटी) ही थी। पेहिली कीड़ी कहती है :—देख बेहिन ! इस क़लम की कारीगरी ! कागज़ पर क्या गोल २ घेरे डाल रही है। इस डाली हुइ लकीरों यानी हरफों को सब लोग बड़ी प्रीति से अपनी आंखों के पास रखते हैं (यानी पढते हैं)। और जिस कागज़ पर क़लम निशानियां करे (यानी लिख दे है) उस कागज़ को लोग हाथों में लिये फिरते हैं। (यह क़लम) कागज़ पर गोया मोती डाल रही है। क्या रंगामेज़ियां हैं ?। य . बाजे २ हरफ तो खास हमारे बेटों (यानी कीड़ीयां) की तसवीरों की तरह माल्म होते हैं। क्या ही खूबसूरत हैं।

क़लम गोयद कि मन शाहे जहानम्।
क़लमकश रा बदौलत मी रसानम ॥

(अर्थ :—क़लम कहती है कि मैं जहान की बादशाह हूं और क़लम के चलाने वाले को दौलत तक पहुंचा देती हूं ॥)

इस क़लम में जान नहीं है, मगर हमारे जैसे जानदारों को बीसियों दफ़ा पैदा कर सक्ती है"। इतना कह कर पहिली कीड़ी खामोश (चुप) होगयी ॥ अब दूसरी बोली। यह कीड़ी पहिले से कुछ बड़ी थी और उस से ज़ियादह बसारत (दृष्टि) रखती थी, यानी उस की आंखें तेज़ थीं ॥ दूसरी कीड़ी:—"मेरी भोली बहिन! तू देखती नहीं है कि क़लम तो बिलकुल मुर्दा: चीज़ है। वह तो बिलकुल कुछ काम नहीं कर सक्ती। दो उंगलियां उसे चला रही हैं। जितनी सिफ़त तू ने की है यह सब उंगलियों पर आयद होनी चाहिये"॥ अब एक इन दोनों से बड़ी कीड़ी बोली:—"यह तुम दोनो अभी अनजान हो, उंगलियां तो पतली २ रस्सियों की तरह हैं। वह क्या कर सक्ती हैं। यह मोटी बांह इन सब से काम ले रही है"॥ अब इन कीड़ियों की मां बोली:—यह सब क़लम, उंगलियां, बांह, बाज़ू, वग़ैरा: इस बड़े मोटे धड़ के आश्रय से काम कर रहे हैं। यह सब तारीफ़ इस धड़ को मौज़ूं है"॥ इतना कह कर कीड़ियां जब चुपकी हुई तो मैं ने इन से यह कहा:—

"ऐ मेरे दूसरे स्वरूपों ! यह धड़ भी जड़ रूप है। इस को भी एक और चीज़ का आश्रय है, यानी जान (प्राण) का। इस लिये तारीफ उस जान की शान में वाजिब है" ॥ मैं ने इतना कहा, तो मेरे दिल में आप की तर्फ से आवाज़ आई। वे आप के वचन भी मैं ने उन कीड़ियों को सुनाये ॥ उन का खुलासा दर्ज करता हूं। "आदमी की जान से परे भी एक वस्तु है, अर्थात पर-मात्मा। उस वस्तु के आश्रय सब भूत चेष्टा करते हैं, दुन्या में जो कुछ होता है उसी की मरज़ी से होता है। पुतलियां बग़ैर तार वाले के नहीं नाच सक्तीं। बांसुरी बग़ैर बजाने वाले के नहीं बज सक्ती। इसी तरह से दुन्या के लोग बग़ैर उस के हुक्म के कोई काम नहीं कर सक्ते ॥ जैसे तलवार का काम गो मारना है मगर वह तल्वार बग़ैर चलाने वाले के नहीं चलसक्ती। इसी तरह से गो बाज़ लोगों के स्वभाव बहुत ही खराब क्यों न हों जब तक उन्हें परमेश्वर न उकसाये वह हमें तकलीफ़ नहीं पहुंचा सक्ते ॥ जैसे बादशाह के साथ सुलाह करने से तमाम अमला हमारा दोस्त बन जाता है, इसी तरह से परमात्मा को राज़ी रखने से तमाम खल्क़

हमारी अपनी होजाती है" ॥ (फक्क)=राम

इन्ही दिनों में युवक तीर्थरामजी बी. ए. में पढ़ते थे। अपनी श्रेणि (जमाअत) में सर्वदा प्रथम रहते थे ॥ सहपाठी (अपनी श्रेणि के लड़के) इन को गोस्वामी तीर्थ रामजी करके प्रतिष्ठा से पुकारा करते थे। थोड़े काल पश्चात् विशेष मेल मिलाप के कारण इन के मित्र इन्हें गोस्वामी तीर्थ राम के स्थान पर केवल गुसाईं जी करकें पुकारने लगे ॥ इस से इन का नाम गुसाईंजी ही पड़ गया ॥ इस समय तक तीर्थ रामजी संस्कृत भाषा से नितान्त अपरिचित थे, केवल थोड़ी हिन्दी जानते थे। मगर फारसी ज़ुबान में अति निपुण थे, इसलिये कालेज के मौलवी साहिब इन पर सर्वदा अति प्रसन्न रहते और इन की स्तुति में घंटों व्यतीत कर देते थे॥ मौलवी जी (फारसी भाषा के प्रोफेसर जी) की यह नित्य स्तुति और तीर्थ राम जी की फारसी की योग्यता (जो कालेज में अति प्रसिद्ध अर्थात मशहूर हो रही थी) कालेज के कुछ लड़कों को जो कि संस्कृत भाषामें निपुण और संस्कृत की उन्नति के बड़े इच्छुक

(स्त्राहा) थे, बड़ा दुःख दिया करती थी॥ उन में से कुछ एक प्यारों से तो, एक समय त्रिलकुल रहा न गया और वह तीर्थ राम जी के पास आकर यूं कटाक्षों और बोली तानों से त्रातें करने लगे:— "देखीये! आप हो तो ब्राह्मण और गोस्त्रामी (यानी श्री तुलसी दास जी के वंश से उत्पन्न हुए २) परन्तु कितने खेद की त्रात है कि आप अपनी कुल की असली भाषा (संस्कृत) से तो हीन और बेखबर हो और यवन भाषामें दिन रात यत्न करते और नाम पा रहे हो। क्या ब्राह्मण के वास्ते यह मरण तुल्य नहीं कि वह यवन भाषा में तो चतुर हो और अपनी असली मात्रि भाषा का कुछ ज्ञान न रखता हो?। अगर उत्तम कुल ब्राह्मणों में भी केवल यवन भाषा (फारसी) का प्रचार और संस्कृत भाषा का अभव होने लग पड़ेगा, तो ब्राह्मण कुल का नाश जल्द होने लग जायगा। और अपने कुल नाशक आप जैसे ही ब्राह्मण होंगे, जो संस्कृत भाषा के सीखने में तो कुछ समय और चित्त न दें और सारी जिन्दगी और बल केवल यवन भाषा के ही सिखने में लगावें"॥ इस प्रकार के सखत कटाक्षों और अपने मित्र प्यारों की बोली तानों ने तीर्थ

राम जी के दिल को अत्यन्त ज़ख़मी (घायल) कर दीया । और घायल हुआ दिल अपने ज़ख़्मों को धोने और मिटाने की ख़ातर तीर्थ राम जी से अपने मित्रों के साह्मने यूं प्रणय कराने लगाः—"कि: अच्छा मैं ब्राह्मण का पुत्र नहीं हूंगा यदि मैं फारसी भाषा को बी. ए. की परिक्षामें लूं, और यदि इसी श्रेणीमें कल से ही संस्कृत सीखने न लग पड़ूं ॥ बस कल से तीर्थराम संस्कृत भाषा का ही अध्ययन आरम्भ कर देगा और इस साल बी. ए. की परिक्षा में फारसी के स्थान पर संस्कृत ही दूसरी भाषा (Second Language) लेगा" ॥ यह प्रणय कीया जाना ही था कि दूसरे दिन गोस्वामी तीर्थ राम जी ने फारसी भाषा को छोड़ने की .अर्ज़ी और संस्कृत भाषा की श्रेणी (फरीक़) में दाखल होने की दरख़्वास्त झट अपने कालेज के परिन्सिपल साहिब के पास भेज दी ॥ यह ख़बर सुनते ही कालेज में एक कुलाहल (बड़ा शोर) सा मच गया, और खासकर फारसी भाषा के प्रोफेसर साहिब (मौलवीजी) के चित्त पर बड़ी सख़्त चोट वज्रवत पड़ी । मौल्वी साहिब ने तीर्थ राम जी को इस चेष्टा से मुड़ने के लिये बहुत समझाया बुझाया, परन्तु उन्हों ने मौल्वी साहिब की

एक न सुनी। अपनी ज़िद पर स्थायी (क़ायम) रहे॥ तीर्थ राम जी तो संस्कृत पढ़ने की ओर झुके, पर संस्कृत की श्रेणी में पंडित जी महाराज उन्हें प्रविष्ट करने को तय्यार न हुए॥ पंडितजी ने तो उलटा परिन्सिपल साहिब के पास जाकर यह शकायत की:— "कि इस लड़के (तीर्थ राम) ने अभी तक अक्षर भी संस्कृत व्याकरण का नहीं पढ़ा है, और शुरु से आज तक फारसी भाषा ही पढ़ता आया है, भला ऐसे संस्कृत से बिलकुल न खबर रखने वाले विद्यार्थी को मैं अपने हाँ कैसे प्रवेश (दाखल) कर लूं, और न ऐसा संस्कृत भाषा से हीन विद्यार्थी बी. ए. की संस्कृत श्रेणीमें प्रविष्ट किया जाना चाहिये। इस से तो अन्त में मेरी बहुत अपकीर्ति (बदनामी) होगी" ऐसा सुनने पर परिन्सिपल साहिब ने अपनी कोई राये प्रकट न की और पंडित जी महाराजा के ऊपर ही इस मुआमले का फैसला छोड़ दीया॥

पंडित जी के ऐसे तकरार और फैसलों से तीर्थ राम जी एक बड़े उलझन में फंस गये। इधर से तो पंडित जी अपनी संस्कृत श्रेणी (जमाऽत) में उन को प्रविष्ट होने न दें, और उधर अपने

प्रणय के कारण अपनी पैहली फारसी भाषा की श्रेणी में जाने को तीर्थ राम जी का दिल तय्यार न हो, और वहां जाते भी वह शरमावें ॥ इस प्रकार एक दो सप्ताहा तक तो तीर्थ राम जी न फारसी की श्रेणी में जा सके और न संस्कृत श्रेणी में ही प्रविष्ट हो सके। अपने उन्ही मित्रों से, कि जिन्हों ने संस्कृत पढ़ने के लिये उकसाया था, उनसे घर पर खूब मन चित्त से संस्कृत पढ़ने लगे॥ इस संस्कृत अध्ययन में तो कुछ दिन तक तीर्थरामजी अपना सारा समय खर्च करने लगे। और अपने मित्रों से संस्कृत का बी. ए. कोर्स (रघु-वंश) और अन्य छोटी व्याकरण की पुस्तकें पढ़ कर दत्त चित्त से याद करने लगे॥ थोड़े समय पश्चात जब तीर्थरामजी ने रघुवंश का कुछ भाग कण्ठस्थ कर लिया और संस्कृत के प्रोफैस्सर साहिब को जा कर अपने आप सुनाया, तो पंडित जी अति विस्मित और आश्चर्यमय होगये, और कहने लगे—"कि हमें नितान्त (बिलकुल) पता नहीं था कि तुम इस कदर [illegible] शक्ति वाले (ज़हीन) हो, जो थोड़े ही दिनों में रघुवंश को इतना याद कर के ले आये कि जितना विद्यार्थियों ने अपनी बी. ए. की श्रेणी में आज तक केई

मास के भीतर पढ़ा है। शाबाश !, आज ही मैं परिन्सिपल साहिब को आप की विद्वत्ता (काबलीयत) की स्तुति (तारीफ) करता हूं और अपनी भूल दर्शा कर आप को संस्कृत श्रेणि में प्रवेश करने की आज्ञा ले आता हूं " इस तरह से कुछ समय पीछे तीर्थ राम जी का नाम संस्कृत श्रेणिमें दर्ज होगया और वह बड़ी लग्न से संस्कृत को पढ़ने लगे। बरन अन्य भाषाओं की निस्बत अपना बहुत सा समय उन्हों ने केवल इसी (नवीन भाषा) के अध्ययन में अर्पण करना आरम्भ कीया ॥

उस साल बी-ए-की परीक्षा बहुत ही कठिन हुई थी। विशेष करके अंग्रेजी का परचा इतना कठिन था कि सैंकड़ों उत्तम २ विद्यार्थी परीक्षा पास न कर सके ॥ तीर्थ राम जी को अपना प्रण निभाने के अर्थ बहुत सा समय केवल संस्कृत भाषा की तय्यारी में खर्च करना पड़ाथा जिस से अन्य भाषाओं (विषयों) में शायद पूरी २ तय्यारी न होसकी। इसलिये वह भी इस समय केवल चार नम्बरों की खातर शायद अङ्ग्रेजी में रह गये ॥

पंजाब विश्व विद्यालय (यूनिवर्सिटी) के कुछ मैम्बरों ने जब

तीर्थ राम जी के सब पर्चों के नम्बरों को जोड़ करके देखा, तो बड़े आश्चर्य होकर कहने लगे कि "अगर इस विद्यार्थी को अंग्रेजी के पर्चे में केवल चार नम्बर और मिल जाते तो यह फिर पंजाब भर में प्रथम रहता" ॥ परीक्षा पास न होने का दुःख तो तीर्थ राम जी को हो ही रहा था, परन्तु इस खबर के सुनते ही उन के दिल पर और सखत चोट लगी। जिस किसी अन्य ने भी यह सुना, वह भी अति दुःख को प्राप्त हुवा ॥

जब विश्व विद्यालय (यूनीवर्सटी) के चन्द पुरुषों के दिल पर तीर्थ राम जी जैसे चतुर और कुल परीक्षा के पर्चों में सब से अधिक नम्बर रखने वाले विद्यार्थी के फ़ेल होने से सखत चोट लगी तो उन सब ने अकट्ठे मिलकर भविष्यत काल के लिये यह नियम यूनीवर्सटी से पास करा दीया कि "जिस किसी विद्यार्थी के किसी पर्चे में नियत नम्बरों से पांच नम्बर घट हों अथवा कुल पर्चों के नम्बरों के जोड़ (aggregate) में पांच नम्बर कम हों, तो वह विद्यार्थी झट फ़ेल न कीया जाये। बलकि: उसे दुबारा विचार के लिये: (Under consideration अंडर कान्सिडरेशन) रक्खा जाये।"

ऐसा नियम पास होजाने से भविष्य काल के लिये तो विद्यार्थीयों को कुछ सुगमता होगयी, परन्तु वर्तमान काल के लिये कोई नियम ऐसा मुकर्रर होने न पाया कि जिस से थोड़े नम्बरों से फेल हुए २ विद्यार्थी अभी ही पास कीये जा सकें। इस तरह से तीर्थ राम जी को उसी श्रेणि (बी–ए) में रहना पड़ा और अपने छात्र वेतन (वज़ीफे) से भी रहित होना पड़ा ॥ उस समय में जो कुछ उन के दिल में गुज़रता होगा उस का अन्दाजा पाठक अपने दिल में खुद लगा सक्ते हैं या तीर्थ राम जी ही स्वयं पूर्ण रीति से बता सक्ते हैं। लेखक की लेखनी तो भला कैसे पूरा २ दर्शा सक्ती है॥ परन्तु जो कुछ इस विषयमें स्वामीजीने अपने मुखार्विन्द से अपनी संन्यास अवस्था में लेखक को वर्णन कीया था वह पाठकों के लिये नीचे दर्ज कीया जाता है:—

"बी–ए फेल होने की खबर जब राम को मिली तो दिल पर वज्र वत चोट लगी। मानो कि अभी दिल टूटा कि टूटा। आंसूवों का तार बन्ध गया (अश्रूपात तीव्र वेग से होनेलगे), मानो शोक का एक पहाड़ टूट पड़ा॥ पिता जी तो पहले ही से एक कौड़ी की

मदद नहीं देते थे। सहायता तो क्या, उल्टा राम की अर्धांगी (बीवी) को राम के पास (छोटी अवस्था में ही) लाहौर सौंप गये थे, जिस से ऐफ़-ए श्रेणि में ही गृहस्थ का बोझ राम पर डाल दीया गया था, सिर्फ़ मासिक छात्र वेतन से यह सब बोझ सहारा जा रहा था, पर जब बी- ए फेल होजाने से छात्र वेतन (वज़ीफा) सरकारी) भी बन्द होगया, किसी प्रकार की सहायता बाहर से आती दीख न पड़ी, तो उस समय चित्त भी धैर्य को छोड़ने लग पड़ा ॥ ऐसी व्याकुल अवस्था में चित्त को अगर कोई ठौर शान्ति दायक मिल्ती थी तो वह निज स्वरूप का ध्यान तथा प्यारे कृष्ण का प्रेम भरा स्मरण था। उस समय अन्तः हृदय (हृदय की तैः) से बड़े ज़ोर से अश्रुवों के साथ यह श्लोक लगातार निकल्ते रहतेथे :—

> "त्वमेव माता च पिता त्वमेव
> त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
> त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
> त्वमेव सर्व, मम देव देव"

प्रति दिन ईश्वर से यह प्रणय राम लिख कर करता था कि "बस

"प्रभो ! अब राम तुम्हारा और तुम राम के होलिये। राम का काम तो नित्य आप का स्मरण और आप की मर्जी पर राजी रहना होगा और आप का काम अब राम की सर्व प्रकार की सहायता करना होगा॥ राम का शरीर उस का अपना नहीं रहा, बल्कि सारा का सारा आप का होगया, होगया, होगया !!! अब चाहे रक्खो और चाहे मारो।"

"कुंदन के हम डले हैं जब चाहे तू गला ले
बावर न हो तो हम को ले आज आज़माले
जैसे तेरी खुशी हो सब नाच तू नचा ले
सब छान बीन कर ले हर तौर दिल जमाले
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा है।
यहां यूं भी वाह वा है और यूं भी वाह वा है॥
या दिल से अब खुश होकर कर हम को प्यार, प्यारे !
ख्वाह तेग़ खेंच, ज़ालम! टुकड़े उड़ा हमारे
जीता रक्खे तू हम को या तन से सिर उतारे
अब तो फ़कीर आशक़ कहते हैं यूं पुकारे

राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा है।
यहां यूं भी वाह वा है, और यूं भी वाह वा है॥"

इस प्रकार राम ईश्वर ध्यान में नित्य युक्त रहते, और उन कि चित्त वृत्ति एक दिन ऐसे युक्त हो ही रही थी कि झट एक पत्र उन के अपने मासड़, डाकटर रघुनाथ दास असिसटंट सर्जिन से निम्न लिखित शब्दों मे आया :—"ऐ बेटा तीर्थ राम! तुम घबराओ नहीं। धैर्य का आश्रय लो, अध्ययन को मत छोड़ो। कालेज में फिर दाखल होजाओ। २५) या २०) रुपये मासिक मैं खुद तुम्हारी सहायता के लिये भेजा करूंगा। एक या दो प्राईवेट डियोटियां भी ले लो, और आगे पढ़ने से हिम्मत व हौंसला मत छोड़ो॥" इस प्रकार अपने मौसे व अन्य कई प्यारों की सहायता से तीर्थ राम जी ने पुनः बी-ए. की तिय्यारी की, और इस समय सारे पंजाब भर में (परीक्षा में) प्रथम निकले, और आगे ऐम, ए, श्रेणि में पढ़ने के लिये बहुत बड़ी रक़म. का छात्र वेतन (वज़ीफ़ा) पाया॥

बी-ए, पास करने के पश्चात अपना नाम तो गुसाईं (तीर्थ

राम) जी ने गवर्नमेन्ट कालेज लाहौर में ऐम--ए पढ़ने के लिये दाखल करा लीया, और आप कुछ समय तक फोरमैन कालेज लाहौर में बी--ए श्रेणि को विना कुछ वेतन लिये गणित पढ़ाते रहे॥ इस परोपकार में युक्त होते हुए भी गुसांई जी ऐम--ए की गणित परीक्षा में प्रथम रहे। इस समय इन की आयुः २२ वर्ष के लगभग थी॥

ऐम--ए की परीक्षा में प्रथम निकलने के कुछ काल पीछे लाहौर नगर मे यह खबर उड़ी कि गुसाई तीर्थ राम जी पंजाब यूनिवर्स्टी की ओर से इस साल लंडन भेजे जायेंगे॥ जब ऐसी खबर दूर २ तक फैल गयी, और लोगों ने गुसाईं जी से पूछा, कि आप बाहर देशों (विलायत) में जा कर क्या पठन पाठन करेंगे, तो उनहों ने हर एक को यही जवाब दीया कि (I shall either become teacher or preacher) " मैं वहां जाकर या तो उस्ताद (आचर्य) बनूंगा और या उपदेशक, मगर किसी तरह की अन्य नौकरी (सिविल सरविस इत्यादि) के लिये किञ्चित मात्र कोशश नहीं करूंगा "॥ दैवयोग से गुसाईं जी को बाहर (विलायतों में) जाने का अवसर न मिला और उन का अपना हृदयस्थ ख्याल यहां

ही पूर्ण रीति से परिपूर्ण हो गया ॥ कुछ काल तक तो वह स्यालकोट में हाई स्कूल के हैडमास्टर रहे, तत्पश्चात् गवरनमेन्ट कालेज मे कुछ समय तक प्रोफ़ेसर हुए। और अन्त में जब चित्त की धार्मिक अवस्था और उदारता इतनी बढ़ गयी कि छे घंटे तक बराबर व्यवहारिक काम में लगे रहना उन के लिये कुछ कठिन तथा दुभर हो गया, तो सिर्फ १ या दो घंटे तक गणित और वेदान्त पढ़ाने की खातर ओर्यन्टल कालेज की (नौकरी) प्रोफ़ेसरी स्वीकार कर ली ॥ और जब दो घंटे तक भी व्यवहारिक कर्मों में दिल न लगने पाया, बल्कि चित्त कुल का कुल परमार्थ का हो लिया, तो जुलाई सन १९०० में यह प्रोफ़ेसरी भी आखर को छोड़ दी गयी ॥

ऐम-ए पास करने के पश्चात् कुछ समय तक गुसाई तीर्थ राम जी कृष्ण भगवान के बड़े भक्त रहे ॥ यद्यपि वेदान्त शास्त्र में खूब प्रीति रखते थे, परन्तु दिल नित्य कृष्ण महाराज की अनन्य भक्ति में डूबा रहता था, इस लिये कृष्णगीता और कृष्ण लीला उन के दिल पर सब से अधिक चोट लगाया करती थीं ॥ जब कालिज में

तीन मास. के लिये ग्रीष्म ऋतु में छुटियें (अनध्यायें) मिलतीं तो गुसाईं जी अपना सारा काल (रुखसतों का) मथुरा वृन्दावन में रासलीला के देखने में काट देते। कृष्ण लीला तो विशेष करके उन के चित पर बहुत चुटिकियें भरा करती थी॥ इस तीव्र भक्ति का यह फल मिला, कि गुसाईं जी को समय २ पर कृष्ण महाराज के साक्षात दर्शन होते थे॥ गृहस्थाश्रम में एक समय गुसाईं जी ने लेखक को इस प्रकार वर्णन कीया कि "आज हमारे गोल् यार अर्थात कृष्ण महाराज ने स्नान करते समय खूब दर्शन दीयें, और आपस में खूब मुटभीर हुई (अर्थात गले लगा खूब घुट कर मिले), मगर मिलने के थोडे ही समय पीछे हाथ पर हाथ मार कर तिरोधान हो गये"॥ यह दशा गुसाईं जी पर बहुत वार आया करती थी। और वह भक्ति में ऐसे रते हुए थे कि अपना सर्वस्थ कृष्णार्पण कीया हुआ था। हर एक आशा और हर एक कार्य को कृष्ण महाराज की आज्ञा और इच्छा पर छोड़ रक्खा था॥

इस कृष्णभक्ति के ज़माने (काल) में गुसाईंजी लाहौर सनातन धर्म सभा के मन्त्री (सैक्रटरी) नियत हुए॥ उस समय सनातन

धर्म सभा के प्लैटफौर्म पर जब गुसाईं जी कृष्ण महाराज के विषय में व्याख्यान देते तो तीव्र वेगसे उन के अश्रुपात होजाते, कपड़े सब प्रेमांसुवों से भीग जाते, और अपनी भक्ति के जोर से सब श्रोता-गणों के हृदयों में कूट २ कर कृष्ण भक्ति भर दीया करते थे ॥ यह लेखक का अपना अनुभव (तजरुबा) है कि अमृतसर नगरमें सनातन धर्म सभा के वार्षिक उत्सव पर जो असर श्रोतागण के चित्त पर गुसाईं तीर्थरामजी के भक्ति भरे उपदेशों ने डाला था वह अन्य वक्ता के उपदेशों से नहीं हुवा था। खासकर गुसाईंजी के कृष्ण-गीता और कृष्णलीला पर के व्याख्यानोंमें जो असर विशेष कर के लेखक के हृदय पर पड़ा था वह तो अकथनीय है ॥ यद्यपि उन दिनों लेखक कृष्ण महाराज का आचरण प्रशंसनीय नहीं समझता था, और न उन की रासलीला से कुछ भी लग्न (रग़्बत) रखता था, और न भगवद्गीतामें विशेष कर के श्रद्धा थी, तथापि गुसाईंजी के अति प्रेम भरे व्याख्यानों ने चित्त पर कुछ एसा जादूभरा असर डाला कि लेखक (नारायण) जैसा अश्रद्धालु भी कृष्ण गीता के पढ़ने और भगवान की कोई लीला के लक्ष्यार्थ समझने में तत्पर हो गया ॥ इस तीव्र भक्ति के काल

में जो दशा गुसाईं जी के चित्त की रहती थी वह उन के निम्न लिखित पत्र से जो उन्हों ने दीपमाला के दिन पिता जी को भेजा था स्पष्ट प्रकट हो रही है :—

लाहौर २६ अक्टूबर सन १८९७

महाराज जी,

चरण वन्दना ! नाज़िशनामा सामीशर्फ़ सिदूर लाया, अज़हद आनन्द हुवा। आप के लड़के तीर्थ राम का शरीर तो अब बिक गया, बिक गया। राम के आगे उस का अपना नहीं रहा। आज दिवाली को अपना शरीर हार दीया और महाराज (भगवान) को जीत लीया। आप को मुबारक (धन्यवाद)॥ अब जिस चीज़ की ज़रूरत हो मेरे मालिक से मांगो, वह फ़ौरन खुद दे देंगे, या मुझ से भिजवा देंगे। मगर एक दफ़ा निश्चय के साथ आप उन से मांगो तो सही॥ उन्नीस बीस दिन के मेरे कुल काम बड़ी हुश्यारी से अब वह खुद करने लग पड़े हैं। आप के क्यों न करेंगे ? घबराना ठीक नहीं। जैसी उन की आज्ञा होगी .अमल होता जायेगा। महाराज (राम भगवान) ही हम गुसाइयों का धन हैं। अपने निज

के सर्व धन को त्याग कर संसार की झूठी कौड़ियों के पीछे पड़ना हम को मुनासब नहीं। और उन कौड़ियों के न मिलने पर अफसोस करना तो बहुत ही बुरा है। अपने असली माल और दौलत का मजा एक दफा ले तो देखो॥

इस आत्म समर्पण काल के लग भग द्वारका मठ के मठधारी अर्थात द्वारकाधीश श्री १०८ स्वामी शंकराचार्य जी महाराज दैव योग से लाहौर में पधारे। आप ब्रह्म सूत्रों, उपनिषदों और वेदान्त के अन्य प्रकरण ग्रन्थों में अति निपुण थे। आप की विद्वत्ता और स्वरूप में निष्ठा अति प्रसिद्ध थी। दिन के समय भी आप के सिंहासन के आगे दो ज्वाला (मिशालें) नित्य प्रति जला करती थीं॥ गुसांई जी को इन दिनों सनातन धर्म सभा में मन्त्री होन के कारण सभा का बहुत सा काम स्वयं करना पड़ता था, इसलिये श्री १०८ स्वामी शङ्कराचार्य की भी सेवा का बहुत सा भाग स्वतः उन के हिस्से में आ गया। जिस को गुसाईं जी ने अति प्रसन्न चित से प्रेम पूर्वक निभाया॥ गुसाईं जी की अति प्रेम भरी सेवा से वह वृद्ध महात्मा (परम गुरु श्री शङ्करा चार्य जी महाराज) इतने प्रसन्न हुए

कि गुसाईं जी को अपने साथ कुछ समय तक अपनी संगति में रखना उचित समझने लगे। बलकि: एक दिन हर्ष में आकर वह ऐसे कहने लगे " कि हम को इस सारे सफर (देशाटन) में गुसाईं तीर्थराम जी जैसा भक्त और ब्रह्म विद्या का जिज्ञासु अभी तक नहीं मिला। अगर यह कुछ काल हमारे साथ रहें तो हमें भी बड़ी खुशी हो और यह भी शायद शीघ्र अपने निजानन्द में रंगे जायें॥

यह खुशखबरी जब गुसाईं जी के कान तक पहुंची तो वह झट श्री १०८ स्वामी शङ्कराचार्य जी के साथ चलने को तय्यार होने लगे। कुछ छुट्टियां तो कालेज से पैहिले ही मिली हुई थीं कुछ और ले कर उन के साथ होलिये। और उन की कशमीर यात्रा में गुसाईं जी उन (परम गुरु) के मंत्री का काम करते रहे, और बड़े प्रेम भरे, प्रसन्न चित्त से सारे रास्ते भर उन की सेवा की इस सेवा और संगत का यह फल मिला कि गुसाईं जी ने परम गुरु शङ्कराचार्य से बड़ी उत्तमरीति से प्रेम पूर्वक ब्रह्म सूत्र और उपनिषदों के भाष्य पढ़े और सुने॥

यह पैहिले ही वर्णन होचुका है कि परम गुरु श्रीशङ्कराचार्य

जी ब्रह्म सूत्र, उपनिषदों और वेदान्त के अन्य ग्रन्थों में अति निपुण थे और सर्व शास्त्रों तथा संस्कृत भाषा के पूर्ण वेत्ता थे। बल्कि भारत वर्ष में यह प्रसिद्ध हो रहा था, कि: वह अपने काल के वेदान्त और संस्कृत में अद्वितीय महात्मा हैं। और यह भी दर्शाया जा चुका है कि गुसाईं तीर्थ राम जी प्रेम और श्रद्धा से भरे हुवे और धुले हुए चित्त वाले थे। इसलिये परम गुरु शङ्कराचार्य जी के मस्ती भरे उपदेशों, ब्रह्मसूत्र और उपनिषदों की कथाओं ने गुसाईं जी के शुद्ध: अन्तःकरण पर कुछ ऐसा असर डाला कि: वहां अब वेदान्त पूर्ण रीति से अपना परिग्रह (कबज़ा) जमाने लग गया। और प्रेम की ज़रदी ज्ञान की लाली में बदलने लगपड़ी ॥ ज्ञान का मस्ती भरा रंग चढ़ते ही गुसाईं जी अपने चित्त से वशी भूत हुए परम गुरु शङ्कराचार्य जी के अर्पण होगये, और पूर्ण श्रद्धा व भक्ति से उन्हें परम गुरु मान कर उन की आज्ञानुसार चलने लगे ॥ ऐसी अवस्था में जब गुसाईं जी परम गुरु जी से जुदा हो लाहौर आने लगे तो उन्हें उपदेश मिला कि: "देखो यह ज्ञान की लाली और मस्ती अब घटने न पाये, बल्कि: दिन प्रति दिन वृद्धि को प्राप्त होती रहे।

और इस ल.ली का यहां तक गृढ़ा रंग चढ़े कि अन्दर बाहर फूटने लग पड़े (अर्थात संन्यासावस्था प्राप्त हो जाये)। जब तक यह अन्तिमावस्था पूरी २ प्राप्त न हो तब तक बस न की जाये ॥"

इस आन्तिम उपदेश को लेकर जब गुसाईंजी लाहौर वापस आये तो अहोरात्र (दिन रात) वेदान्त के श्रवण मनन में तन मन से युक्त होगये। अब तो हर घड़ी उपनिषदें और ब्रह्मसूत्र हाथ में रहने लगे, और बजाये मथुरा और वृन्दावन जाने के अब ऋषिकेश तथा हरिद्वार में एकान्त सेवनार्थ जाना आरम्भ होगया। चित्त प्रति दिन व्यवहारिक दशा (जिन्दगी) से उपराम होने लग पड़ा ॥ प्रति वर्ष ग्रीष्म ऋतु की छुट्टियों (अनध्यायों) में गुसांई जी ऋषीकेश तथा तपोवन के जंगलो में इस निश्चय से जाते कि वहां जरूर आत्मानुभव अर्थात आत्म साक्षात्कार होजायेगा ॥ जब दो बार वहां जाकर एकान्त सेवन से आत्म साक्षात्कार न हुवा तो तीसरी बार इस पक्के निश्चय तथा प्रण से तपोवन गये कि:-"अब विना आत्मसाक्षात्कार किये लाहौर वापस आना कदाचिद् न होगा ॥ या तो वहीं मरना होगा या उपनिषदों का सार (ब्रह्मानन्द)

अनुभव कीया जायेगा" ॥ इस निश्चय से युक्त होकर गुसाईंजी जब लाहौर से हरिद्वार पहुंचे तो वहां एक सप्ताह के भीतर २ ही अपनी कुल (तीन मास की) तनख्वाह (वेतन) महात्माओं व ग़रीबों के भोजन में खर्च करदी, और बिलकुल पैसा रहित हुए, नंगे शिर, नंगे पाओं, उपनिषदें हाथ में लिये आत्मसाक्षात्कार करने के पक्के निश्चय से वह ऋषिकेश चले। एक दो दिन ऋषीकेश रह कर वहां से लगभग दस (१०) मील की दूरी पर तपोवन में ब्रह्मपुरि के मंदिर के निकट जा पहुंचे और गंगा के तट पर इस प्रण से आसन जमा दीये कि:-

"आसन जमाये बैठे हैं दर (द्वार) से न जायेंगे।
मजनूं बनेंगे हम तुम्हें* लैली बनायेंगे॥
कफन बान्धे हुए सिर पर किनारे तेरे आ बैठे
न उठेंगे सिवाय× तेरे उठा ले जिस का जी चाहे"

* तुम्हें से यहां मुराद ब्रह्म साक्षात्कार से है
× तेरे से मुराद भी ब्रह्म साक्षात्कार से ही है
अब ऐ ब्रह्मानन्द!

बैठे हैं तेरे दर (द्वार) पे तो कुछ करके उठेंगे।

या वसल ही होजायेगी या मर के उठेंगे ॥"

अपने इस पक्के प्रण को गुसांई जी ने अपनी लेखनी से यूं वर्णन कीया है:—

" अब तख्त या तख्तः। बाल्देन! तुम्हारा लड़का अब (घर) वापस नहीं आयेगा। विद्यार्थी लोगो! तुम्हारा विद्यागुरु अब वापस नहीं आयेगा। पेहले खानाः (घर के लोगो)! तुम्हारा रिश्तः (संबन्ध) कब तक निभेगा। बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी? या तो सब तअल्लुक़ात (संबन्धों) से बरतर (रहित) होगा, या तुम्हारी सब उमेदों के सिर यक कलम पानी फिर जायेगा। या तो राम की आनन्द घन तरंगों में कूनो मकान् (देश काल वस्तु) ग़रक़ाब होगा (तुर्यातीत), और या राम का जिस्म गंगा की लैहरों के हवाले होगा, तन बदन का खातमा होगा॥ मर कर तो हर एक की हड्डियां गंगा में पड़ती ही हैं अगर जल्वः ए-उर्यानी (अपरोऽक्ष) न हुआ और अगर जिस्मानियत (शारीरिक अध्यास) की बू बाक़ी रह गयी तो राम की हड्डियां और मांस जीते जी

मछलियों की भेंट होंगे ॥ अगर राम के चरणों में गंगा न रहीं (करे रथांगं शयने भुजंगं याने विहंगं चरणेम्बुगांगम्) तो राम का जिस्म (शरीर) गंगा पर .जरूर रहेगा ॥" इस भीष्म प्रण के पश्चात् गुसाईंजी आगे अपनी अन्तरावस्था को अपनी लेखनी से ऐसे वर्णन करते हैं:—

"आंखें जल बरसा रही हैं। ठंडे और लम्बे सांस (श्वास) गोया तेज़ हवा की तरह मेंह (वर्षा) का साथ दे रहे हैं। अन्दर झड़ी लग रही है, बाहर भी बरसात .जोर पर है। अल्हाह्-ओ-.जारी (रुदन अरु पुकार) के साथ राम के तेः दिल (अन्तःहृदय) से यह नाला (पुकार) निकल रहा हैः—

गंगा! तेथों सद बलहारे जाऊं (टेक)

हाड चाम सब वार के फेंकूं, यही फूल पताशे लाऊं ॥ गंगा० १
मन तेरे बन्दरन को देदूं, बुद्धि धारा में बहाऊं ॥ गंगा० २
चित्त तेरी मछली चब जावें, अहङ्क गिर गुहा में दबाऊं ॥ गंगा० ३
पाप पुण्य सभी भुलाकर, यह तेरी जोत जगाऊं ॥ गंगा० ४
तुझ में पडूं तो तू बन जाऊं, एसी डुबकी लगाऊं ॥ गंगा० ५

दण्डे, जल थल, पवन दशोंदिक्, अपने रूप बनाऊं॥ गंगा० ६
रमन करुं सतधारा मांहि, नहीं तो नाम न राम धराऊं॥ गंगा० ७

आगे चल कर गुसाईं जी अपनी अन्तरावस्था को इस प्रकार लिखते हैं कि:—" शाम पड़ने को है। एक छोटी सी पहाड़ी पर राम बैठा है। अजब हालत है। न तो इसे उदासी नाम दे सक्ते हैं, न रंजो ग़म ही है, दुन्या दारों वाली खुशी भी यह नहीं। उसे जागता नहीं कह सक्ते, सोया भी नहीं॥ क्या मालूम, मख़मूर हो! पर यह कोई दुन्या का नशा: नहीं। क्या रसभीनी अवस्था है"?

उन दिनों उस समय राम की तलाश करता २ एक खत वहां (पहाड़ों में) आमिला जिस में घर आने की तरग़ीब (प्रेरणा) थी। यह खत फौरन परम धाम को रवाना कर दिया गया, अर्थात श्री गंगा जी में प्रवाह दिया गया॥ उस का जो जवाब उस समय लिखा गया, वह पाठकों की खातर नीचे दिया जाता है:—

(१)* रे=रंग नहीं मेरा कत्तने दा, जोरी बल के भेरे न घत्त माये
पीड़ां पीड़ के जान नपीड़ लीती, मासा मांस नाहिं रत्ती रत्त माये

चर्खी वेख के रंग कुरंग होया, सय्यां विच वाहां केहे वत्त मार्ये
मर्ती .इश्क़ हुसैन न मत्त मुझे, मर्ती दर्दियां दी मारी मत्त मार्ये

---

(२) लोगों के गिले उलाहनों का डर दिखाया था। सो भगवन्!
अब तो हम हैं और गंगा जी
कफ़न बांधे हुए सिर पर किनारे तेरे आ बैठे।
हज़ारों ताने अब हम पर लगा ले जिस का जी चाहे॥
तेरे जैसे अल्ज़ाम यहां कुछ नहीं असर कर सक्ते

* संक्षेप मतलब यह है:—कि मेरा हाल अब गृहस्थ करने का नहीं रहा है, इसलिये ज़बरदस्ती से मुझ गृहस्थाश्रम में युक्त मत कराओ॥ मेरा लहु मांस तो ईश्वरप्राप्ति के शोक में सूख गया है बलकिः गृहस्थाश्रम चलाने के बिलकुल अयोग्य (नाक़ाबिल) हो गया है, इसवास्ते मैं गृहस्थियों के बीच कैसे बैठूं? मेरे जैसे ईश्वर परायण पुरुष को जो लोग गृहस्थ करने की सिक्षा देते हैं उन की अपनी बुद्धिः खुद मारी होती है॥

---

*(क) गर नमानद दर दिलम पैकाँ गुनाहे तीर नेस्त।
आतशे सोज़ाने मन आहन गदाज़ उफ़तादह अस्त॥

(ख) ता नख्वाहद सोख्त अज़ मा बर नख्वाहद दाश्त दस्त।
.इश्क़ बस मारा चो आतश दर क़फा उफतादह् अस्त ॥

........तुम्हारा राम तो अब पूरा हो गया पूरा, न घर का न घाट का (गो मालक मल्कः लाट का)

(३) किसी खानगी मुआमले के अफ़सोस की बाबत पूछो तो सख्त हैरत है कि तुम्हें अपने असली घर से ग़ाफ़ल रहने का कुछ अफसोस नहीं आता ॥

(४) आप ने सब लोगों के दुन्यवी काम काज में हमः तन मसरूफ होने का इशारह करके बुलाया चाहा है ॥ अच्छा, अगर लोगों की कसरत राये पर ही हक़ीक़त का फैसला करना

* अर्थः-(क) अगर मेरे दिल में नोक नहीं लगती, तो तीर का क़सूर नहीं है क्योंकिः मेरे (प्रेम तथा .इश्क़रूपी) जलाने वाली आग का यह स्वभाव है कि वह लोहे को पिघला देती है ॥

(ख) जब तक (यह प्रेम या .इश्क़) हम को जला नहीं लेता तब तक यह हम पर से हाथ नहीं हटाता (अर्थात हम को नहीं छोड़ता) क्योंकि हमारा .इश्क़ (प्रेम) ही आग की तरह हमारे पीछे पड़ा हुवा है ॥

मंज़ूर हो, तो बताइये, आदम से लेकर इंदम तक कसरत (majority) उन लोगों की है जो मौजूदह ज़िन्दगी के कारोबार को .ज़ुबाने .अमाल से सच कहने वाले हैं, या उन की जो रूए .ज़मीन की ख़ाक के तक़ीबन हर ज़र्रे में .ज़ुबाने हाल से बोल रहे हैं कि दुन्या मादूमी-अज़-मास्म है ॥

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्त मध्यानि भारत ।
अव्यक्त निधनान्येव तत्र का परि देवना ॥ (गीता)

(८) भगवन्! आप ही की आज्ञा पालन हो रही है। यानी आप से बहुत जल्दी मिलने की कोशश हो रही है ॥ अज़ रूए जिस्म तो जुदाई हरगिज़ दूर नहीं हो सक्ती। ख्वाह कितने नज़दीक हो जायें। फिर भी जहां एक बदन (शरीर) है वहां दूसरा बदन नहीं आ सक्ता, वरनाः तदाख़ले अजसाम लाज़म आता ॥ फिलवाक़या जुदाई को दूर करने के राम रात दिन दरपै (पीछे लगा हुवा) है। गैरियत (द्वैत भावना) का नामो निशान् नहीं रहने देगा ॥ आप का अन्तरात्मा, आप के सीने में, आप की आंखों में, बल्किः सब के दिल जिगर में राम

अपना घर (क़ियाम) देखे बिना चैन नहीं लेगा ॥ आओ, आप भी पांच नदियां (खून, बोल, पसीना, वीर्य, राल) के कीचड़ यानी जिस्म से अपने निज धाम (असल स्वरूप) की तरफ मुराजअत करो (लौटो) । इस पंजाब से उठ कर हक़ीक़ी धाम की पहाड़ियों पर कशां २ (शनैः शनैः) तशरीफ़ लाइयेगा ॥ मिलना अब मरकज़ (केन्द्र) ही पर मुनासब है । जहां पर मिले फिर जुदाई नहीं हो सक्ती । मुहीत (वृत्त) पर छिपन लुकन (hide and seek) खेलते २ कहां तक निभेगी ॥ राम ने तो अगर खुद गंगा को अपने चरणों से निकलती हुई न देखा तो लोग उस का जिस्म (शरीर) गंगा के ऊपर रवां (बैहता) जरूर देखेंगे ॥

* मैं कुश्तगाने इश्क़ में सरदार ही रहा ।
सिर भी जुदा कीया तो सरेदार ही रहा ॥

* मतलब:—प्रेम से घायल हुए पुरुषों में मैं ही प्रथम रहा । यद्यपि मेरा शिर भी जुदा कीया गया, तथापि मैं वास्तव में शूलि का सिरा अर्थात शूली के ऊपर उस की चोटी ही बना रहा ॥ यानी अपने को सर्वशा ईश्वरार्पण करने से यद्यपि ऊपर से

सीप से मोती निकला हुवा फिर सीप में वापस नहीं आता ॥

....

गंगा में पड़ी हुई हड्डियां वारसों (सवन्धीयों) को वापस कैसे मिल सक्ती हैं? अलबत्ता मिलने के ख्वाहश मंद अपनी हड्डियां भी हवाले गंगा कर दें तो शायद मेल होजाये ॥ कुछ मुशकल तो नहीं, नित्य प्राप्त की प्राप्ति है, नित्य तृप्त की तृप्ति ॥

....

नहीं कुछ ग़र्ज़ दुन्या की, न मतलब लाज से मेरा ।
जो चाहो सो कहो कोई, बसा अब तो वुही मन में ॥

इस तमाम पूर्व लिखित पत्र से स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि उस समय तपोवन में गुसाईं जी के चित्त की अवस्था कैसी उदारता और वैराग्य से भरी हुई थी, और इस अति उपरामावस्था में जिस समय और जिस स्थान पर गुसाईं जी को आत्म साक्षात्कार हुवा, वह कुल का कुल गुसाईं जी आगे चलकर अपनी लेखनी से यूं (इस प्रकार) वर्णन करते हैं :—

मृत्यु नज़र आती है परन्तु वास्तव में जी उठना और सब का मालक (ईश्वर) वन जाना होता है ॥

नोट (सन १८९८, मास सैतेम्बर के लगभग अर्थात संवत् १९५५ भाद्रपद की पूर्णिमा के एक या दो दिन पूर्व ऋषीकेश के तपोवन में ब्रह्मपुरि मंदर के समीप का यह वृत्तान्त है) (लेखक)

(अपरोक्ष) "घना जंगल, जल का किनारा, जंगली गुल्ज़ार शगुफ़तः (वन पुष्पों से खिड़ा हुवा), तख़लिया (एकान्त स्थान में), चंद उपनिषदें खतम। ....

ऐ नुतक़ (वाणी)! तुझ में है ताक़त (शक्ति) उस सरूर (आनन्द) को बियान करने की? । धन्य हूं मैं ! मुबारक हूं मैं ! जिस प्यारे का घुंघट में से कभी पैर, कभी हाथ कभी आंख, कभी कान मुशकल के साथ नज़र पड़ता था, आज दिल खोल कर उस दुलारे का वसाल (मिलाप) नसीब हुवा। हम नंगे, वह नङ्गा, छाती, छाती पर है ॥

ऐ हाड चाम के जिगर कलेजे ! तुम बीच में से उठ जाओ॥

तफावत (भेद दृष्टि) ! हट, फासले ! भाग, दूरी ! दूर, हम यार, यार हम ॥

यह शादी (खुशी) है, कि शादी मर्ग? आंसू क्यों छमा छम

बरस रहे हैं ? ....
क्या (वह) साहा (विवाह) के मौक़्या (समय) पर की झड़ी है कि मन के मरजाने का मातम है ? । संस्कारो का आखरी संस्कार हो गया । ख्वाहशों पर मरी पड़ी । दुःख दारिद्र उजाला आते ही अन्धेरे की तरह उड़ गये। भले बुरे कर्मों का बेड़ा डूब गया ॥

बड़ा शोर सुनते थे पैहलु में दिल का ।
जो चीड़ा, तो इक क़तरेह ख़ून न निकला ॥
शुकर है, आई खबर यार के आजाने की
अब कोई राह नहीं है मेरे तरसाने की
आप ही यार हूं मैं खत्तो किताबत कैसा
मस्ती-ए-मुत्लक़ हूं मैं हाजत नहीं मैं खाने की

वह तुर्या जो .उन्क़ा [पक्षी] की तरह मादूम [गुम] थी, हम खुद ही निकले । जिस को सीग़ा ग़ायब (Third person, तृतीया) से याद करते थे, वह मुतकल्लम (प्रथमा, First person) ही निकला ॥ सीग़ा ग़ायब अब ग़ायब [गुम] । ॐ हम, हम ओम् । हम न तुम, दफ़तर गुम ॥ ॐ । ॐ !! ॐ !!! ....

आंसुवों की झड़ी है कि वस्ल (दर्शन) का मज़ा दिलाने वाली बरसात (वर्षा समय)! ऐ सिर! तेरा होना भी आज सफल है। आँखों! तुम भी मुबारक होगयीं॥ कानों! तुम्हारा पुरुषार्थ भी पूरा हुवा। यह शादी मुबारक हो! मुबारक हो!! मुबारक हो!!! मुबारक का लफ़्ज़ भी आज मुबारक (कृतार्थ) होगया.... ....

अहङ्कार का गुड्डा और बुद्धि गुडिया जल गये। अरे आँखों! तुम्हारा यह काला बादल बरसाना मुबारक हो! यह मस्ती भरे नैनों का सावन स.ईद (मुबारक) है॥"

इस आत्मानुभव के पश्चात गुसाँई तीर्थ राम जी जब लाहौर वापस आये, तो उन के मुख पर अलौकिक (.अजब तरह की) हंसी परोई रहती दिखाई देने लगी। उन के दर्शन मात्र से वाञ्छें खिड़ने लगीं, मुर्दह दिल भी उन को देख कर जिन्दः और मस्त होने लगा। उन के स्थान पर अब बहुत लोग प्रति दिन दर्शनार्थ एकत्र होने लगे। गुसाँई जी की मस्ती भरी दृष्टि ने कई पुरुषों के हृदयों को घायल कर दीया। भक्तों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी। व्यवहारिक जीवन की ओर रुचि कम होने लगी॥ धन, दौलत से

गुसाईं जी की वृत्ति ऐसे उदार और उपराम हो पड़ी कि जब मासिक दक्षिणा (वेतन) आती तो उसी दिन या दूसरे दिन तक नितान्त (बिल्कुल) खर्च की जाती। तीसरे दिन एक कौड़ी भी पास रखने न पाती ॥

इस उदार और मस्तावस्था में गुसाईंजी ग्रीष्म ऋतु की छुटियां (अवकाश) में सन १८९९ में अमर नाथ की यात्रा के लिये कश्मीर गये। श्रीनगर से अमर नाथ तक का सारा रस्ता केवल एक धोतीसे चले। अमर नाथ मंदिर की गुहा में कई घंटे नग्न व्यतीत कीये ॥ जब इस यात्रा से वापस लाहौर आये तो निजानन्द तथा शान्तिमें इतने भरपूर तथा पूर्ण पाये गये कि लिखने में नहीं आ सक्ता ॥

इन्हीं दिनों में उत्तम भाग्य से लेखक को भी गत दिन संतुष्ट चित्तसे (दिल भर कर) गुसाईंजी की संगत करने का अवसर मिल गया। लेखक यद्यपि उन दिनों किसी सभा अथवा समाज का मेम्बर नहीं था, और न वेदान्त की ओर ज़रा सी भी रुचि रखता था। तथापि गुसाईं जी के पूर्व काल के उपदेशों से गीता का

अध्ययन कुछ ज़रूर करा करता था और अन्य पुस्तकों के लक्ष्यार्थ समझने की लग्न भी अधिक रखता था, जिन को ठीक न समझने से हृदय में हज़ारों शङ्कायें भरी पड़ी थी॥ जिस किसी पंडित के पास शंङ्का निवारणार्थ जाता, या तो कुछ कहीं ज़रा सी तसल्ली मिलती, और या नितान्त (बिलकुल) खाली हाथ वापस आता। शान्ति ठीक एक के पास चल कर भी न मिलती, और न पूरी तरह से संशय मिटते॥ परन्तु यह मस्ती भरे गुसाईं तीरथ राम जी की ही प्रेम भरी संगति थी कि जिस ने दो दिन के भीतर लेखक की कुल शंङ्कायें निवारण कर दीं। सब संशय मिट गये। और अन्य कई एक भ्रम मलिया मेट होगये॥ तदपश्चात कुछ उपनिषदों और वेदान्त के प्रकरण ग्रन्थों का अध्ययन गुसाईं जी की सहायता से आरम्भ कीया गया॥ जब हृदय के सर्व संशय निर्वृत्त होगये, और गुसाईं जी महाराज की प्रेम भरी संगति से चित्त निश्चयात्मक और गद् गद् होगया, तो वहीं ग्रहस्थ आश्रम में ही लेखक ने अपने आप को गुसाईं जी के अर्पण कर दीया और सर्वदा के लिये लेखक उन (गुसाईं जी) का ही हो लिया॥

इस काल के थोड़ेही पीछे गुसाईंजी बहुत बीमार हो गये, और उदर की दर्द से इतने शिथिल और दुःखित हुए कि शरीर पर एक दो वार अति भयानक मूर्छा भी तारी (आछादित) हुई। इस कठोर बीमारी के समय लेखक को दिन रात सेवा करनेका अधिक अवसर मिला था॥ रात के दो २ बजे तक पीड़ा के कारण गुसाईं जी को नींद नहीं आती थी। एक दिन अर्ध रात्रि के समय जब कुछ आरोग्यता प्राप्त हुई तो गुसाईं जी उठ कर फरमाने लगे कि:—"देखो, नारायण! भारतवर्ष के शायद उत्तम भाग्य कुछ फलीभूत होने वाले हैं जो राम का शरीर आरोग्यता को प्राप्त होने लग पड़ा है॥" जब पूर्ण आरोग्यवस्था (सिहित) पा ली तो गुसाईंजी को उर्दू भाषा में एक अलफ नाम का मासीक रिसाला: (पत्र) जारी करने की तरंग उठी॥ उन की आज्ञा पर सरकारी नौकरी छोड़ लेखक उस रिसाले का प्रबन्धकर्त्ता बना। इस तमाम कार्य में धन से सहायता देने वाले गुसाईं जी के एक प्रेमी भक्त लाला हर लाल साहिब कायस्थ लाहौर निवासी थे॥ केवल इस रिसाले की खातर गुसाईंजी ने एक लिथो यन्त्रालयभी हम लोगों से खुलवाया, उसका प्रबन्ध

भी लेखक के हाथही दीया गया ॥ इस तरहसे शुरु जन्वरी सन् १९०० अर्थात सम्वत १९५७ के अन्त में यह रिसाला : प्रकाशित हुआ । इसमें कुल लेख गुसाईंजी की अपनी लेखनी (कलम) से होते थे । जो जो विषय गुसाईंजी के अनान्द स्रोतसे बेह कर इस रिसालेमें छपे उनका असर जैसा पाठकों के हृदय पर हुआ उसका अन्दाज : नारायण की लेखनी नहीं वर्णन कर सक्ती । पर इतना कहा जा सक्ता है कि इन लेखों से गुसाईं जी के अपने चित्त पर कुछ ऐसी चोट लगी, कि अभी तीन नम्बर (प्रति) भी रिसाले के निकलनें न पाये थे कि गुसाईंजी झट नौकरी छोड़ परिवार समेत जंगलों की ओर पधारे॥ लेखक तो उन की आज्ञासे रिसाले के प्रबन्ध करने के अर्थ कई मास पेहिले से ही नौकरी छोड़े बैठा था, और रात दिन गुसाईं जी के मस्ती भरे लेख रिसाले में छपाने को साफ नक़ल करा करता था । पर जब गुसाईं जी अपनी अर्धाङ्गी और दो पुत्रों समेत बिलकुल लाहौर को छोड़ने लगे तो लेखक भी उन की आज्ञा से रिसाले के लिये लेख (मज़मून) साफ नक़ल करने के अर्थ, उन के परिवार की सेवार्थ, और विशेष करके उनकी मस्ती भरी संगत से लाभ

उठाने की खातर उन के साथ होलीया ॥ मास जुलाई सन १९०० में हम सब लाहौर से चले । लेखक तो सिर्फ सेवा करने की खातर और आत्मक लाभ उठाने के अर्थ साथ हुवा था, पर गुसांई जी और उन की अर्धङ्गी फिर वापस गृहस्थ में न आने के विचार (ख्याल) से जंगलों को पधारे थे ॥ उस दिन रेलवे सूटेशन के प्लैट फौर्म पर जो समा बंधा था, और घर से स्टेशन तक रास्ते में भजन मंडालियों के हृदय वेधक भजनों से जो श्रोतागण के दिलों पर असर पड़ा था वह सब अकथनीय है ॥ नंगे शिर और नंगे पाओं, केवल आधी धोती नीचे और आधी कान्धे पर, दीवानः वार (मस्त पुरुषों की तरह) राम बाज़ारों में गुज़र रहे हैं और हर एक भजन मंडली वैराग्य और त्याग के भजन ज़ोर शोर से आगे आगे गाती चली जा रही है । अश्रुपात तीव्र वेग से सब के हो रहे हैं । पुष्पों के हारों से कण्ठ तो पैहले भरा पड़ा था, मगर फिर भी रास्ते में जगह २ पर पुष्पों की वर्षा हो रही है । प्लैट फौरम पर पहुंचते २ अनगणित पुरुष एकत्र होगये । आध घंटे तक प्लैट फौर्म पर भी बड़े प्रेम और वैराग्य भरे चित्त से भजन कीर्तन होता

रहा। गाड़ी में स्वार होते समय सब के प्रेमाश्रू थामे नहीं जाते थे। गाडी के चलने पर निम्न लिखित भजन लेखक से राम की ओर (तरफ) से पंचम सुर में गाया गया:—

अल्वदा मेरी रयाज़ी! अल्वदा
अल्वदा ऐ प्यारी रावी! अल्वदा
अल्वदा ऐ एहलेखानः! अल्वदा
अल्वदा मासूमे नादां! अल्वदा
अल्वदा ऐ दोस्तो दुशमन! अल्वदा
अल्वदा ऐ शीत उष्ण! अल्वदा
अल्वदा ऐ कुतॅबो तदरीस! अल्वदा
अल्वदा ऐ खुबॅसो तक़दीस! अल्वदा
अल्वदा ऐ दिल!, खुदा! ले अल्वदा
अल्वदा राम! अल्वदा, ऐ अल्वदा!

राम महाराज, उन की अर्धङ्गी, बालकों और लेखक के अतिरिक्त

(१) रुखसत हो (२) घर के लोगो (३) नादान (भोले भाले) बच्चे (४) पुस्तकें और पाठशाला (५) शुद्धः और मलीन या अच्छा बुरा

अन्य कई महाशय भी साथ होलिये थे, किन्तु हरिद्वार से आगे चलकर रास्ते में शनैः २ सब झड़ते गये। अन्त में बे परवाह राम जी सहित अर्धङ्गी, बच्चों, लेखक और एक अन्य महाशय (गुरु दास) के रयासत टिहरी गढ़वाल में पहुंचे॥ खास टिहरी नगर से दो मील के फासले पर एक सुन्दर बागीचा: सेठ मुरलीधर का गंगा तट पर है उस में राम एक वर्ष के लगभग लगातार एकान्त सेवन करते रहे॥ राम जी की अर्धङ्गी कुछ काल के पश्चात बीमार हो गयीं और देर तक कष्ट न उठा सकीं, इसलिये तीन मास के पीछे उन्हें घर वापस आना पड़ा। अन्तमें लेखक और तुलाराम जी सारा काल पर्वतों में राम जी के साथ रहे॥ यद्यपि एक, दो बार रसाला अलफ के अन्तिम (आखरी) दो बड़े नम्बरों (१. गंगा तरंग, सुल्ह कि जंग २. जरब-ए-कोहसार) के छपाने को कुछ काल के लिये लेखक को नीचे [illegible] में आना पड़ा, तथापि अन्त समय तक स्वामी जी के साथ रहना उत्तम भाग्य से केवल लेखक को ही नसीब हुआ॥

द्वारका मठ के परम गुरु श्री शङ्कराचार्य जी महाराज से यह

उपदेश तो गुसाईं जी को गृहस्थाश्रम में ही मिल चुका था कि "चित्त की पूर्ण निरासक्तावस्था के प्राप्त होने पर विद्वत संन्यास शीघ्र (फौरन) धारण कीया जाये" ॥ अब जंगलों में लगातार एकान्त सेवन से राम जी का चित्त संसारिक पदार्थों से नितान्त (बिलकुल) निरासक्त और अपने निजानन्द में अति मग्न होने लग पड़ा, इस समय गुरु जी की पूर्व वर्णित आज्ञानुसार राम महाराज से मास मार्गशिरस (मंगसर) संवत १९५७ अर्थात सन १९०१ के लगभग वहीं टिहरी नगर के समीप सेठ मुरलीधर वाले बागीचे में गंगा तट पर विद्वत् संन्यास धारण कीया गया ॥ यह परम गुरु द्वारकाधीश शङ्कराचार्य जी तीर्थ संन्यासी थे इसलिये राम का संन्यास नाम भी राम तीर्थ प्रसिद्ध हुवा ॥ और वैसे पूर्व (गृहस्थाश्रम के) नाम का उलट भी यह नाम था जिस समय यह संन्यासाश्रम लिया गया उस समय लेखक और एक अन्य भक्त समीपावस्थित थे। उत्तम भाग्य से कपड़े रंगने की सेवा उस समय लेखक को ही मिली थी ॥ संन्यासाश्रम धारन कीये जाने के पीछे षण मास तक स्वामी जी उसी स्थान पर एकान्त सेवन करते रहे। तदपश्चात

जुलाई सन् १९०१ में उन्हों ने उत्राखंड की यात्रा आरम्भ की। पहले यमनोत्री पहुंचे। (वह समय भादो संवत १९५८ का था) वहां एक मास तक रहने के पीछे यमनोत्री मंदिर से १५ या १६ मील ऊपर जा कर बन्दर पुंछ नामी समेरू पर्वत की यात्रा की। वहां से नीचे उतर कर वामसरू तथा छायां के रास्ते से गंगोत्री मंदिर की ओर चले। एक या दो दिन के अन्दर वहां पहुंच गये *। वहां पहुंच कर पूरा एक मास आश्विन (असोज) का काट कर बूढ़े केदार और त्रिजुगी नारायण के रास्ते से बड़े केदारनाथ और फिर बदरीनारायण तक यात्रा (रटन) की। फिर दसम्बर १९०१ में अल्मोरा नगर के रास्ते स्वामी जी नीचे देश में उतरे॥ उस समय मथुरा में धर्म महोत्सव पर स्वामी जी वहां प्रधान चुने गये थे इसलिये मथुरा गये॥

स्वामी जी ने यद्यपि भारत खंड में जन्म लीया था पर वह सब

* इस रास्ते की यात्रा का कुल हाल अंग्रेज़ी भाषा में स्वामीजीने अपनी लेखनी से विस्तार पूर्वक वर्णन कीया है। पाठकों को देखने की इच्छा उपजे तो राम (Rama) नाम का एक छोटा सा रिसाला पढ़ लें॥

देशों, सब जातियों, सब धर्मों के मनुष्यों, हर जीव जन्तु वरन (बल्कि:) कुल सृष्टि मात्र को प्यार करते थे। उन के शरीर से सब को सुख और लाभ मिलता था॥ वह आनन्द और शान्ति की मूर्ति थे। बड़े से बड़े दुःखी और उदासी भरे दिल को पल के पल में शान्त और प्रसन्न कर देते थे। उन से मिलने वाले का दिल अपने छिपे हुए रहस्यों और पापों को भी प्रकट कर देता था, मृतक चित (मुर्दा दिल) भी उन के दर्शन से जीवन (जिन्द:) होजाया करता था। उपदेश करते २ वह प्रेम में ऐसे मग्न और आनन्द स्वरूप होजाते थे कि सुनने वाले का जी (चित्त) न उठने को करता और न सुनते २ किञ्चित मात्र उकताता था॥ जिस किसी को स्वामी जी की भोली भाली, मस्त और तेजोमयी मूर्त्ति के दर्शन और उन के मुखारविन्द से कुछ सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है वह ही स्वयं इस असर को ठीक जान सक्ते हैं। अन्य को पूरा २ दर्शाना कुछ कठिन सा ही है॥ मथुरा में महोत्सव के समय जब लोग दिन भर बहुत से लैक्चरों तथा उपदेशों को सुनते २ थक भी गये थे, तो भी स्वामी जी के उपदेश की वाट

ताकते थे ॥ स्वामी जी के उपदेश का जब समय आया तो खड़े होकर उन्होंने यह कह सुनाया कि राम अब इस तम्बू के नीचे कुछ नहीं बोलेगा, क्योंकि उत्सव का समय अब व्यतीत होचुका है, अलबत्ता जिसकिसीने राम को सुनना हो, वह इस तम्बू के बाहर यमुना नदी के तट पर कुदरतके (ऐश्वर्य) शामियाना (आकाश) के तले बैठ कर सुनलें ॥ यह कह कर स्वामी जी उधर (यमुना तट की ओर) चल दीये और तमाम लोग उसी समय कुर्सियां छोड़ कर उनके पीछे हो लिये। मैदान में पहुंच कर थोड़ी देर के लिये राम यमुनाजी की तरफ से उलट चलने लगे, तो तमाम लोग भी बिना सोचे समझे (कि राम कहांजा रहे हैं, व्याख्यान तो कहा था यमुना किनारे होगा, पर जा रहे हैं जङ्गल की तर्फ) उन्हीं के पीछे चलदिये ॥ जब राम ने देखा कि यह प्रेमवश, पागल तथा बेखुद होकर पीछे आरहे हैं तो ठेहर कर कहा "प्यारो! राम लघुशङ्का करने जा रहा है। फिर यमुना किनारे आता है, आप चलिये, व्याख्यान वहीं होगा"। यह सुन कर सब के सब जैसे थे वैसे ही खड़े रहे और फिर जब राम लौटे तो उन के पीछे २ चले ॥ जिस तरह कहा

जाता है कि कृष्ण के साथ रहने को हर एक गोपी इच्छा करती थी वही हाल यहां दिखाई दीया। राम के साथ चलने को लोग व्याकुल थे। कोई २ झाड़ियों में उलझ २ गिरते थे। साथियों का साथ छूटा जाता था पर उन्हें कुछ परवाह नहीं॥ जब राम यमुना किनारे पहुंचे, रात्रिका समय हो चला था और पौष मास की शरद् ऋतु के दिन थे, तट पर का रेतला फर्श नर्म और शीतलपड़ गया था। महोत्सव केवल दिन भर रहना था, इसलिये लोग बहुत कम गर्म वस्त्र साथ लाये थे, तौ भी श्रोतागण अपने आप में न रहे॥ जिस समय राम ने कहा कि 'आप बैठ जाइये,' लोग झट अपने बड़े २ क़ीमती दुशाले शीतल रेतले आसन (फर्श) पर बिछा कर बैठ गये। और प्रेम के साथ रात के ८ बजे तक राम के मनोहर वचन सुनते रहे। किसी ने शीत की परवाह तक न की॥ महोत्सव में और भी बहुत से साधु महात्मा उपस्थित थे, परन्तु राम जी के तेज और कान्ति के आगे ऐसे दिखाई देते थे जैसे चन्द्रमा के सामने तारे॥ उस समय की दशा देखकर यही याद आता था कि जैसे श्रीकृष्ण चन्द्र जीके मनोहर वचन, मनोहर बंसुरी और मनोहर तथा

सुंदर स्वरूप से गोपियों और गवालों ने सुधबुध खोदी थी, वही हाल आज प्रत्यक्ष वहां हो रहा है ॥

इस महोत्सव के पीछे अर्थात सन् १९०२ के प्रारम्भ में कुछ काल तक स्वामी जी आगरा, लखनौ इत्यादि नगरों में उपदेशार्थ भ्रमण करते रहे। उन्हीं दिनों लेखक को स्वामी जी ने संन्यास धारण करने की आज्ञा दी, जिस आज्ञा को पाते ही तत्क्षण (फौरन) सन्यासाश्रम लीया गया ॥ लेखक को संन्यास धारण करा कर आप तो पर्वतों को वापस चल दीये, और उसे सिन्ध देश की ओर उपदेशार्थ भेज दीया ॥ चार मास पश्चात जब बुलाया गया, तो फिर पर्वतों में स्वामी जी महाराज के दर्शनार्थ आया। ऐसे टिहरी में स्वामी जी की सेवा और संगत में रहने का लेखक को फिर अवसर मिल गया ॥ उन्हीं दिनों स्वामी जी महाराज की महाराजा साहिब टिहरी से भेंट हुई ॥

जुलाई, सन् १९०२ में यह खबर अनेक पत्रों में छपी, कि जापान देश में एक अद्वितीय धर्म महोत्सव होगा। जिस को पढ़ कर महाराजा साहिब बहादुर टिहरी ने चाहा कि स्वामी राम तीर्थ जी

जैसे रंगे हुवे महात्मा वहां अवश्य उपस्थित हों। महाराजा साहिब की ऐसी इच्छा को सुन कर स्वामी जी झट चलने को उद्यत हो गये। और उत्तम प्रारब्ध से लेखक भी आज्ञा पा कर साथ चला॥ अगस्त १९०२ में कलकत्ते से (हम लोग कुम्सैन नामी जहाज़ में बैठे; और मास अक्तूबर के आरम्भ में जापान पहुंचे। टोकियो नगर में पहुंचते ही पता लगा कि धर्म महोत्सव की सूचना बिलकुल झूठी और ग़लत है॥ इस लिये थोड़े दिवस जापान में रहकर स्वामी जी तो कालजों में एक, दो उपदेश देने के पश्चात् फिर अमरीका देश को चलदिये। और लेखक को अन्य प्रान्त (योरप और अफरीका देशों) में घूमने की आज्ञा दी, और साथ ही यह भी ताकीद करदी कि "जबतक राम भारत वर्ष को वापस न लौटे तब तक नारायण (लेखक) भी बाहर प्रान्त में ही घूमता वेदान्त परिचार करता रहे।" इस आज्ञानुसार लेखक भी यूरप, अफरीका, लङ्का, ब्रह्मा और चीन इत्यादि देशों में भ्रमण करता रहा॥ और स्वामी जी महाराज उतने काल तक अमरीका देश के प्रसिद्ध नगरों में ज़ोर शोर से वेदान्त का परिचार करते रहे॥ उन के मस्ती भरे

ऊपर लिया हुआ था जो उन्होंने अति उत्तम रीति से निभाया। किसी प्रकार का शारीरक खेद उन के उत्तम प्रबन्ध (बन्दोबस्त) से किसी को होने न पाया॥ पांच मास के लग भग हम लोग उस घने बन में रहे। इतने थोड़े काल के अन्दर स्वामी जी ने पातञ्जल भाष्य और निरुक्त की पुनरावृत्ति अति उत्तम रीति से कर लीं और साम वेद का पाठ (अध्ययन) भी संम्पूर्ण कर लीया। इस प्रकार सारा शीत काल व्यासाश्रम में काटने के पश्चात स्वामी जी के अन्दर (तरंग) लैहर उठी कि अब इस बन को छोड़ कर वासिष्ठाश्रम के वन में एकान्त सेवन कीया जाये और आने वाली ग्रीष्म ऋतु सब उसी ऊंचे स्थान में व्यतीत की जाये॥ यह वन टिहंरी नगर से कोइ ५० मील की दूरी पर है और कोई १२००० अथवा १३००० फुट की उंचाई पर स्थित हुआ नाना प्रकार के दिव्य वृक्षों और लता से संशोभित हो रहा है। इस का ठीक और सीधा मार्ग टीहरी नगर से आरम्भ होता है, जब फरवरी सन १९०६ में स्वामी जी व्यासाश्रम से

वासिष्ठाश्रम की ओर चले तो प्रथम टिहरी नगर पहुंचे और वहां स्वामी जी अपने भक्त जनों से टिहरी नरेश के बागीचे (सिमलास,) में उतारे गये ॥ शारीरक सेवा सर्व प्रकार की महाराजा साहिब की ओर से होने लगी। बलकि टिहरी नगर से आगे चलने का प्रबन्ध और वासिष्ठाश्रम में रहने का कुल प्रबन्ध महाराजा साहिब ने ही अपने ऊपर प्रेम पूर्वक ले लीया, इसलिये काली कम्बली वाले बाबा रामनाथ जी को अपना उत्तम प्रबन्ध छोड़ना पड़ा, किन्तु उन की ओर से एक सेवक (रसोया) स्वामी जी के साथ जरूर रहा ॥

टिहरी से वसिष्ठाश्रम को चलने के कुछ दिन पहले स्वामी जी को धर्म के उत्सवों पर उपदेश करने के लिये एक दो निमन्त्रण की तारं आईं ॥ पर एकान्त सेवन ने स्वामी जी की चित्त वृत्ति को कुछ ऐसा आकर्षित कीया हुवा था, और दुन्या से कुछ ऐसा उपराम कर रक्खा था कि उन का चित्त नीचे देश में जाने को उद्यत न हुवा। इस लिये लेखक को ही अपने स्थान पर (जहां २ से बुलाये आये थे) वहां भेज दिया, और आप एक नौकर साथ लिये वासिष्ठाश्रम को चलदिये ॥

भारत वर्ष के मन्द भाग्य से स्वामी जी की भिक्षा का वहां वासिष्ठाश्रम में कुछ ऐसा बुरा प्रबन्ध हुआ कि वहां पहुंचने के थोड़े ही काल पीछे स्वामी जी दारुण (सख़्त) बीमार होगये, और ग़रीब नौकर भी बिस्तरे पर लिट गया ॥ लेखक को देश में आये अभी दो मास भी न हुए थे, कि पत्र आया " स्वामी जी दारुण (सख़्त) बीमार हैं और भोजन (भिक्षा) का प्रबन्ध अति बुरा तथा निन्दनीय है "। इस पत्र के पाने के पीछे स्वामी जी के विषय में कुछ और अफ़वाहें (अन्य चर्चा) भी उड़ती सुनाई दीं जिस से लेखक को झट वापस पर्वतों में जाना पड़ा ॥ वासिष्ठाश्रम पंहुचते ही स्वामी जी को कुछ थोड़ा अरोग (तन्दुरुस्त) बैठे तो पाया, परन्तु शरीर से बहुत शिथिल, कृश और दुर्बल देखा ॥ भिक्षा में कुछ इस प्रकार का अन्न आता था कि जो खाता कुछ दिन पश्चात् शय्या (बिस्तरे) पर ज़रूर लिट जाता ॥ उस अन्न के खाने से लेखक भी पहुंचने के दो दिन पीछे वहां चित् लिट गया॥ जब होश आई, तो यह समझ कर, " कि शायद कहीं यहां की वायु जल (आबो हवा) ही ख़राब हों और भिक्षा में कोई ख़राबी

न हो" हम सब ने वह स्थान छोड़दिया, और छे या सात मील की दूरी पर जाकर आपस में एक दूसरे से कुछ फासले पर भिन्न २ स्थानों में रहने लगे ॥ जो अन्न प्रबन्ध कर्त्ता की ओर से स्वामी जी को आता था उस में नित्य खराबी देखकर लेखक ने तो उसे खाना छोड़ रक्खाथा, और अपनी कुटिया से दो या तीन मील की दूरी पर के ग्रामों से ताज़ी भिक्षा (अन्न तथा मधुकरी) ला कर खाता था जिस से शरीर बिलकुल-अरोग रहने लगा। मगर स्वामी जी ग्राम और लेखक की कुटिया से बहुत दूर होने के कारण वुहां सर्व प्रकार से अपथ्य अन्न को खाते रहे जिस से शरीर ठीक अरोग (तन्दुरुस्त) होने न पाया। बलकि वैसा का वैसा ही रहा ॥ जब शरीर पैहिले से भी अधिक बीमार और दुर्बल होने लगा तो उस अन्न को खाना स्वामी जी ने भी बन्द करदिया, और केवल दुग्धाहार पर निर्वाह करना आरम्भ कीया अगर कभी अन्न खानें की ओर रुचि भी होती तो इस ख्याल से कि "वह अन्न फिर बीमार न डाल दे" स्वामी जी उसे न खाते और रुचि तथा क्षुदा को ऐसें ही मार दिया करते थे, जिस से शरीरतो बेशक बीमार होने न पाया,

परन्तु दुर्बल और शिथिल वैसे का वैसा ही रहा ॥

जब प्रेम मूर्ति प्यारे पूर्ण सिंह जी, सुशील पंडित जगत राम जी, और पं० हरि शर्मा जी वासिष्ठाश्रम में स्वामी जी के पास दर्शनार्थ आये, उन दिनों स्वामी जी ने अन्न खाना छोड़ रक्खा था। मगर इन प्यारों को इस का कारण ठीक विदित न था। इसलिये इन से यह हठ हो गया कि:—"पैहिले राम कुछ अन्न भिक्षा पालें फिर हम कुछ भोजन करेंगे," जिस पर थोड़ा सा अन्न स्वामी जी ने फिर खाना आरम्भ कीया। इस प्रकार सच्चे प्रेम के वशीभूत हुए २ स्वामी जी फिर प्रति दिन थोड़ा २ अन्न खाने लग पड़े, जिस से थोड़े काल पीछे फिर शारीरक बदहज़मी (रोग) होने लगी ॥ जब ऐसे अन्नाहार से स्वामी जी का शरीर बीमार पड़ने लगा तो उन प्यारों को स्वामी जी के अन्न छोड़ने का कारण प्रतक्ष मालूम हो गया, फिर उन्हों ने स्वामी जी को अन्न खाने के लिये विवश (मजबूर) न कीया ॥

लेखक स्वामी जी की कुटिया से कोई छे या सात मील की दूरी (फासले) पर रहता था और उन की आज्ञानुसार प्रति

आदितवार उन के पास प्राय: आया करता था, मगर जब पूर्ण जी वहां आये, तो अपना दूत भेजकर स्वामी जी ने तत काल बुलवा-लिया, और आज्ञा दी कि "जब तक पूर्ण जी यहां रहें तब तक नारायण भी यहां उन के पास ठैहरे।" स्वामी जी की इस आज्ञा पर नारायण (लेखक) को कुछ काल के लिये फिर स्वामी जी के समीप डेरा जमाना पड़ा ॥

पं० हरि शर्मा जी अपने मन्द भाग्य से प्रथम तो रास्ते में ही तीन वार घर लौटने को उद्यत हुए। जूं २ रास्ते में ज़रा दुःख देखते, फौरन वापस लौटने पर कमर बान्ध लेते थे, और प्यारे पूर्ण जी की ज़बरदस्ती व मदद और उन के घड़ी २ शरमिन्दह करने से वह बड़ी मशकुल से (नितान्त काठिन्ता से) वासिष्ठाश्रम तक पहुंचे थे, और वह भी पूर्ण जी के पहुंचने के एक दिन पीछे। परन्तु स्वामी जी के पास आये उन्हें अभी एक दिन ही व्यतीत हुवा था कि वह झट उदास होने लग पड़े और अपने घर के धंधे सब के आगे फोलने लगे॥ हम सब को घड़ी २ यही कह सुनाते कि "मेरी स्त्री ११ मास के लग भग से गर्भवति है, मुझे उस

का अत्यन्त शोक (फिकर) लगा हुवा है, मेरे से अब यहां अधिक नहीं टैहरा जाता! मैं तो कभी का रास्ते से ही मुड़ जाता मगर पूर्ण जी की जबरदस्ती से यहां (वसिष्ठाश्रम) तक आया हूं इत्यादि"॥ प्यारे पूर्ण जी ने और लेखक ने पंडित जी को बहुधा समझाया और बुझाया और अनेक बार उन्हें यूं भी कहा "कि देखो! आप को यद्यपि पूर्ण जी की ज़बरदस्ती और मदद से ही यहां तक आना नसीब हुआ है, परन्तु जब आप अपने उत्तम भाग्य से यहां पहुंच गये हैं तो यहां स्वामी जी की संगति में कुछ दिन तो काटिये और उन के मस्ती भरे उपदेशों को सुन कर कुछ लाभ उठाइये, जिस से आप का आना सफल हो और इतना कष्ट उठाना भी आप को लाभकारी हो ॥" बहुत कहा पर उन्हों ने एक न सुनी ॥ पंडित जी का चित्त शायद जंगलों को देख कर कुछ ऐसा घबराया नज़र आता था कि वहां एक पल ठहरना भी उन को पर्वत तुल्य भारी हो गया था। अथवा अपनी गर्भवति स्त्री का फिकर उन के दिल को कुछ ऐसे घेरे रखता था कि बात २ में वह उसी का ज़िकर छेड़ते रहते॥ जब चित्त उनके वश में न रहा तो उन्हों ने सीधा स्वामी जी के पास जाकर भी

यही अपनी स्त्री का रोना रोया, जिस पर स्वामी जी ने उन को शीघ्र स्त्री के पास जाने की सलाह दी ॥ इस प्रकार से पं० हरि शर्मा जी शायद दूसरे या तीसरे दिन ही वासिष्ठाश्रम से वापस घर को लौट गये ॥ प्यारे पूर्ण जी और उनके दूसरे साथी बड़े सुशील पंडित जगत राम जी पूरे एक मास के लग भग वहां (वासिष्ठाश्रम में) रहे, और स्वामी जी की आज्ञानुसार एक मास तक लेखक भी वहां ही उन के पास रहा ॥ इतना थोड़ा सा काल तो पं० हरि शर्मा जी स्वामी जी के पास ठेहरे (और वह काल भी उन्हों ने वहां बड़ी बेचैनी और घर के फिक्र अर्थात शोक में काटा), तिस पर आश्चर्य यह, कि स्वामी जी के शरीर छोड़ने के थोड़े ही काल पीछे पंडित जी ने झट लोगों में अपने आप को स्वामी जी का शिष्य अपने ही मुख से प्रसिद्ध करना आरम्भ कर दीया, और इस तरीके से अन्य बहुत से अनुचित और निन्दनीय काम भी कीये जो किसी धार्मिक पुरुष से होने की आशा नहीं दिलाते ॥ और न कोई सच्चा भक्त राम का ऐसे बुरे काम कर सक्ता है ॥

कुछ काल तक वासिष्ठाश्रम में रहने के पश्चात् जब हम सब

भी उस विचित्र अन्न से घड़ी घड़ी बीमार होने लगे और स्वामी जी की अपनी दुर्बलता और शिथिलता दूर न होने पाई तो हम सब ने स्वामी जी के आगे यह प्रार्थना की " कि या तो इस अपथ्य भिक्षा के प्रबन्ध को रोक दीया जाये, और हमें नीचे दूर ग्रामों से लाने की आज्ञा दी जायें, और या आप नीचे टिहरी नगर अथवा किसी और नगर में चलें, जहां हम अपनी और आप की भिक्षा का उत्तम रीति से प्रबन्ध कर सकें, जिस से सब के शरीर अरोग होजावें ॥ " सब के कहने पर स्वामी जी ने टिहरी नगर तक उतरने को स्वीकार कर लीया, और अपने अस्बाब (पुस्तकों के सदूकों) को नीचे ले जाने का प्रबन्ध (बन्दोबस्त) करने के लिये हम सब को पहले टिहरी में भेज दीया ॥ पूर्ण जी की छुटियां खतम होने वाली थीं, इस लिये वह और उन के साथी एक मास के लगभग वासिष्ठाश्रम में रह कर अब लाहौर वापस जाने को टिहरी चले परन्तु लेखक (नारायण) सर्व प्रकार के बन्दोबस्त कर ने के लिये उन के साथ टिहरी आया ॥ जब पूर्ण जी वासिष्ठाश्रम को छोड टिहरी चलने लगे तो स्वामी जी मील

के लगभग तक उन्हें छोड़ने आये। रास्ते में (मन्दम) आहिस्तः से स्वामी जी ने कहा कि "राम शायद अब शीघ्र गुंगा (तूष्णी) हो जाये, अब आप लोग ही राम बनें। शायद राम का आप लोगों से पत्र विहार करना तथा बोलना या मिलना इत्यादि भी अब नितान्त (बिलकूल) बन्द पड़ जाये॥" इतना सुनना था कि पूर्ण जी की आंखों से प्रेमाश्रु तीव्र वेग से बहने लग पड़े। प्रेम आंसुवों का टपकना था कि स्वामी जी ततक्षण (फौरन) भाग कर तिरोधान होगये। तिस पर पूर्ण जी का रुदन और अधिक बढ़ गया और बहुत काल तक आसुंवों का तीव्र वेग उन से थामा ना गया, पूर्ण जी घण्टो तक ऐसे घायल चित्त से मार्ग चलते रहे। और बड़ी देर पश्चात धैर्यता को प्राप्त हुए॥

जब हम सब टिहरी पहुंचे, पूर्ण जी ने एक व्याख्यान टिहरी स्कूल में दीया, और दूसरे दिन वह मसूरी को चल दिये॥ लेखक स्वामी जी के असबाब (पुस्तकों के सन्दूक) उठाने का कुल प्रबन्ध करके वापस वासिष्ठाश्रम चला आया॥ स्वामी जी महाराज एक सप्ताहा के भीतर २ टिहरी नगर आगये और लेखक कुल

पुस्तकों के सन्दूक इत्यादि भेज कर चार या पांच दिन पीछे टिहरी आया और दो सप्ताह तक स्वामी जी की सेवा में उन के पास सिमलासू बाग में ही रहा ॥ तदपश्चात स्वामी जी के शुद्धः चित्त में तरंग उठी कि 'अब फिर (हम) दोनों कुछ काल तक लगातार इस टिहरी नगर के समीप ज़रा एक दूसरे से दूर भागीर्थी गंगा के तट पर जुदा २ कुटिया में एकान्त निवास करें' ॥ टिहरी नगर से करीब ५ मील की दूरी पर मालिदेवल ग्राम के समीप एक बडे खुले मैदान में गंगा तट पर स्वामी जी ने अपने निवास के लिये स्थान चुना* और उस स्थान पर उन के लिये एक पक्की कुटिया बनवाई जाने लगपड़ी ॥ उसी स्थान से कुछ आगे तीन मील चल कर ठीक गंगा तट पर एक विशाल दैविक गुहा बमरोगी नाम से प्रसिद्ध है उस एकान्त स्थान को लेखक ने चुन लीया। और उस

---

* नोटः—यह ऐसा उत्तम स्थान है कि पूर्व भी एक बड़े प्रसिद्ध संन्यासी महात्मा "केशो आश्रम" जी ने (६०) साठ वर्ष के लगभग यहां एकान्त निवास कीया और एक सौ वर्ष से अधिक आयू पाकर उन्हों ने यहां शरीर छोड़ा था.

की सफाई और दरुस्ती इत्यादि भी की जाने लग पड़ी ॥ वह विशाल क़ुद्रती (दैविक) गुहा पत्थरीली होने के कारण शीघ्र साफ़ और निवास योग्य हो गयी, परन्तु कुटिया नवीन बनाई जाने के कारण उतनी जल्दी तय्यार न होसकी ॥ जब गुहा की दरुस्ती और सफाई की सूचना स्वामी जी के कान तक पहुंची तो लेखक को बुला कर कहा कि "देखो, नारायण! जब गुहा तय्यार तथा निवास योग्य हो गयी है, तो आप अभी ही वहां जाकर एकान्त सेवन करिये, राम भी कुटिया के बन जाने पर झट आप के समीप माल्देिवल आ जायेगा और एकान्त सेवन करेगा" ॥ ऐसी अनुत्त व अनिवर्तक आज्ञा (नादर हुक्म) सुनते ही लेखक ने चलने के लिये अपने बिस्तर बान्ध लीये, अर्थात कूल पुस्तकें इत्यादि संदूकों में बन्द करके चलने को उद्यत हो गया ॥ जब गुहा की ओर नारायण (लेखक) चलने लगा तो स्वामी जी नङ्गे शिर नंगे पाओं अपना सैर करने का मनशा (संकल्प) प्रकट करके साथ हो लिये। और एक मील से अधिक तक साथ गये ॥ रास्ते में इस प्रकार उपदेश करने लगे कि:—"देखो, बेटा! राम अब शायद

शीघ्र गूंगा (तूष्णी) हो जाये। शरीर तो तुम देखते हो शिथिल' कृश और दुर्बल होगया है, और प्रति दिन अधिक (कमज़ोर) होता जारहा है, और चित्त वृत्ति भी अब दुन्या से इतनी उपराम होती जाती है कि: किसी काम को भी हाथ लगाने का चित्त नहीं करता, ऐसा प्रतीत (भान) होरहा है कि शायद थोड़े ही दिनों में राम की लेखनी नितान्त बन्द हो जाये, और रामका शरीर शायद शीघ्र जड मूक आलसी हो जाये (अर्थात लिखना, पढ़ना और बोलना राम से बिलकुल छूट जाये)॥ राम का शरीर अब कदाचित नीचे (देशों में) नहीं जासकेगा। अब राम को प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है कि गंगा (भागीर्थी) तट कभी नहीं छूटेगा, जहां कहीं से राम को बुलावा (निमन्त्रण) आवेगा। वहां सब जगह तुम्हें ही जाना पड़ेगा क्योंकि पूर्व वत तुम्हें ही फिर सब स्थानों पर भेजा जायेगा॥ इसलिये ऐ प्यारे! जाओ, गुहा में खूब एकान्त सेवन करो, प्रति दिन असल राम (निज स्वरूप) में रह कर ऐन राम बनो, और वेदान्त की सची मूर्त्ति (पक्की तस्वीर) बन कर निकलो, किसी प्रकार का शोक

तथा भय मत करो, नित्यशः अपने में और अपने साथ राम स्थित समझो, नित्यशः उसी का तन मन धन अपने को जानो...." यह हृदय वेधक उपदेश सुनते ही लेखक के नेत्रों से अश्रुपात होने लग पड़े। और अलग होने को नारायण (लेखक) स्वामी जी के चरणों पर गिरा हि था कि स्वामी जी के अपने अश्रु जारी हो गये। लेखक को ऊपर उठा कर घुट कर बगलगीर हुए (अर्थात प्रेम से घुट कर अपने अङ्ग लगाया) और कहाः—" बेटा! घबराना नहीं, गुहा में एकान्त रह कर खूब अध्ययन करना, नित्य आत्मचिन्तन में लगे रहना, और स्वरूप में खूब स्थिति रखना। जो लेख अभी लिखा जा रहा है जब संपूर्ण खतम होगा, राम तुम्हें ततक्षण बुला लेगा। और जब कुटिया के बन जाने पर राम मालिदेवल में आजावेगा, तो तुम बेशक आठ २ दिन के पीछे राम के पास वहां आते रहना। राम की शारीरक जुदाई का ख्याल अधिक मत करना, और न राम की शारीरिक सेवा का अधिक शोक करना॥ राम का शरीर तो अब बे हिस्सो हर्कत (जड वत) जल्द होने वाला है, तुम अब केवल अपनी वास्तव उन्नति का

ख्याल रक्खो, किसी का सहारा (आश्रय) मत लो, अपने पाओं पर आप खड़े होना सीखो। सर्व प्रकार से पूर्ण वेदान्त की मूर्त्ति बनो, (अर्थात वेदान्त मुजस्सम हो जाओ)॥"

लेखक को बमरोगी गुहा में आये अभी केवल पांच दिन ही हुए थे कि स्वामी जी से एक दूत यह संदेश ले कर आया कि:—

> "जो लेख (अर्थात खुद मस्ती व तमस्सके .अरूज नाम का मज़मून) लिखा जा रहा था वह शीघ्र खतम होने वाला है, इसलिये आदितवार के दिन आप आवश्य आजाना और उसे साफ़ नक़ल कर देना, ताकि उस की साफ़ नक़ल रिसाला ज़माना या किसी अन्य उत्तम पत्र में छपाने को भेजी जावे॥"

इस संदेश के पाने पर लेखक ने आदित वार को स्वामी जी के पास स्वयं आना ही था कि उस से एक दिन पैहले अर्थात शनिवार की शाम को महाराजा साहिब के चपरासी ने आ कर यह सूचना दी कि "स्वामी जी का शरीर गंगा में बैह गया है,

और सब लोगों ने खबर देने के लिये मुझे आप के पास भेजा है॥"
इतना सुनना था कि लेखक अपने सब कार्य बन्द करके उसी दम टिहरी की ओर दौड़ा, और रात के आठ बजे से पहिले २ टिहरी नगर पहुंचा। सब लोग रुदन व शोक कर रहे थे। स्वामी जी के रसोया (भोला दत्त) को मिलने से निम्न लिखित हाल विदित हुआ:—

स्वामी जी और मैं (रसोया) दोनों अकेले गंगा स्नान करने गये थे। मैं (रसोया) तो झट स्नान करके गंगा तट पर बैठ गया, और स्वामी जी व्यायाम (वरजश) करके फिर गंगा में स्नानार्थ घुसे॥ बड़े तीव्र वेग वाले स्थान पर जा कर स्नान करने लगे। जल स्वामी जी की गर्दन से कुछ नीचे था, पहिले एक डुबकी लगाई, तद पश्चात बहुत काल तक उसी तीव्र वेग में खड़े रहे और बदन (देह) मलते रहे। जब दूसरी टुब्बी (डुबकी) लगाने लगे, तो पाओं के नीचे से एक बड़ा पत्थर फिसल गया, और स्वामी जी बड़े गेहरे (गम्भीर) जल में जा धसे। जब उस गम्भीर जल में खड़े न होसके, तो जल का तीव्र वेग उन को बहा ले गया, और आगे बहे जाकर स्वामी जी जल के एक भारी घूम (भंवर,

whirlpool) में फंस गये । वह (रसोया) बेचारह आदमियों की मदद के लिये इधर उधर भाग कर बलपूर्वक पुकारा, मगर मंदभाग्य से उस समय कोई पुरुष बाग में न पाया ॥ उस समय टिहरी के महाराजा साहिब गंगोत्री की तर्फ से वापस अपनी राजधानी को आ रहे थे, और बाग के सब लोग महाराजा साहिब को स्वागत (इस्तक़बाल) करने के लिये बाग छोड़ कर टिहरी नगर से भी बाहर गये हुए थे, इसलिये देर तक चिल्लाने पर भी रसोया को कोई पुरुष मदद के लिये न मिल सका ॥ जब वह (रसोया) घबरा कर इधर उधर दोड़ कर बड़े ज़ोर से चिल्लाने लगा, तो स्वामी जी ने घूम के बीच में से ही उसे यह अवाज़ दी कि :—"प्यारे ! घबराओ नहीं, हम आने का यत्न कर रहे हैं, अभी तेरे पास आये कि आये" ॥ स्वामी जी ने (१०) दश या १५ (पंद्रह) मिनट तक बाहर तट पर पहुंचने की कोशश की, मगर घूम से बाहार निकलने न पाये ॥ जब बाहार निकलने के बहुत से यत्न ठीक न बैठे तो फिर स्वामी जी ने उसी घूम के अन्दर बड़े ज़ोर की डुबकी लगाई, जिसकी सहायता से वह घूम

से वीस क़दम (३० फुट) के फ़ासले पर बाहर हो धारा के ठीक मध्य में जा निकले ॥ चूंकि जल में देर से यत्न कर रहे थे, भंवर (घूम) के ज़ोर ने उन का बल बहुत सा खर्च कर दीया था और शरीर भी पेहिले से शिथिल और दुर्बल था, इस लिये घूम से निकलते ही वहीं धारा के मध्य में उन का दम टूट गया। मुख में पानी भरने लग पड़ा। ना वरले किनारे और ना परले किनारे लग सके, बलकि तीव्र वेग के वश में आ कर धारा में बहे जाने लगे॥ जब शरीर परवश होगया तो स्वामी जी से एक दो बार ज़ोर से ॐ (ओम्) उच्चारण हुवा और बैह गये, और साथ २ हाथ पाओं को समेटते गये, अन्त में कोई (२००) दो सो गज़ की दूरी पर एक पर्वत की गुहा में जल ने दबा दीये। इधर से स्वामी जी का शरीर जल के तले बैठा ही था कि उधर से झट तोपें दगती सुनाई दीं ॥ यह तोपें वैसे तो महाराजा साहिब टिहरी की सलामी (स्वागत) में दगी थीं, परन्तु ठीक स्वामी जी के तिरोधान होने के समय पर दगने से द्विगुण (दो चंद) मतलब सिद्ध कर गयीं ॥ इसतरह से स्वामी जी का शरीर जल में समा गया अर्थात्

तिरोभान होगया ॥

रसोया के मुख से ऐसा शोचनीय (दर्द नाक) वृतान्त सुन कर चित्त पर अति ठेस (चोट) लगी। यह सब वृत्तान्त नारायण की अनुपस्याति काल (ग़ैर हाज़री) में हुवा था, इसलिये कुछ तो इस कारण से दिल को पछतावा होता था और कुछ जलका राम के शरीर को विवश करके वहा लेजाना चित्त को दुःख देता था ॥ नाना प्रकार के ख्याल उमंड २ कर चित्त को घेरने लगे ॥ कभी अपने मनसे एसे पूछता, "कि राम तो अपनी इच्छा विना शरीर त्याग नहीं सक्ते थे अब पानी भला कैसे विना इच्छा (मर्ज़ी) राम के उन के शरीर को वहा ले गया? आया, राम की इच्छा तथा आज्ञा अनर्व, प्रबल तथा अनटल हैं या मुर्दाः जल का वेग?। राम तो सर्वदा यह कहा करते थे कि 'मौत को मौत न आजायगी, यदि राम का संकल्प (क़सद) कर के आयेगी'। परन्तु अब यह सब उस के उलट ही दिखाई दीया" ॥ इधर तो अनेक प्रकार के ख्याल और वैहम अपना रंग दिखाते थे और उधर लेखक जब स्वामी जी के निवास स्थान में जाता तो स्वामी जी की पुस्तकों के संदूकों पर नज़र

पड़ते ही आंसुओं से भीग जाता, और दिल रो रो कर यूं (ऐसे) पुकारता कि "हाये! इन (अनन्त) नोटों, अत्यन्त लाभदायक असंशोधित लेखों, उपदेशों और उत्तम २ पुस्तकों का संशोधन तथा उनकी उत्कृष्ट तरतीव और तशरीह (भाष्य) राम जैसी अब कौन करेगा?"॥ चित्त न तो स्वामी जी के निवास स्थान को जाने देता और न उन की किसी पुस्तक को देखने तथा पढ़ने को उद्यत होता॥ नगर में जाता तो लोग शोक चर्चा ले बैठते जिस से ख्वाह मख्वाह चित्त शोकातुर होजाता। इस लिये कई दिन तक पागलों की तरह नारायण (लेखक) स्वामी जी के निवासाश्रम के वाहर गंगातट पर और जंगल में घूमता रहा॥ लेखक को स्वामी जी के तिरोधान होने से इतना दुःख और पछतावा नहीं होता था जितना कि स्वामी जी की वाणियों तथा वाक्यों के गलत प्रतीत होने से हो रहा था। क्योंकि संन्यासावस्था प्राप्त होन के पश्चात् स्वामी जी सारी जिन्दगी (जीवन) भर लेखक को ऐसे ही कहते रहे और पत्रों द्वारा लिखते रहे कि:—"जब तक राम स्वयं नहीं चाहेगा शरीर को मौत (मृत्यु) कदाचित

नहीं आयगी इत्यादि ।"

जब ऐसे पागल, उपराम और शोकातुर हुआ २ लेखक सर्व कामों को छोड़ बेकार घूमता २ टिहरी नगर में आनिकला तो प्यारे पूर्ण जी उधर प्रकट हुए ॥ यह प्यारे लेखक से भी अधिक इस शोक में डूबे हुए थे और कहने लगे कि "राम का इसतरह जल के वश में आकर शरीर छोड़ना राम के कई वाक्यों और लेखों को झूठा और गलत साबत कर रहा है, इसलिये राम की अन्य वाणियों पर भी चित्त अब निश्चय करने में उद्यत नहीं होता। वरन (बलकि) रहा सहा निश्चय भी मलिया मेट हुए जा रहा है।" इस तरह परस्पर बात चीत होते २ जब पूर्ण जी को यह विदित हुआ कि नारायण (लेखक) मारे उपरामता के अभी तक राम की पुस्तकों और कागज़ों को भी नहीं छूआ, और ना ही वह उस लेख (मज़मून) को कि जिस की नकल करने के लिये राम महाराज ने बुला भेजा था नज़र भर कर देख सका, तो उन्हों ने लेखक को राम के निवास स्थान पर जाने के लिये उकसाया। जिस से उसी रात्रि को हम दोनों राम जी के आश्रम पर गये और रात्रि भर वहां आराम

कीया। दिन चढ़ते ही सन्दूकों और बाहर खुले कागजों को दत्त चित्त हो देखना प्रारम्भ कीया। एक दो खुले पत्रों (कागज़ों) को देखने के पश्चात् वह लेख* (मज़मून खुद मस्ती-व-तमस्सके .अर्ज़) जिस की खातर नारायण बुलाया गया था हम दोनों के हाथ पड़ गया। आदि से पढ़ा जाने लगा। अभी तक किसी पत्रे पर पृष्ठे का नम्बर नहीं दिया हुआ था। इस लिये उसका जो भी पन्ना (पत्रां) हाथ में पड़ा उसी को देखना आरम्भ कीया। इस प्रकार केवल एक दो वर्क़ (पत्रे) ही देखे थे कि एक वर्क़ः (पत्रः) ऐसा हाथ में आया, जिस के एक तर्फ़ बहुत साफ निम्न लिखित लेख (मज़मून) लिखा हुवा था।

" **ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, गंगा, भारत !**

ऐ मौत (मृत्यु) ! बेशक उड़ा दे इस एक जिस्म (शरीर)

---

* यह कुल लेख राम की क़लम (लेखनी) से लिखा हुवा नारायण ने राम मठमें सम्भाल कर रक्खा हुवा है ताकि जो राम भक्त इस असल को देखकर, या पढ़ कर आनन्द लेना चाहें वह सुगमता से ले सकें॥

को, मेरे और अजसाम (अनेक शरीर) ही मुझे कुछ कम नहीं। सिर्फ चांद की किरणें, चान्दी की तारें पैहन कर चैन से काट सक्ता हूं । पहाड़ी नदी नालों के भेस (वेष) में गीत गाता फिरूंगा । बहरे मव्वाज (लेहरें मारता हुवा समुद्र) के लिबास (पोशाक वस्त्र) में मैं ही लैहराता फिरूंगा । मैं ही बादे खुश खराम, नसीमे मस्ताना गाम हूं (अर्थात मैं ही आनन्द मय मंद स्पन्द तथा शीतल और सुगन्ध भरी वायु हूं) मेरी यह सूरते सैलानी (सैर करने वाली अथवा जलमय मूर्ति) हर वक्त रवानी (अस्थिर या चलायमान) में रहेती है । इस रूप में पहाड़ों से उतरा, मुरझाते पौदों को ताज़ाः कीया । गुलों (पुष्पों) को हंसाया, बुलबुल को रूलाया, दरवाज़ों (द्वार) को खट खटाया, सोतों को जगाया, किसी का आंसू पोंछा, किसी का घुंघट उड़ाया । इस को छेड़, उस को छेड़, तुझ को छेड़ । वह गया, वह गया । न कुछ साथ रक्खा न किसी के हाथ आया ॥ ”

आखरी पङ्क्ति के नीचे एक लम्बी और मोटी रेखा (लकीर) खिची हुई थी

इस कुल लेख को पढ़ते ही हम दोनों के कुल वैहम, शक, ग़म और फ़िकर सब काफूर (दूर) हो गये और सब हृदयस्थ दुःख मलिया मेट हो गये । चित टिकाने पर आ गया, वलकि: राम के शरीर छोड़ने का वृत (वाक्या) भी भूल गया ॥ फिर तो सब सन्दूक खोले । प्रत्येक कागज़ और पुस्तक संदूकोंसे नकाल कर दतचित से पढ़े गये । जितने नवीन उपदेश और लेख अंग्रेज़ी भाषा में लिखे हुए पाये वह सब के सब एक स्थान पर एकत्र कीये गये । और फिर शनैः २ विषयानुसार सात भागों में बांटे गये ॥ जो तीन जिल्दों में छापे गये हैं और लाला अमीर चंद प्रेम धाम वड़ा दरीबा देहिली के पते से मिलते हैं ॥

यह उर्दू भाषा का लेख जिस में स्वामी जी ने अपनी लेखनी से (काल भगवान) मृत्यु को बुलाया था, वह सारा का सारा खुले पत्रों में स्वामी जी की मेज़ पर पाया गया था । जब उन के रसोया से पूछा गया कि यह लेख कब और किस से मेज़ पर रखा गया था तो उस ने यह जवाब दीया:

" स्नान करने से कइ घंटे पेहिले स्वामी जी इन कागज़ों पर

कुछ लिख रहे थे। जिस समय यह कागज़ स्वामी जी के हाथ में थे, मुख उन का लाल, मस्त और जगमगाता था। आंखों से मोतियों के सदृश अश्रू (आंसू) टपकते थे। शरीर इस लेख के लिखने में ऐसा युक्त था कि हिलता भी नहीं था। उस काल स्वामी जी अपने ध्यान में ऐसे मेह्र (युक्त चित्त) थे कि दुन्या से बिल्कुल बेखबर प्रतीत होते थे। मैं कितनी देर पास खड़ा रहा मगर मेरी ओर दृष्टि तक न की॥ ग्यारह बजने लगे थे, मैं खबर देने आया कि भिक्षा त्यार है। आप उस काल भी बिल्कुल समाधिस्थ थे। लेखनी और कागज़ हाथ से छूटे पड़े थे। दबे लबों से (मन्द आवाज़ से) मैं ने कहा " कि भगवन! भिक्षा तय्यार है, " मगर कुछ न जवाब मिला। थोड़े काल पीछे फिर बोला, " कि महाराज! भिक्षा आप की बाट ताक रही है "॥ इस बार ज़रा ज़ोर से बोला था, स्वामी जी ने मेरी आवाज़ सुनकर आंखें खोलीं और पूछा 'बेटा! क्या कहता है?' मैं ने प्रार्थना की कि 'महाराज! भिक्षा त्यार हो-गयी है आप आज्ञा करिये, आप के स्नान की खातर जल ऊपर

लाऊं या आप गंगा तट पर जाकर स्नान करेंगे ' ॥ हंस कर बोले कि ' तुम ने खाना अभी तक कुछ खाया है या नहीं ' । मैं ने उत्त्र दीया कि ' महाराज ! मैं ने अभी तक कुछ नहीं खाया, मैं भी आज गंगा स्नान करके खाऊंगा ' ॥ मेरे इस उत्त्र पर स्वामी जी बहुत हँसे और मुझे आश्चर्यवत (हैरान* होकर) पूछा, ' कि आज, प्यारे ! तुम्हारे स्नान का क्या कारण है, तुम क्यों आज गंगा स्नान करके भोजन पाओगे ! ' मैं ने उत्तर दीया कि ' महाराज ! आज भारी पर्व का दिन है :—प्रथम तो दीपमाला है, द्वितीय संक्रान्त, और तीसरे अमावस्या है । इस लिये मैं भी आज गंगा स्नान करके ही भोजन पाऊंगा ' ॥ स्वामी जी के पाओं पर व्यायाम करते समय किञ्चित् चोट लग गयी थी, दो चार दिन से वह ऊपर गंगा जल मंगवार कर स्नान करा करते थे, मेरे इस

---

* टिहरी पर्वत में द्विज लोग प्रति दिन गंगा स्नान नहीं करते । खास कर शीत काला में तो कई दिनों तथा मास के पीछे किसी खास पर्व के दिन गंगा स्नान करते हैं । इस लिये रसोया के गंगा स्नान की खबर ने स्वामी जी को आश्चर्य मय कर दीया ॥

उत्तर के सुनने पर उन्हों ने भी अपनी कुटी में स्नान करना उचित न समझा, और कहा कि अच्छा, प्यारे ! आज राम भी नीचे गंगा तट पर जाकर स्नान करेगा ! चलो हम दोनों अकट्ठे ही चलें" ॥ इस प्रकार से स्वामी जी और मैं दोनों अकट्ठे गंगा स्नान करने चले गये ॥ स्वामी जी तो तट पर पहुंच कर व्यायाम करने लग पड़े। और मैं कपड़े उतार कर स्नान करने लग पड़ा। मैं स्नान करके तट पर बैठ गया, और स्वामी जी फिर स्नान करने गंगा में प्रविष्ट (दाखल) हुए, जिस के उपरान्त उन के बैह जाने का वृत्त (वाक्या) हुआ" ॥

रसोया के कुल कथन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि लेख को लिखते समय स्वामी जी का चित्त या तो शरीर के अति दुर्बल, शिथिल, रोगी और बिलकुल बेकार होने के कारण शारीरक जीवन (जिन्दगी) से अति उपराम हुआ २ था जिस से कि उन्हों ने मृत्यु को बुलाया और उसे शरीर के लेजाने की आज्ञा दी। या उन का चित्त अपने आनन्द स्वरूप में इतना अति मग्न, तृप्त, मस्त और डूब गया था कि उस अत्यन्तानन्द को पा कर फिर शरीर

को उठाये फिरना या उस की रक्षा में ज़रा सी वृत्ति देना उन्हें विषम (बोझल) और हानिकारक महसूस हुआ था जिस से कि मृत्यु को बुला कर इस को उड़ाना चाहा। और या जैसे श्री स्वामी शंकराचार्य जी ने उचित समझ कर अपने शरीर को जान बूझ कर हिमालय में जाकर वर्फों में गिला दीया था इसीतरह स्वामी जी ने भी शरीर को शिथिल, दुर्बल और बेकार समझ कर उचित अवसर पा उसे जान बूझ कर गंगा में वहा दीया। परन्तु जल में शरीर के बचाने की खातर उन का देर तक लगातार यत्न करना इस अन्तम नतीजे को ठीक सिद्ध नहीं करता॥ खैर, पाठक ख्वाह कुछ ही नतीजा निकालें, राम महाराज का यह उपकारक शरीर ठीक दीपमाला (दिवाली) के दिन अर्थात् १७ अक्टूबर सन १९०६ तदनुसार संवत १९६३ कार्तिक की अमावस्या को दुपैहर के समय महाराजा साहिब टिहरी के बाग़ीचे (सिमलासू) के नीचे भृगु गंगा में वैह गया और नित्य के लिये सब को अपनी जुदाई दे गया॥

एक सप्ताह के पीछे स्वामी जी का शरीर फूल कर जल से

बाहर निकल आया। फूला हुवा शरीर जब किनारे पर लगा, तो उस समय भी समाधि अवस्था में स्थित पाया गया। दोनों हाथ और बाज़ू (बाहें) अपनी छाती पर एक दूसरे के उपर रक्खे पालती लगाये नज़र आते थे। आखें बन्ध थीं मानो अभी भी समाधिस्थ हैं। गर्दन सीधी खड़ी हुई। मुंह ॐ कहते २ खुला हुवा, ऐसे स्पष्ट खुला हुवा था मानों अभी ॐ उच्चारण हो रहा है। आठ दिन तक जल के जीवों से शरीर जल में बचा रहा। बाहर आने पर एक सन्दूक में बन्ध रख कर संन्यासविध्यानुसार भागीर्थी गंगा में परवाहा दीया गया, और श्री गंगा जी ने अपने प्यारे को नित्य के लिये अपने में मला लिया॥

महाराज साहिब टिहरी जिन को कि स्वामी जी से अति प्रेम था और जिन्हों ने स्वामी जी के बहे जाने का समाचार सुनते ही कैई घंटों तक अपने महल में उस रात्रि दीपमाला बन्द कर रक्खी थी जब स्वामी जी का शरीर बाहर निकल आया और अर्थी में रख कर गंगा ओर लेजाया जाने लगा तो उन्हों ने अपने सब दफतर बन्ध कर दीये॥ इसी प्रकार जहां कहीं यह शोक समाचार

पहुंचा वहां शोक प्रकट करने अर्थ सभायें की गयीं ॥

स्वामी जी के शरीर का यह अति संक्षेप जीवन चरित सरल हिन्दी में दीया गया है, विस्तार पूर्वक चरित अंग्रेज़ी भाषा में प्यारे पूर्ण जी से लिखा जा रहा है जिस का अभी कुछ पता नहीं कि कब तिय्यार हो ॥ अपने विषय में जो कुछ स्वामी जी ने आप स्वतः लिखा हुवा था या जो उन से लेखक ने स्वयं सुना था या जो समय २ पर लेखक ने खुद देखा था या जो थोड़ा सा स्वामी जी के देह के संबन्धियों से सुना था वह कुल का कुल इस संक्षिप्त जीवन चरित में बहुत सरल भाषा में दीया गया है, इस से अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं ॥ इस जीवन चरित के छप जाने के पीछे स्वामी जी की लेखनी से लिखे हुए ११०० ग्यारह सौ पत्र लेखक के हाथ लगे हैं । यह सर्व पत्र (खत) स्वामी जी ने कालिज के दिनों में अपने गृहस्थाश्रम के गुरु (भक्त धन्ना राम) जी को लिखे थे । पत्र व्यवहार स्वामी जी ने अपने गुरु जी के साथ ऐसे समय आरम्भ करा था जब उन की आयु लग भग १५ (पंद्रह) वर्ष के थी, और कालज में अभी नहीं गये थे ॥ इस लिये इन

पत्रों द्वारा स्वामी जी की बाल्यावस्था का हाल भी उन की अपनी लेखनी से पूरा २ प्रकट हो रहा है ॥ इन पत्रों के पढ़ने से मालूम हुआ कि जो वृत्तान्त स्वामी जी के विषय में उन के संबन्धियों इत्यादि से सुन कर (पृष्ठ १०, ११ व १८ से लेकर ३० तक और पृष्ठ ३४ से लेकर ३७ तक लेखक ने) दिया है वह वृत्तान्त यदि मतलब (तात्पर्य) रूप से तो कुछ ठीक उतरता है परन्तु एक २ शब्द करके बिलकुल पूरा नहीं बैठता । इस लिये यद्यपि विरुद्ध तथा ग़लत शब्दों को शुद्धिः पत्र में संशोधन करके दे दिया है तथापि प्रत्येक शब्द से वह वृत्तान्त मानने योग्य नहीं ॥ अब यह हिन्दी राम वर्षा अपनी असली भाषा (उर्दू) में छपने लगी है, आशा है कि उस उर्दू राम वर्षा के प्रस्ताव में यह वृत्तान्त ठीक रीति से दिया जायगा ॥

पृष्ठ ३८ से लेकर अन्तिम तक कुल वृत्तान्त लेखक का अपना देखा हुआ है या स्वामी जी से सुना हुआ है इस लिये वह सम्पूर्ण रीति से मानने योग्य है ॥

स्वामी जी के संक्षिप्त पत्र भी उर्दू भाषा में छप रहे हैं, आशा

है कि दो या तीन मास के अन्दर २ एक पुस्तकाकार में वह निकलेंगे। और लाला अमीर चन्द प्रेम धाम बड़ा दरीबा देहिली के पते से मिलेंगे, अन्य भाषा में स्वामी जी की पुस्तकें भी इन ही से मिलेंगी ॥

नारायण स्वामी
शिष्य श्रीमान मुक्त पुरुष स्वामी राम तीर्थ जी
महाराज

विषय सूचि.

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ

वेदान्त.

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ
१०	कोहे नूर का खोना (जेरे नादर हुआ महम्मद शाह)	४२८
११	खताब नपोलियन को (वाह रे नपोलियन ! नडर शह मर्द)	४३२
१२	सीज़र (ऐ शहनशाहे जूलयस सीज़र)	४३३
१३	शाहे ज़मान् को वरदान (कैसेर हिन्द ! बादशाह दावर)	४३७
१४	आनन्द अन्दर है (सग ने हड्डी कहीं से इक पाई)	४४१
१५	सकन्दर को अवधूत के दर्शन (क्या सकन्दर ने भी कमाल कीया)	४४३
१६	अवधूत का जवाब (क्या ही मीठी ज़ुबान से बोला)	४४५
१७	जिस्म से बेतअल्लुकी (बादशाह इक कहीं को जाता था)	४५६
१८	फकीर का कलाम (कदम बोसी को शाह झुका ही था)	४६०
१९	गार्गी (जनक राजा की हुक्मरानी में)	४६२
२०	गार्गी से दो दो बातें (राम भी एक बात कहता है)	४६७
२१	गंगा पूजा (गंगा तेथों सद बलहार जाउं)	४७१
२२	गंगा स्तुति (नदीयां दी सरदार ! गंगा रानी.)	४७२
२३	अमर नाथ की यात्रा का हाल	४७२

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ

माया और उस की हकीकत.

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ

तीन शरीर और वर्ण.

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ

भारत वर्ष.

राम वर्षा

दूसरा भाग.

राम की विविध लीला.

वेदान्त.

आज़ादी.

(१) मोहनी ताल दीपचंदी

बल वे आज़ादी खुशी की रूह उम्मीदों की जां ।
बुल्बुलासां दम से तेरे पेच खाता है जहां ॥
मुल्क दुन्या के तेरे बस इक करिश्मा पर लड़े ।
खून के दर्या बहाये नाम पर तेरे मरे ॥
हाय मुक्ति, रस्तगारी, हाय आज़ादी नजात ।

१ नाज़, नखरा २ छुटकारा ३ मुक्ति

मक़सदे[4] जुमला[5] मज़ाहिब[6] है फ़क़त तेरी ही ज़ात ॥
उंगलयों पर बच्चे गिन्ते रहते हैं हफ़्तः के रोज़ ।
कितने दिन को आयेगा यकशंबः[7] आज़ादी फ़रोज़[8] ॥
रम ब्रांडी के मुक़य्यद[9] सच्ची आज़ादी से दूर ।
हो गये नशे पै लट्टू, बेहरे आज़ादी[10] सरूर ॥
साहबो! यह नींद भी मीठी न लगती इस क़दर ।
क़ैदे तन से दो घड़ी देती न आज़ादी अगर ॥
क़ैदे में फंस कर तड़पता मुर्ग़ है हैरान हो ।
काश[11]! आज़ादी मिले तन को नहीं तो जान को ॥
लम्हा[12] जो लज़्ज़त मज़े का था वह आज़ादी का था ।
सच कहें, लज़्ज़त मज़ा जो था वह आज़ादी ही था ॥
क्या है आज़ादी? जहां जब जैसा जी चाहें करें ।
खाना पीना ऐश[13] गुलछर्रों में सब दिन काट दें? ॥

४ नतीजा (असली ग़रज़) ५ सब ६ मज़हब, धर्म ७ आदित वार ८ आज़ादी देने वाला ९ क़ैदी १० आज़ादी के आनन्द की खातर ११ ईश्वर करे १२ एक पल १३ विषय भोग

राग शादी नाच इशरत जल्से रंगा रंग के ।
बंगले बाग़ात आली....योरोपीयन ढंग के ? ॥
कैसा टोपी की नयी फैशन नराला बूटका ।
दिलकशो बेदाग़ खुलना बदन पर यह सूट का ? ॥
दिलको रंगन जिस्म की भाये शादी बेखटके करें ।
धर्म की आयीन चुपके ताक़ पर ते कर धरें ? ॥
बग्घें फिटन के आगे कोचवान का पोश पोश ।
अबलक़ों का वह निकलना, हिनहिना जोश जोश ? ॥
कोट पैहनाता है नोकर, जूता पैहनाये .ग़ुलाम ।
नाक चढ़ाता है आक़ा, जल्द बेनुनफा हराम ! ॥
मुंह में घट घट सोडावाटर और सिगारों का धूंवा ।
ज़ोफ़ की दिल में शकायत, राम की अब जा: कहां ? ॥
क्या यह आज़ादी है ? हाय ! यह तो आज़ादी नहीं ।

१४ विषयानन्द १५ अंग्रेज़ों की तर्ज़ के मकान १६ वज़ा तर्ज़ १७ दिल को खैंचने वाला १८ खुशी १९ क़ानून (आज्ञा) २० घोड़े २१ कमज़ोरी

गोये[२२] चौगां की प्रेशानी है-आज़दी नहीं ॥

अस्प[२३] हो आज़ाद सरपट, कैद होता है स्वार।

अस्प हो मुतलक़[२४] .इनां[२५], हैरान रोता है स्वार ॥

इंद्रियों के घोड़े छूटे वाग डोरी तोड़ कर।

वह मरा वह गिर पड़ा, स्वार सिर मुंह फोड़ कर ॥

ताज़ी[२६] तौसन तुंद[२७] खो[२८] पर दस्तो पाँ जकड़े कड़े।

ले उड़ा घोड़ा मिज़प्पा[२९] जान के लाले पड़े ॥

जाने मन[३०] आज़ाद करना चाहते हो आप को।

कर रहे आज़ाद क्यों हो आस्तीं[३१] के सांप को ? ॥

हां वह है आज़ाद जो क़ादिर[३२] है दिल पर जिस्म पर।

जिसका मन काबू में है, .कुदरत[३३] है शकलो इस्म पर ॥

२२ खेलने वाले गेंद २३ घोड़ा २४ बिलकुल २५ लगाम डोरी से काबू कीया हुवा २६ .अर्बी घोड़ा २७ बदमज़ाज़ तेज़ २८ हाथ पांवों जकड़े हूवे २९ .अर्बी घोड़ेका नाम है ३० ऐ मरी जान (प्यारे) ३१ बगल, कखारियाली ३२ बलवान ३३ ताक़त, बल

ज्ञान से मिलती है आज़ादी यह राहत[34] सर बसर[35]।
वार के फेंकूं मैं इसपर दो जहां का मालो ज़र[36]॥

३४ आराम ३५ लगातार ३६ धन, दौलत

---

२ वेदान्त आलमगीर

(१) गर कमिशनर हो लाट साहब हो।
या कोई और ग़ैर साहब हो॥
हर कोई उस तलक नहीं जाता।
अधिकारी ही है दख़ल पाता॥
लैक[1] जब अपने घरमें आना हो।
कौन है उस वक़्त जो मानि[2]ः हो॥
जब कोई अपने घर को आता है।
हैफ उस पर है, रोकता जो है॥
हो जो वेदान्त ग़ैर से यारी।

१ लेकन २ मना करने वाला

तब तो कहना बजा था अधिकारी ॥
यह तो जी! अपने घरकी विद्या है।
पाना इस को फर्ज सब का है ॥
"मैं हूं खुद ब्रह्म" यह करो अभ्यास।
मैं नहीं जिस्मो इस्मो नौकर दास ॥
"मैं हूं बेलौस पाक आला ज़ात"।
जैहल की हो कभी न जिस में रात ॥
मैं हूं खुर्शीद तेज़ अनवर आप।
मैं था ब्रह्मा का बाप सब का बाप ॥
वेद है मेरा एक खर्राटा।
भेद दुन्या का मेरा खर्राटा ॥
राम कहता नहीं है सैकंडहैंड।
वह तो खुद है श्रुति, न सैकण्डहैंड ॥
वह जो कमज़ोर आप होते हैं।

३ शरीर और नाम ४ बगैर कलंक, बेदाग़ ५ सूरज ६ प्रकाशों का प्रकाश ७ दूसरे से सुनी सुनाई

लुक़्माये तीन ताप होते हैं ॥
दों न पढ़ाने के जो अधिकारी ।
उन को मिलना नहीं है अधिकारी ॥
(२) एक दफ़ा देव ऋषि नारद ने ।
देख कर सूंअर से कहा उस ने ॥
"चल तुझे ले चलेंगे हम वैकुंठ ।
लीला अद्भुत वचित्र है वैकुंठ" ॥
खूक बोला गुज़ब से तब नादां ।
"क्या मुझे मिल सकेगा कीचड़ वां?" ॥
जब ऋषी ने कहा "नहीं यह तो" ।
खूक बोला "मैं जाऊं काहे को?" ॥
यह न समझा वहां जो जाऊंगा ।
जिस्म भी तो नया ही पाऊंगा ॥
हवसे दुन्या के प्यारे शहतीरां ! ।

८ ग्रास ९ लायक़ १० वराह, सूवर ११ वहां से मुराद है १२ दुन्या के लालची

ऐ सतूनहाये दुन्या या बोहतान[१३]! ॥
तुम न जी में ज़रा भी घबराओ ।
खटका मुतलक़ न दिलमें तुम लाओ ॥
"हाये! वेदान्त क्या ही कर देगा ।
ज़ेर[१४] कर देगा, ज़बर[१५] कर देगा ॥
तुम रखो अपने जी में इतमीनान[१६] ।
शक नहीं इस में इक रत्ती भर जान ॥
गर अवारज़[१७] तेरे बदल देगा ।
साथ तुम को भी और कर देगा ॥
लोटना छोड़ियेगा कीचड़ में ।
ज़ालसाज़ी में झूठ की जड़ में ॥
खाक दुन्या की मत उड़ायेगा ।
असल अपना न भूल जायेगा ॥

१३ झूटे १४ नीचा १५ ऊंचा १६ हौंसला, तसल्ली
१७ इर्दगिर्द, दुःख

"मैं हूं यह जिस्म", फोहश बोली है।
स्वांग छोड़ो, सितम यह होली है ॥

(३) मिसर की खोद लें जो मीनारें।
हाये मुर्दों भरी वह मीनारें॥
ममी मुर्दे उन्हों में रखे थे।
ऐसी तरकीबो अक़्लमन्दी से ॥
गो हज़ारों बरस भी हों बीते।
मुर्दे आते नज़र हैं जूं जीते॥
प्यारे भारत के हिन्दू बाशन्दो!।
गुस्सा मत करना, ज़ोहदो रिन्दो!॥
जी रहे हो कि मर गये हो तुम?।
ममी मीनार बन गये हो तुम?॥
जीते तुम थे ऋषी मुनी थे जब।
ममी क्यों हो हज़ार साल के अब!॥

१८ गज़ब की होली १९ कर्मकाण्डी २० मस्त

क्यों हो ज़िन्दा* बदस्ते मुर्दा आप।
नाम रौशन डबोया उन का आप॥
वह तो जीते थे तुम भी जी उट्ठो।
मुर्दा बच्चे न उन के हो बैठो॥
नाम तो ले रहे हो व्यास का तुम।
काम करते हो अदना दास का तुम॥
बेटा वही सपूत होता है।
बाप से बढ़ के जो पूत होता है॥
छोड़ दो नाम लेना ऋषीयों का।
खुद ऋषी हो अगर न अब बनना।
जब यह कहना है एक नालायक़॥
"भृगू मेरा बज़ुर्ग था लायक़"
भृगू मनसूब[२१] उन से होता है।
शर्म से †अर्क़ २ रोना है॥

२१ नसल से निसबत रखना * जीते जी मौत के हाथ होना † पसीना २ रोना

दुःख मत दो उन्हें सताओ मत ।
शर्म से सर नेंगू[22] बनाओ मत ॥
नाम *लेवे, अजब मिले ऐसे ।
धब्बे यह नाम को लगे कैसे? ॥
मूछ दाढ़ी लगा के बुड्ढे की ।
बच्चा बूढ़ा नहीं कभी होगा ॥
उस को वाजब है तरबीयत पाये ।
वक़्त पर यूं बज़ुर्ग ही होगा ॥
उन की डाढ़ी लगाया चाहते हो ।
तरबीयत[23] से गुरेज़[24] करते हो ॥
है मुनासब बज़ुर्ग की ताज़ीम ।
खंदः[25] और न, चाहिये तकरीम[26] ॥
बूढा खाता है खिचड़ी पतली रोज़ ।

२२ नीचे सिर २३ पालन पोसन, तालीम पाना २४ भागना
२५ हंसी २६ इज़्ज़त * नाम लेने वाले

नक़ल से कब जवां हो पीरोज़^[27] ॥
प्यारे! बनियेगा आप ज़िन्दाः पीर।
उन बज़ुर्गों की मत बनो तस्वीर ॥
नक़्श जब है उतारता नक्क़ाश।
तकता रहता है असल को नक्क़ाश॥
नक़्श यह गरचिः बादशाह का हो।
फिर भी मुर्दा है, ख्वाह किसी का हो॥
फ़ेल अर्तवार^[28] ऋषीयों मुनीयों के।
ऋषी तुम को नहीं बना सकते॥
.अमल ज़ाहर जो उन को ज़ेबा थे।
वक़्त था और, और ही दिन थे॥
जिस्म उन के थे जो, उन्हीं के थे।
वह तुम्हारे नहीं कभी होंगे॥
करके तक़्लीद^[29] तुम बना ही लो।

२७ बुड्ढा २८ तरीके, कर्म २९ ऊपर की देखा देखी, बग़ैर दर्याफ़्त के किसी की पैरवी करना, या नक़ल करना

सूरते शेर, नारंह[30] क्योंकर हो ॥
आओ तजवीज़ एक बतलायें ।
ऋषी बनने की बात जतलायें ॥
देह सूक्ष्म को और कारण को ।
चीर कर चढ़िये मिहरे[31] रौशन को ॥
चढ़िये ऊपर को असल अपने को ।
ज़िंदगी तुम में भी ऋषी की हो ॥
मिहरे रौशन जो आत्मा है तेरा ।
यहं ही वासिष्ठ कृष्ण राम का था ॥
उस में निष्ठा नशस्त कर मुखतार ।
छोड़िये ज़िकरो फिकर सब बेकार ॥
नक़ल मत कीजीये फेले बेरूनी[32] ।
आत्मा एक ही है अन्दरूनी ॥

३० गर्ज . ३१ प्रकाश स्वरूप सूरज (आत्मा) ३२ बाहर के कर्मों की

ब्राह्मणो! आप सीख लो विद्या।
फिर यह घर घर फिरो पढ़ाते जा॥
और क़ौमें तुम्हारे बच्चे हैं।
गर शक़ायत करें, वह सच्चे हैं॥
जब्र से, क़ैहर[२३] से, महब्बत से।
ज्ञान दीजे उन्हें मुरव्वत[२४] से॥
वक़्त उपदेश को अगर दोगे।
तो ही क़ायम स्वरूप में होगे॥
गंगा हर वक़्त बहती रहती है।
साफ निर्मल जभी तो रहती है॥
कांटे बोता है, झूट हो जिस में।
याद रखना, है मौत ही उस में॥

२३ गुस्से २४ मरदानगी से

(३) ज्ञान के बिना शुद्धि नामुमकन

पिदरे[1] मजनू ने पिदरे[2] लैली से।
गिरया[3] ज़ारी से आ कहा उसने ॥
मेरी सारी रियासतें लीजे।
.उमर भर तक .गुलाम कर लीजे ॥
मेरे लड़के को लैली जादू चशम।
दीजे छोड़ दीजे आखर खशम[4] ॥
पिदरे लैली ने फिर महब्बत से।
यूं कहा प्यार ही का दम भर के ॥
मैं तो हाज़र हूं लैली देने को।
.उज़र कोई भी है नहीं मुझ को ॥
पर वह आखर जिगर का टुकड़ा है।
न वह पत्थर शजर[5] का टुकड़ा है ॥

१ मजनू (एक आशक़ हूवा है) का पिता २ लैली (माशुक़ाः) का पिता ३ रोते रोते ४ .गुस्सा, खफगी ५ वृक्ष, दरखत

वह भी इन्सान शिकम से आयी है।
आस्मां से तो गिर न आयी है॥
क़ैस तुम को अज़ीज़ बेशक है।
पर वह *मजनूं है, इस में क्या शक है॥
ऐसी हालत में लड़की क्योंकर दूं।
इक जनूनी के मैं गले मढ़ दूं?॥
मर्ज़ मजनूं का पहले दूर करो।
सिर से सौदा अगर काफ़ूर करो॥
शौक़ से लीजे, तब तुम्हारी है।
लैली दौलत यह सब तुम्हारी है॥
हाय ज़ालिम सितमगर बे रहम!।
वाये नादां गुरूर सूरते ज़हम!॥
देता लैली को बाये आज नहीं।
और मजनूं का तो अलाज नहीं॥

६ मजनूं ७ पागल पन ८ दुःखरूप (तकलीफ़ देने की सूरत वाला) * पागल

और तो सब इलाज कर हारा।
बचता मजनू नहीं वह बेचारा॥
मारा मजनू बग़ैर लैली के।
था न *चारा बग़ैर लैली के॥
हिन्दू पंडित महात्मा साधो!।
जी कड़ा क्यों है? रैहम को राह दो॥
जीव मजनू बना है दीवाना।
दशते ग़म छानता है वीराना॥
दशते दुन्या में वैहशी आवारह।
लैली "आनन्द" के लीये पारा॥
लैली समझे गुलों को चुनता है।
फिर पड़ा सिर को अपने धुनता है॥
सरु को जान कर यह लैली है।
वैहम से जान अपनी खो दी है॥

*इलाज ९ दुन्या के जंगल १० बेक़रार ११ एक वृक्ष का नाम है

चशमे आहू[12] को चशमे लैली मान ।
पीछे भटका फिरे है हो हैरान ॥
असली आनन्दे .जात से महरूम[13] ।
खारो खैल[14] में मचा रहा है धूम ॥
[15]गाह आनन्द ज़र को माने है ।
बौल[16] में गाह खाक छाने है ॥
लोग कहते न हों बुरा मुझ को ।
नंग रह जावे, नाक हाथी को ॥
राये लोगों की, अहो मुतग़य्यर[17] ।
इस के पीछे फिरे है मुतहय्यर[18] ॥
सारी वहशत[19], यह बादियां गर्दी ।
लैली खातर है, जुमला[21] सिरदर्दी ॥

१२ मृग की आंख १३ बेखबर १४ खाक मट्टी में १५ कमी १६ मूत, पेशाब (पेशाब की जगह) १७ बदलने वाली १८ हैरान हुए २ १९ हैवान पना, पशुपन २० जंगलों में घूमना २१ सब, कुल

लैली मिलते जुनूं[22] जायेगा।
ब्रह्म विद्या बेदूं[23] न जायेगा॥
शम दम आयेंगे ब्रह्म विद्या से।
फ़िकर जायेंगे ब्रह्म विद्या से॥
शम हो पैहले, ज्ञान पीछे हो।
सेर[24] होलें, तुआम पीछे हो॥
हाये! पंडित ग़ज़ब यह ढाते हो।
उलटी गंगा पड़े बहाते हो॥
यह इसी पाप का नतीजा है।
डूबे दुःखों में आज जाते हो॥
वेद दानों! यह मौत मत रखना।
[26]धीः को, बुद्धि को घरमें मत रखना॥
लड़की घर में न ज़ेब* देती है।

२२ पगलापन २३ विना, बग़ैर २४ पेट भर कर रज जाना, २५ भोजन, खाना २६ बेटी—लड़की रूपी बुद्धि * अच्छी लगना

धन पराया फरेब देती है ॥
ब्रह्म विद्या का दान अब कर दो ।
वरना .इज्जत से हाथ धो बैठो ॥
वक़्त देखो, समय को संभालो ।
ज़ात क़ायम हो, काँया पलटा लो ॥
नंगो नामूस अब इसी में है ।
बचना ज़िल्लत से बस इसी में है ॥
डूबा तारा तुम्हारा पूरब को ।
ब्रह्म विद्या चली है यूरप को ॥
हिंद मजनू बना है दीवानाः ।
तलमलाता है मिसले परवानाः ॥
मुयदहे वसल अब सुना देना ।
खुशो खुर्रम अदा से गा देना ॥

२७ शरीर २८ पागल २९ पतंग की तरह ३० मुलाक़ात (आत्म साक्षात्कार) की खुशखबरी ३१ प्रसन्न मुखड़े

वेद का फ़र्ज़ यह चुका देना।
फ़र्ज़ अपना यह कर अदा देना॥

---

(४) गुनाह.

पाप क्या है? गुनाह कितने हैं?।
दाख़िले[1] जैहल सारे फ़ितने हैं॥
आत्मा जिस्म ही को ठैहराना।
बूटा पापों का यह है लगवाना॥
आत्मा पाक[2], हैस्त[3], बरतर है।
.इल्म वाँहद[4], सरूरो[5] अकँबर है॥
जिस्म को शाने आत्मा देना।
रात को आफताब कह देना॥
किज़्बो[6] बुँतलां[7] यही है पाप की जड़।

१ अज्ञान में दाखल २ शुद्धि ३ सत्ता मात्र, वास्तव वस्तु ४ अकेला ५ धनानन्द ६ झूठ ७ बेअसल

एक ही जेहल तीन ताप की जड़ ॥

क्या तर्कव्वर है ? किबंरयाई-ए-ज़ात (को)।

बेच देना ग़ोरों जिस्म के हात ॥

क्रोध क्या है ? जलोले वाहदे .ज़ात (को)।

बेच देना ग़ोग़ जिस्म के हात ॥

क्या है शहवत ? सरूरे पाके .ज़ात।

बेच देना हक़ीर जिस्म के हात ॥

क्या .अदावत है ? पाक वहदते ज़ात।

बेच देना हक़ीर जिस्म के हात ॥

*हिर्स क्या ? सब पै कब्ज़ा-ए-कुल्ली-ए-ज़ात।

बेच देना हक़ीर जिस्म के हात ॥

मोह क्या है ? .क्यामे यक्सां ज़ात।

८ अहंकार ९ स्वरूप की बड़ाई १० झूठा ११ एक्ता (स्वरूप) की रौणक़ १२ हाथ, कर १३ विषयानन्द १४ शुद्ध स्वरूप का आनन्द १५ दुश्मनी १६ नाचीज़ १७ सर्व व्यापक की मल्कीयत (सर्वव्यापकता) १८ एक रस स्वरूप की स्थिरता * लालच

बेच देना हक़ीर जिस्म के दान ॥
फिर गुनाह क्या है? आत्मा का हक़ ।
जेहल को छीन देना हक़-नाहक़ ॥
हस्ते मुतलक़ का जेहल में संसर्ग ।
तोशा है पाप का, गुनाह का बर्ग ॥

१९ सत्स्वरूप २० ग़ाफ़िल २१ भार, असबाब, ज़ख़ीरा
२२ पत्ता, फल

(८) कलियुग.

सच्चे दिल मे विचार कर देखो ।
तुम ने पैदा कीया है कलियुग को ॥
"मैं नहीं हूं ख़ुदा" यह कलियुग है ।
"जिस्म ही हूं" यक़ीन यह कलियुग है ॥
"जिस्म है आत्मा" यह कलियुग है ।
चार वाकों का मत, यह कलियुग है ॥
खाऊं पीवूं मज़े उड़ाउंगा ।

हां विरोचन का मत, यह कलियुग है ॥

बंदा-ए-जिस्म ही बने रहना ।

सब गुनाहों का घर, यह कलियुग है ॥

जिस्म से कर नशिस्त अपनी दूर ।

*हू जीये आत्मा में खुद मसरूर ॥

जिस्म में गर निवास रक्खोगे ।

ज्ञान से गर हिरास रक्खोगे ॥

पाप हरगिज़ न छोड़ेंगे हरगिज़ ।

ताप हरगिज़ न छोड़ेंगे हरगिज़ ॥

दूर कलियुग अभी से कीजेगा ।

दान दीजेगा, दान दीजेगा ॥

ठीक कर जुग है, यह नहीं कलियुग ।

दान कर दूर, कीजीये कलियुग ॥

१ उसका नाम है, जो केवल शरीर को आत्मा कर के मानता और पूजता था २ शरीर के गुलाम बने रहना ३ बैठक स्थिति ४ आनन्द ५ भय *हो जाइये, या हो बैठीये

हिंद पर ग्रैहन[6] लग गया काला।
दान देने से खोल हो वाला॥

६ ग्रहण

---

(६) दान

दान होता है तीन क़िस्मों का।
अन्न का, इल्म का, व इर्फ़ान[1] का॥
अन्न का दान एक दिन के लीये।
जिस्म बेरूं[2] को तक़वीयत[3] देवे॥
इल्म का दान, उमर भर के लीये।
जिस्म *दोयम को कर धनी[4] देवे॥
दान इर्फ़ां का तो अबद[5] दायम।
कर सरूरे[6] अज़ल में दे क़ायम॥

१ आत्म ज्ञान (ब्रह्मविद्या) २ बाह्य (स्थूल शरीर) ३ पुष्टि ४ धनवान ५ नित्य, हमेशा के लीये ६ अनादि निजानन्द *यहां मुराद सूक्ष्म शरीर से है॥

सब से बढ़ कर तो तीसरा है दान ।
दान इर्फ़ां का, ज्ञान ही का दान ॥
पंडितो ! ज्ञान दान दीजेगा ।
हिंद में आम दान दीजेगा ॥
गिर्यां कलियुग का, गर्हन है बाक़ी ।
कसर है ज्ञानदान देने की ॥
लो बला टल गयी है, वाह वाह वा ।
हिंद रौशन हुआ है, आहाहा हा ॥
जाओ कलियुग, यहां से जाओ तुम ।
भागो भारत से, फिर न आओ तुम ॥
हुक्म नातक़ है राम का तुम पर ।
बांधिये बिस्तर को, अब उठाओ तुम ॥
हिंद ही रह गया है, क्या तुम को ।
आग में, जलमें, सिर छुपाओ तुम ॥

७ रोना ८ ग्रहण ९ सख़्त हुक्म—न टूटने वाला

(७) नै

खाली बिलकुल है बांस की यह नै[1] ।
चन्द सूराखदार बेशक है ॥
बोसा[2] देता है उस को जब नाई[3] ।
निकस उस नै से सात सुर आई ॥
रागनी राग सब हुये जाहर ।
मुखतिलफ भाग सब हुये बाहर ॥
एक ही दम ने यह सितम ढाया ।
कलेजा अब बल्लीयों उछल आया[4] ॥
सब सुरों में जो मौज मारे है ।
दम वह तेरा ही कृष्ण प्यारे है ॥
दम तो फूंके था एक मुरलीधर ।
मुखतलिफ जमजमे[5] बने क्योंकर? ॥

१ बांसरी २ चुम्मा, चूमना ३ बांसरी बजानेवाला ४ कलेजा आनन्द से इसकदर अजहद लेहराने लगा कि खुशी अन्दर न समा सकी ५ राग, गीत, सुरें

मा[6]मयः बाँ[7]सराः, ख्याले अक़ल ।
सब में वा[8]सिल हुवा, करे है नक़ल ॥
मर्द, औरत, गदा में, शाहों में ।
फ़े[9]हक़हों चेहचहों में आहों में ॥
क़ु[10]तब तारे में, मि[11]हर में, मा[12]ह में ।
झौंपड़े में, महलसरा, राह में ॥
एक ही दम का यह पसारा है ।
सब में वासल है, सब से न्यारा है ॥
दा[13]रे दुन्या की इक त[14]ही ने में ।
प्राण तेरे ने राग फूंके हैं ॥
तू ही नाई है, कृष्ण प्यारा है ।
सारी दुन्या तेरा पसारा है ॥

६ सुनने की शक्ति ७ देखने की शक्ति ८ मिला हुवा ९ साधू, फ़क़ीर १० ध्रुव ११ सूरज १२ चांद १२ दुन्या का घर (धाम) १४ खाली (खोखली) बांसरी

(८) शीश मन्दर.

शीश मंदर में इक दफा बुल डाग।
आ फंसा तो हुआ बगोला आग॥
जौके दर जौक पल्टनें सगे थे।
ठट के ठट लग रहे थे कुत्तों के॥
सख्त झुंजलाया यह, वह झुंजलाये।
चार जानव से तैश में आये॥
बिगड़ा मुंह उस का, वह भी सब बिगड़े।
जब यह उछला, वह सब के सब कूदे॥
जब यह भौंका, सदाये गुम्बज़ से।
क्या ही औसां खता हूये इस के॥
"मैं मरा, मैं मरा" समझ कर वाये!।
मर गया डाग, सिर को धुन कर वाये!॥

१ एक कुत्ते का नाम है २ गरोह के गरोह ३ कुत्ते ४ झुंड ५ गुस्सा ६ गुम्बज़ की आवाज़ ७ आश्चर्यमय, घबराहट युक्त चित्त

शीश मंदर में आ के दुन्या के ।
जाहिले गैर दाने मरा भौंके ॥
वह्म में क्यों भरमता जाता है ।
अपने आपे में क्यों न आता है ॥

(२) दार्ष्टान्त

गौंड मालक मकान का आया ।
मर्दे दाना ने जल्वा फरमाया ॥
रूये ज़ेबा को हर तरफ़ पाया ।
फ़ुर्ते शादी में मीना भर आया ॥
फ़र्श अतलस नफ़ीस झालरदार ।
अतरो अंबर लतीफ़ खुशबूदार ॥
तख़्ते *ज़री पै रेशमी तकिये हैं ।
गद्दे मखमल के ज़ेब देते हैं ॥

८ द्वैत देखने वाला बेवकूफ ९ ईश्वर १० सजा हुवा मुंह
११ आनन्द की अधिकता *सुनहरी तख्त.

बैठा उससे से जीनत खाना।
गुद गुदी दिल में अपना शाना॥
जब नज़र चार में उठा देखा।
कुछ न अपने से मासवा देखा॥
अगरचि वाहिद था पर हज़ारों जां।
जलवा अफगन रूये मफा देखा॥
गाह मूछों को ताओ दे दे के।
मूरते वीर रस में आ देखा॥
करके शृंगार कंघी पट्टी का।
पान होंटों तले दबा देखा॥
तेग़ मिसरी की देखने के लीये।
प्यारी प्यारी भवें चढ़ा देखा॥
खंदा-ए-गुल की दीद की खातर।

१२ घर को रौनक देने वाला १३ कंधे १४ तरफ १५ अद्वैत १६ स्थान १७ प्रकाशमान १८ कभी १९ तल्वार २० सिला हुवा पुष्प (फूल) २१ निगाह, नज़र, दृष्टि

क्या तेः दिल^२२ से खिलखिला देखा ॥
अब्रे नैसां का लुतफ लेने को ।
तार आंसू का भी लगा देखा ॥
ग़ैर देखे हैं जैसे इस तन को ।
इस तरह इस से हो जुदा देखा ॥
अक्स^२४ इक छोड़ असल को आये ।
सब वजूदों^२५ में फिर समा देखा ॥
गोलीयां पीली काली सुर्ख और सब्ज़ ।
मुंह से अपने नकाल बाज़ीगर ॥
आप ही देखता है अपने रंग ।
आप ही हो रहा है मुतहय्यर^२६ ॥
बैठ हर तरह शीश मंदर में ।
ठाठी पट्ठे ने बन बना देखा ॥

२२ दिल भर कर २३ वर्षा ऋतु का बादल २४ प्रतिबिम्ब २५ वस्तुओं (शरीरों) में २६ आश्चर्य, हैरान्

(सुषुपति) मस्त कारण शरीर बन बैठा।

चार कूटों में लेटता देखा॥ (व्यष्टि)

(स्वप्न में) खुद जो जिस्मे ख्याल को धारा।

जुमलॅ[27] आलम ख्याल का देखा॥ (समष्टि)

(जाग्रत में) जागी सूरत क़बूल की जब खुद।

सब को फिर जागता हुवा देखा॥

तुझ से बढ़ कर हूं, तेरा अपना आप।

मुझ को अपने से क्यों जुदा देखा?॥

एक ही एक ज़ाते[28] बेहद राम[29]।

जुमला सूरत में जा बजा देखा॥

गद्दी तकिये से मैं नहीं हिलता।

हिलता किस ने सुना है या देखा॥

क्यों खुशामद की बात करते हो।

शीशे मसनॅद[30] मकान ही कब था॥

२७ कुल समस्त २८ अद्वैत तत्त्व २९ कवि का नाम और ईश्वर से भी मुराद है ३० गद्दी, तखत

यह तो सब इक ख्याली लीला थी।
मौज में अपनी आप ज़ाहर था ॥
मौज भी आप. लीला वीलों आप।
लाल नुत्क़को जुबां, यां पर था ॥
नुत्क़ में और शब्द में मौजूद।
एक वाहद सफोट रौशन था ॥

३१ खेल इत्यादि ३२ अक़ल, समझ, हैरान था

---

(१०) कोहे नूर का खोना

ज़ेरे नादर हुवा महम्मद शाह।
देहली उजड़ी .जलील अबतेरे आह ॥
गरचि नादर ने खूब ही ढूंडा।
न मिला कोहे नूर का हीरा ॥
कह दीया इक हरीस लौंडी ने।

१ हीरे का नाम २ नादर बादशाह के नीचे तले ३ बहुत बुरा ४ लालची

है छुपाया कहां मुहम्मद ने ॥
"उस को पगड़ी में सी के रखता था।
जुदा उस को कभी न करता था" ॥
फिर तो बेहद तपाक से आकर।
बोला नर्मी से, प्यार से नादर ॥
"ऐ शाहे मिहर्बान महम्मद शाह!।
यार भाई है तेरा नादर शाह ॥
पगड़ियां आज तो बदल लेंगे।
दिल महब्बत से खूब भर लेंगे ॥
रस्मे उल्फत अदा करो हम से।
यह महब्बत वफा करो हमसे" ॥
छुट गयीं गो हवाइयां मुंह पर।
जाहिर खंदा: से बोला "हां हां" कर ॥
"शौक़ से पगड़ी बदलियेगा शाह"!।
मारा बेबस रंगीला देहली शाह ॥

७. प्रेम की रस्म ऊपर से हंस कर

थी मुहम्मद को .जाहरी .इज़्जत ।
यह तबद्दील था असल में ज़िल्लतं ॥
क़ीमते ममल्क़ित से बढ़ कर था ।
हीरा पगड़ी में उस को खो बैठा ॥
ऐ .अज़ीज़ों! यह .इज़्ज़तो दौलत ।
नफ़स नादर है, बर सरे उलफ़त ॥
दामे तज़्वीर में न आजाना ।
जाँ! न भरें में फंस फंसाजाना ॥
खिलअ़ते फ़ाखिरह से हो खुर्सन्द ।
खो के हीरा बने हो दौलतमंद ॥
चैन पड़ने को है नहीं हरगिज़ ।
अमन हीरे बिना नहीं हरगिज़ ॥

६ बदलना ७ खुवारी ८ कुल राज्य की क़ीमत ९ दग़ा फरेब का जाल १० फ़ख़र करने वाला लबास, पुशाक का .इनाम ११ खुश

ज़ाती जौहर से .ज़ाती .इज़्ज़त है।
बाक़ी मा-[१३]ओ-मनी की .इ[१४]ल्लत है॥
जब तू फ़खरे खताब लेता है।
आत्मा को .अताब देता है॥
तू क़ीमे ज[१६]हां है, दाता है।
छोटा अपने को क्यों मनाता है॥
सब को रौनक़ है तेरे ज[१७]ल्वे से।
तुझ को .इज़्ज़त भला मिले किस से॥
सनद सर्टीफ़िकिट डिगरी की।
आर्जू में है क़ैदे ग़म तन की॥
तू तो म[१८]स्जूद है .ज़माने का।
क़ैद मत हो किसी बहाने का॥

१२ असली रत्न १३ अहंकार और धन इत्यादि १४ सबब, कारण १५ खफगी, गुस्सा, क्रोध १६ जहां का सखी (बखशने वाला) १७ प्रकाश १८ पूजने योग्य, पूजनीय

(११) खताब नपोलीयन को

वाह रे नपोलीयन! नडर शह मर्द।
टिड्डी दल फौज तेरे आगे गर्द॥
"हाल्ट!" कह कर स्पाहे दुशमन को।
लर्जां कर दे अकेला लशकर को॥
जां बाजी में शेर मर्दी में।
खुश खुशां दशते ग़मनवर्दी में॥
*रोब मे और ग़ज़ब की सौलत से।
न बराबर था हिन्द औरत के॥
राजपूतों की औतों का दिल।
न हिले, गरचि कोह जाये हिल॥
उन की जानब से शेर को चैलंज।
लेक शोहरत के नाम से है रंज॥

१ नपोलीयन बादशाह का नाम है उस के नाम यह खनवा
२ खड़े हो जाओ ३ कम्पा देना ४ ग़म दूर करने के जंगलमें
५ दबदबा, डर ६ पर्वत ७ बुलावा मुकाबल करने वास्ते * गुस्सा

पुशते कुश्तों के कर दीये हर सूं ।
खूं के जूएं भर दीये हर सू ॥
मुल्क पर मुल्क तू ने मारलीया ।
पर कहो, उस से क्या संवार लीया? ॥
देनी चाहता था राज को वुसअत ।
पर मिली हिर्सो आज़ को वुसअत ॥
दिल तो वैसा ही रह गया पियासा ।
जैसा जंगो जदल से पैहले था ॥

८ मरे हुवों के ढेर ९ हरतरफ १० नदियें, नैहरें ११ विस्तार विशालता १२ लालच, तमा १३ लड़ाई

---

(१२) सीज़र

ऐ शहनशाहे जूलयस सीज़र! ।
सारी दुन्या का तू बना अफसर ॥
इतना क़िस्से को तूल क्यों खैंचा ।

१ रूम के बादशाह का नाम

दिल ज़मीं में फ़ज़ूल क्यों खैंचा ॥
मैल दिल में रहा तअज्जब खेज़ ।
खदशा: पैहलू में, मौजे दर्द अंगेज़ ॥
आ! तेरी मंज़िलत को बढ़ायें ।
हिन्दु-ए-कैवान से भी परे जायें ॥
क्यों न इतना भी तुम को सूझ पड़ा ।
जिस में शै[7] आये वह है शै से बड़ा ॥
जुज़व कुल से हमेशा छोटा है ।
छोटा कमरे से बक्स-व-लोटा है ॥
जबकि तुझ में जहान आता है ।
आंख में बैहरो बर समाता है ॥
कोहो दरया-ओ-शैहरो स्वहरा बाग़ ।
बादशाहो गदा-ओ-बुलबुलो ज़ाग़ ॥

२ अश्चर्य बढ़ाने वाला ३ डर ४ दर्द देने वाली लैहर ५ मरतबा ६ शनी तारे के सिरे से भी दूर ७ वस्तु ८ टुकड़ा (हिस्सा) ९ पृथ्वि और समुद्र १० जंगल ११ कौवा

इल्म में और शऊर[12] में तेरे।
ज़र्रे से चमकते हैं बहुतेरे ॥
खुद को महदूद[13] क्यों बनाते हो।
मंज़ल अपनी पड़े घटाते हो ? ॥
तुझ में छोटे बड़े समाये हैं।
तू बड़ा है, यह जिस में आये हैं ॥
मुल्के सर्सब्ज़ और ज़मीन् शादाब[14]।
हैं शुआँ[15] में तेरी सुराब[16] ओ-आब ॥
शम्स मर्कज़[17] नज़ामें शम्सी[18] का।
है नहीं, तू है आश्रा सब का ॥
नूर तेरे ही से ज़ियाँ[19] लेकर।
मिहर[20] आता है, रोज़ चढ़ बढ़ कर ॥
अपनी किर्णों के आब में खुद ही।

१२ समझ, ज्ञान १३ परिछिन्न १४ खुश, आनन्ददायक पृथिव १५ किरण १६ मृग तृष्णा का जल १७ केन्द्र १८ आकाश के तारे आदि का इन्तज़ाम १९ प्रकाश २० सूरज

इव मत मर, खुराव में खुद ही ॥
जान अपने को गर लीया होता ।
क़ब्ज़ा आलम पै झट कीया होता ॥
सल्तनत में मैती चरिन्द व परिन्द ।
राजे माहराजे होते ज़ाहिदं-व-रिंद ॥
ज़ात में हैल दिल क्या होता ।
हल्ल .उक़दाः को यूं कीया होता ॥
हाथ में खड़ग हो कि खंडा हो ।
क़लम हो या बलन्द झंडा हो ॥
जुदा अपने को इन से जानते हैं ।
इन के टूटे रंज न मानते हैं ॥
आप को शूर वीर इस तन से ।
जुदा माने हैं जैसे आहने से ॥
गर बला से यह जिस्म छूट गया ।

२१ सेवक, ताबियादार २२ परहेज़गार (कर्म कांडी) २३ मैंदक़ ग़र्क़ाब, लीन गुह्य भेद २४ लोहा

क्या हुआ गर क़लम यह टूट गया ॥

तू है आज़ाद, है सदा आज़ाद।
रंजो ग़म कैसा? असल को कर याद ॥

ऐ ज़मां! क्या यह तुम में ताक़त है।
ऐ मकां! तुझ ही में लयाक़त है? ॥

कर सको क़ैद मुझ को. मुझ को क़ैद,।
फ़लक से तुम हो कलअदम नापैद ॥

फ़िक़र के पाप के उड़ें धूयें।
गर कभी हम से आन कर उलझें ॥

पुर्ज़े पुर्ज़े अलग हुये डर के।
धज्जीयां जेहल की उड़ीं डर से ॥

२५ काल २६ देश २७ नाश २८ झूठा २९ अज्ञान

---

(१३) शाहे ज़मान को वरदान.

कैसरे हिन्द! बादशाह दावरं।

१ ज़माने के बादशाहों को वर्दान २ मुनसफ हाकम

जागता है सदा शाहे खावर ॥
राज पर तेरे मग़रबो मशरक़ ।
चमकता है सदा शाहे मशरक ॥
शाहे मशरक़ की ब्रह्म विद्या है ।
रानी विद्याओं की यह विद्या है ॥
जाह ज़ाती रहे क़रीब तुम्हें ।
शाह इल्मों का हो नसीब तुम्हें ॥
नूर का कोह दमाग़ में दमके ।
हिंद का नूर ताज पर चमके ॥
तेरे फ़िक्रो ख़ियाल के पीछे ।
शीरीं चशमा अ़जीब वैहता है ॥
यह ही चशमा था व्यास के अन्दर ।
ईसा अहमद इसी में रहता है ॥
इस ही चशमे सें वेद निकले हैं ।

३ पूरब का बादशाह अर्थात सूरज ४ सूरज ५ स्वस्वरूपकी विभूति ६ प्रकाश ७ मीठा ८ पर्वत यहां कोहनूर है (ज्ञान के हीरे से मुराद है)

इस ही चश्मे मे कृष्ण कहता है ॥
चलिये आबे हयात[8] वां पीजे।
दुःख काहे को यार सहता है ? ॥
पिछले ऋषीयों ने इसी चश्मे से।
घड़े भर भर के आब[9] के रक्खे ॥
दुन्या पल्टे, ज़माना बदलेगा।
पर यह चश्मा सदा हरा होगा ॥
मिहर[10] डूबेगा, कुतुब टूटेगा।
पर यह चश्मा सदा हरा होगा ॥
रस्मो मिल्लत[11] तो होंगे मलिया मेट।
पर यह चश्मा सदा हरा होगा ॥
ऐसे चश्मे से भागते फिरना।
खारी पानी को ताकते फिरना ॥
तिश्ना[12] रखेगा बेहरे खातरे आब।

८ अमृत ९ पानी, यहां अमृत से मुराद है १० ध्रुव तारा ११ रस्म रिवाज १२ प्यासा

जा बजा आग तापते फिरना ॥
राम को मानना नहीं काफी ।
जानना उस का है फ़क़त शाफ़ी[13] ॥
(बर्कले कैण्ट मिल हैमिल्टन[14]) ।
जुस्तजू[15] में तिरी हैं सरगर्दान[16] ॥
बाईबल, वेद, शास्त्र, क़ुरान ।
भाट तेरे हैं, ऐ शाहे रहमान[17] ! ॥
अपनी अपनी लियाक़त ले कर ।
तर ज़बान[18] गा रहे हैं तेरी शान ॥
मद्दाह[19] क्यों शायरों को दो इलज़ाम ।
वक़्ते दरबारे खासो जलसा-ए-आम ॥

१३ आराम देने वाला, शफ़ा देने वाला १४ यह तमाम यूरप के फ़लासफ़रों के नाम हैं १५ तलाश १६ भटकते फिरते १७ कृपालु महाराजा १८ मीठी बोली से १९ तारीफ़ करने वाले

(१४) आनन्द अन्दर है.

संग ने हड्डी कहीं से इक पाई।
शेरे नर देख फिकर यह आई॥
कि कहीं मुझ से शेर छीन न ले,
हड्डी इक डग से शेर छीन न ले॥
लेके मुंह में उसे छुपा कर वह।
भागा खाँई को दुम दबा कर वह॥
अज़ीम चुभती थी मुंह में जब रग को।
ख़ूं लगता लज़ीज़ था सग को॥
मज़ा अपने लहू का आता था।
पर वह समझा मज़ा है हड्डी का॥
शेरे नर, बादशाहे तन्हा रौ।
हड्डी मुर्दे हों हर तरफ सौ सौ॥
वह तो न आंख भरके तकता है।

१ कुत्ता २ खंदक ३ हड्डी ४ अकेला चलने वाला राजा

मेरे नादान का दिल धड़कता है ॥
स्वर्ग की नेमतें हों दुन्या की ।
हैं तो यह हड्डियां ही मुर्दों की ॥
इन में लज़्ज़त जो तुम को आती है ।
दर असल एक आत्मा की है ॥
ऐ शहनशाहे मुल्क! ऐ इन्दर! ।
छीनता वह नहीं यह ज़रो गौहर ॥
राज दुन्या का और स्वर्गो बहिश्त ।
बागो गुल्ज़ारो संगे मरमरे ख़िश्त ॥
नेमतें यह तुम्हें मुबारक हों ।
और राम, यह तुम्हें मुबारक हों ॥
देखना यह तुम्हारे मक़्बूज़ात ।
कब्ज़ा करते हैं क्या तुम्हारी ज़ात ॥
जाने मन! नूरे ज्ञान ही का नाथ ।

१ सोना (ज़र) और मोती २ मरमर की ईंटें ३ राम का [illegible] ४ मालिक

फ़ौज रखता नहीं है सूरज साथ ॥
जो गनी ज़ात में हैं हीरो [१०]वीर ।
जल्वागर दर वजूदे तर ना पीर ॥
सब दहानों[११] से वह ही खाता है ।
स्वाद खाने भी बन के आता है ॥
"यह हूं मैं", "यह हो तुम", यह अ़सनीयत[१२] ।
मोजिज़ा[१३] है तिरा, न असलीयत ॥
सुवरो अशकाल[१४] सब करामत है ।
मेरी क़ुद्रत की यह अ़लामत है ॥

९ अमीर १० बहादुर योधा ११ मूंहों १२ द्वैत १३ करामात १४ शकलें, सूरतें

---

(१८) सकन्दर को अवधूत के दर्शन.

क्या सकन्दर ने भी कमाल कीया ।
ग़ुलग़ुला शोरो[१] शर का डाल दीया ॥

१ शोर इत्यादि

बर लबे आब सिन्ध जब आया।
डट गया फौज लेके। झिल्लाया॥
उन दिनों एक सालको मालक[3]।
से मुलाक़ी[4] हूवा, रहा हक़ दक़॥
क्या .अजब था फक़ीर आलमगीर।
क़ल्ब[5] साफी मिसालि[6] गङ्गा नीर॥
उस की सूरत जमाले[7] सुर्यानी।
गुफ़्तगू में जलाल[8] .उर्यानी॥
उस स्वामी ने कुछ न गिरदाना[9]।
ज़ोरो[10] ज़ारी-ओ-ज़र से फुसलाना॥
शीशा आयीनाः[11] गर को दखलाया।
दंग जूं आयीनाः वह हो आया॥

२ दरया सिन्ध के किनारे ३ ईश्वर भक्त, आज़ाद्फक़ीर, मस्त पुरुष ४ मिला ५ शुद्ध अन्तःकरण ६ मानन्द गंगा जल के ७ अत्यन्त सुन्दरता ८ जलाल ज़ाहर प्रकाशमान ९ समझा १० ज़बरदस्ती और रोना और धन का लालच ११ सकन्दर का खताब है

रह के शशदर वह बादशाहे जहां।
बोला साधू से सूरते हैरान॥
हिंद में *क़दर न परखते हैं।
हीरे को लीथड़ों में रखते हैं॥
चलियेगा साथ मेरे यूनान को।
क़दम रंजा करो मेरे हां को॥

१२ देश का नाम * तशरीफ ले चलिये

---

(१६) अवधूत का जवाब.

क्या ही मीठी .जुबान से बोला।
रास्ती पर कलाम को तोला॥
कोई मुझ से नहीं है खाला *जाः।
पूर पूरण, ज़रा नहीं हिलता॥
जाऊं आऊं कहां किधर को मैं?।
हर मकां मुझ में, हर मकां में मैं॥

१ सचाई २ देश * जगह, स्थान

यह जो लाहूत से निदा आई।
यवन बेचारे को नहीं भाई॥
फिर लगा सिर झुका के यूं कहने।
इस के समझा नहीं हूं मैं मैंने॥
"मुश्को काफ़ूर, अतरो अम्बर बू।
अस्पो गुलज़ार, नाज़नीं ख़ुशरू॥
सीमो ज़र, खिलअतो मसा-ओ-सरोद।
सैरे हर नौ के, आबशारो रूद॥
यह मैं सब दूंगा आप को दौलत।
हर तरह होगी आप की ख़िदमत॥
चलियेगा साथ मेरे यूनान को।
चल मुबारक करो मेरे हां को"

३ ब्रह्म धाम, सत स्वरूप ४ आवाज़ ५ सकन्दर से मुराद है ६ घोड़े और बाग़ ७ सुन्दर स्त्री, प्रिया ८ चांदी सोना ९ उत्तम लबास १० राग रंग ११ क़िस्म १२ बहती हुई नदी

मस्ते मौला से तब यह नूर झड़ा।
आस्मान् से सतारह टूट पड़ा॥
"झूठ झूठों ही को मुबारक हो।
जेहल नीचे दबे जो तारक हो॥
मैं तो गुलशन हूं, आप खुद गुलरेज़।
खुद ही काफूर, खुद ही अम्बर रेज़॥
सोने चांदी की आबो ताब हूं मैं।
गुल की बू मस्ती-ए-शराब हूं मैं॥
राग की मीठी मीठी सुर मैं हूं।
दमक हीरे की, आबे दुर मैं हूं॥
खुश मज़ा सब तुआम हैं मुझ में।
अस्प की खुश खिराम हैं मुझ से॥

१३ मस्त फकीर फिर यूं बोला १४ अज्ञान, अविद्या १५ अन्धकार अथवा अन्धा १६ फुल झड़ी, पुष्पों के गिराने वाला १७ अंबर झाड़ने वाला अर्थात खुशबू वाला १८ मोती की चमक १९ खुराक, भोजन २० उत्तम चाल

रक़्स[21] है आबशार[22] का मेरा ।
नाज़ो ईश्वा[23] है यार का मेरा ॥
ज़र्क़ बर्क़ सुनेहरी ताज तेरा ।
मेरा मोहताज है, मोहताज मेरा ॥
चान्दनी मुस्तार[24] है मुझ से ।
सोना सूरज उधार ले मुझ से ॥
कोई भी शै[25] जो तेरे मन भाई ।
मैं ने बख़्शत[26] अता है फ़रमाई ॥
दे दीया जब फिर उस का लेना क्या ।
शाहे शाहां को यह नहीं ज़ेबाँ[27] ॥
करके बख़्शश मैं वाँज़[28] क्यों लूंगा ।
फैंक कर थूक चाट क्यों लूंगा ॥
प्रकृति को तो [*]ईद मुझ से है ।

२१ नृत्य २२ पानी का झरना २३ नाज़ नखरे २४ माँगी हुई २५ वस्तु २६ बख़्शी २७ फबना, लायक़ २८ फिर वापस
*आनन्द मंगल

मांगू अब मैं, बईदे[29] मुझ से है ॥
खुद खुदा हूं, सरूरे[30] पाक हूं मैं ।
खुद खुदा हूं, गुरूरे[31] पाक हूं मैं ॥"
ऐसा वैसा जवाब यह सुन कर ।
भड़क उठा ग़ज़ब से असकन्दर ॥
चेहरा ग़ुस्से से तम तमा आया ।
ख़ूने रग जोश मारता आया ॥
खैंच तलवार तान ली झट पट ।
"जान्ता है मुझे तू ऐ नट खट !" ॥
(शाहे[32] जी जाहे मुल्के दारा जम ।)
मैं हूं शाहासकन्दरे आज़म[33] ॥
मुझ से गुस्ताखी गुफतगू करना ।
भूल बैठा है क्यों अभि मरना ॥

२९ दूर (नावाजव) ३० शुद्ध आनन्द ३१ शुद्ध अहंकार ३२ जमशेद और दारा बादशाह के मुलकोंका बड़े भारी मरतवा वाला बादशाह ३३ सबसे बड़ा

काट डालूंगा सिर तेरा तन से।
जरब समशेर से अभी दम से
देख कर हाल यह सकन्दर का।
साहदू आज़ाद खिलखला के हंसा॥
" किज़्ब[34] ऐसा तू ऐ शहनशाह! ।
उमर भर में कभी न बोला था॥
मुझ को काटे! कहां है वह तल्वार?।
दाग़ दे मुझ को! है कहां वह नार[35]॥
हां गलायेगा मुझे! कहां पानी?
बाद[36] सुखा ही ले। मरे नानी॥
मौत को मौत आ न जायेगी।
क़स्द[37] मेरा जो करके आयेगी॥
बैठ बालू में बच्चे गंगा तीर।
घर बनाते हैं शाद या दिलगीर॥

३४ झूठ ३५ अग्नि ३६ वायू ३७ इरादा

फर्ज़ करते हैं रेत में खुद घर।
यह रहा गुम्बज़-व-इधर है दर्र[38] ॥
खुद तसव्वुर[39] को फिर मटाते हैं।
*खाना: आपना वह आप ढाते हैं ॥
वैहम का घर बना था वैहम मिटा।
वालू था बाँद में जो पैहिले[40] था ॥
रेग सुधरा था, नै खराब हुवा।
फर्ज़ पैदा हुआ था खुद विगड़ा ॥
रास्त तू उस ज़वान से सुनता है।
पर पड़ा आप जाल बुनता है ॥
तू जो समझा यह जिस्म मेरा है।
फर्ज़ तेरा है, फर्ज़ तेरा है ॥
सिर यह तन से अगर उड़ादेगा।
फ़र्ज़ अपने ही को गिरादेगा ॥

३८ दरवाज़ा ३९ कल्पित ४० पीछे * घर

रेत का कुछ न तो बुरा होगा।
खाँना[41]: तेरा खराब ही होगा॥
मेरी वुसअत[42] को कौन पाता है।
मुझ में अर्ज़ों समा[43] समाता है॥
ताज जूते के दरम्यान् वाक़्या।
मैं नहीं हूं, न तू है जां! वाक़्या॥
इतना थोड़ा नहीं हद्द अर्ज़ाः।
पगड़ी जोड़ा नहीं हद्दे[44] अर्ज़ाः॥
अपनी हत्तक यह क्यों करी तुमने।
बात मानी मेरी बुरी तू ने॥
क्यों तुनक[45] कर दीया है आत्म को।
एक जौहर बनाया कुलज़म[46] को॥
खुद तो मग़लूब[47] तुम ग़ज़ब के हो।

४१ घर ४२ विशालता (फैलाओ) सीमा ४३ पृथ्वि आकाश ४४ सीमा ४५ छोटा, नाचीज़ ४६ समुद्र ४७ वशमें आये हुये, क़ाबू हुवे २

शाहे जज़्बात से भी अड़ने हो ॥
.गुस्सा मेरा .गुलाम तुम उस के।
बन्दाः-ए-बन्दगां रहो बचके ॥"
गिर पड़ी शाह के हाथ से शमशेर।
निगाः आरफ़ से हो गया वह ज़ेर ॥
क्या .अजब! यह तो जेर आँखेंताः तेग़।
गर्जता था मसाले बारां मेघ ॥
शाह के गैज़ो ग़ज़ब को जूं मादर।
नाज़ तिफ़्लक का जानता था गर ॥
और वह शाह सकन्दरे रूमी।
बात छोटी से होगया ज़खमी ॥
पास उस वक़्त अपनी .इज्ज़त का।
हर दो जानब को एक जैसा था ॥

४८ काम क्रोधादि पर हुक्म करने वाला बादशाह ४९ नौकरों के नौकर ५० नीचे, शर्मिन्दाः ५१ खैंची हुइ तल्वार ५२ .गुस्से, क्रोधको ५३ बच्चे का खेल, नखरा

लेकँ[54] शाह को थी जिस्म में आँनर[55] ।
शाहे शाँह[56] का था आत्मा में घर ॥
किल्ला मज़बूत उस का ऐसा था ।
ऊंचे सूरज से भी परे ही था ॥
कर सके कुच्छ न तीर की बुछार ।
खाली जाये बन्दूक़ की भर मार ॥
इस जगह ग़ैर[57] आ नहीं सकता ।
यहां से कोई भी जा नहीं सकता ॥
इस बलन्दी से सर्फराज़ी से ।
किल्ला-ए-मज़बूत शेरे ग़ाज़ी से ॥
यह ज़मीन और इस के सब शाहान ।
तारा: सां, ज़र्रह[58] सां, कि नुक़ता: सां ॥
नुक़ता मौहूम[59] बन, हूये नाबूद ।
एक वहदत[60] हूं, हस्तो बाशदो बूद[61] ॥

५४ परन्तु, लेकिन ५५ इज़्ज़त ५६ यहां मुराद है फ़क़ीर से ५७ अन्य, दूसरा ५८ प्रमाणु ५९ कल्पित ६० एक ६१ है, होगा, था, वर्त्तमान, भविष्यत्, भूत

रुद्द गये जूं सपाहे [62]तारीकी।
ताब किस को है एक झांकी की? ॥
रूये आ[63]लम पै जम गया सिक्का।
शाहे शाहां हूं, शाहे शाहां शाह॥
एहले हैयत[64] ने भी पढ़ा होगा।
नुक़ता क्या खूब यह रियाज़ी का॥
जबकि लॉ[65]ज़ुंब एक सतारे का।
वैह्म में हो हसाब या लेखा॥
सिफ़र सां यह ज़मीने पेचां[66] पेच।
हेच[67] गिन्ते हैं, हेच मुतलक़ हेच॥
अब कहो ज़ाते वैहत के होते।
क्यों ना अजसाम जान को रोते?

६२ अन्धकार की फौज ६३ तमाम पृथ्वि ६४ नजूम, ज्योतिश के जानने वाले ६५ अचल ६६ पेचदार पृथ्वि ६७ कुछ नहीं ६८ स्वरूप के खालस अर्थात शुद्धि स्वरूप

---

(१७) जिस्म से बेत़ऽल्लुकी

(देहाध्यासरहित)

बादशाह इक कहीं को जाता था।
उस तर्फ़ से फ़क़ीर आता था॥
बादशाह को घुमंड ताज का था।
मस्त को अपनी ज़ात का था॥
मस्त चलता था चाल मस्ती की।
राह न छोड़ा सलाम तक न की॥
बादशाह तुर्श हो के यूं बोला।
"सख़्त मग़रूर शोख़ गुस्ताख़ा!॥
बादशाह हूं, तुझे सज़ा दूंगा।
जिस्म तेरा अभि जला दूंगा"॥
तिस पै मौला कबीर आलीजाह।
शाहे शाहान् फ़क़ीर लापरवाह॥

१ कड़वा होकर २ महान् ३ बड़े रुतबे वाला

जिस का मुब्दा-ओ-मुन्तहा आत्म था।
महवरे गुर्फ़तग़ भी आत्म था॥
जिस्म पेवन्द से कुछ न करता था।
आत्मा ही था, नूर झरता था॥
पास धक धक जले थी इक भट्टी।
टांग उस में फ़क़ीरने धर दी॥
तब मुख़ातब हो शाह से बोला।
नक़्शे तस्वीर! शेरे क़िर्तासा!
मैं हूं क़िर्तास। उस पे तू तस्वीर।
ज़ाते असली हूं। फ़र्ज़ है तस्वीर॥
नक़्श दावा करे तकब्बर है।
क़िबराई मेरी तो अज़ेहर है॥
जिस्म के इतबार ही से सही।

४ शुरु और धुरां (आदि औ अन्त) ५ धुरां अर्थात वाणि का आधार ६ शरीर के लिहाज़ से ७ ऐ कागज़ के शेर! ८ कागज़ ९ अहंकार १० बड़ाई ११ ज़ाहर, विद्यमान

मैं हूं आज़ाद उस तरह से भी ॥

क़तल करने का क़द्र है तेरा।

झिड़कना इख़तियार है मेरा ॥

क़तलो धमकी का गर्म है बाज़ार।

सौदा मेरा है, मैं हूं ख़ुदमुख़तार ॥

जान लेना नहीं तेरे बस में।

तेरी तंम्बीह[12] है मेरे बस में ॥

तू जलायेगा दर्द क्या होगा?।

देख ले, पैर जल गया सारा ॥

इस से बढ़ कर तू सज़ा क्या देगा।

मेरा इक बाल भी न हो बींका ॥

आग में डाल दे, तू इस[13] तन को।

ख़्वाह शोलों में डाल उस[14] तन को ॥

दोनों हालत में मुझ को यक्सान् है।

१२ सज़ा देना, कैद करना १३ फ़क़ीर के शरीर से मुराद है १४ बादशाह के शरीर से मुराद है

कुछ न बिगड़ा न बिगड़ सकता है ॥
तुम से बढ़ कर तुम्हारा अपना आप।
मैं ही तुम हूं, न तुम हो अपना आप ॥
आग मेरा ही एक तजेल्ला है ;
रोबे[16] तेरा भी ज़ोर मेरा है ॥
मुझ में सब जिस्म बुलबुले से हैं।
एक टूटेगा और क़ाइम[17] हैं ॥
साधू जब कर रहा था यह तक़रीर।
शाह का दिल होगया वहीं नख़्चीर[18] ॥
दस्त बस्ता[19] खड़ा हुवा आगे।
सार्यां! आरिफ[20] हैं आप अल्लाः के ॥
तर्क दुन्या की, आख़िरत[21] की तर्क।
तर्क मौला को, तर्क की भी तर्क ॥

१५ रौशनी, प्रकाश १६ डर १७ स्थिर १८ शिकार गाह
१९ हाथ जोड कर २० आत्मवित २१ परलोक

दर्जा अव्वल के आप त्यागी हैं।
औरे दर्शन के हम भी भागी हैं॥

२२ एक दफ़ा

---

(१८) फ़क़ीर का कलाम.

क़दम बोसी को शाह झुका ही था।
कल्मा बेसाख़ता[1] यह तब निकला॥
ऐ शहनशाह! तुम मुबारक हो।
तुम ही सब से बड़े तो तारक[2] हो॥
अपनी कीजीयेगा क़दम बोसी खुद।
तुम ही त्यागी हो, तुम ही जोगी खुद॥
कुछ नहीं इस फ़क़ीर ने त्यागा।
ज़ात के राज पाठ में जागा॥
ख़ाक[3] ऊपर से जब हटा बैठा।

१ फ़ौरन, लावड़क २ त्यागी ३ यहां जिस्म (शरीर) से मुराद है.

मअ़दने बे[4]बहा को पा बैठा ॥

कूड़ा करकट उठा दीया इस ने ।

महल सुथरा बना लीया इस ने ॥

जहल[5] को त्याग आप हो बैठा ।

ज्ञान तेरी तरह न खो बैठा ॥

लैक[6] तुम ने स्वराज्य छोड़ा है ।

कूड़ा रक्खा है, महल छोड़ा है ॥

राख को तुम अज़ीज़ रखते हो ।

असल मअ़दन[7] को तुम न तकते हो ॥

खाक सारे लपेट ली तुम ने ।

क्या रमाई भभुत है तुम ने ॥

जुड़ गये हो अविद्या से आप ।

जोगी कैसे जुड़े बला के आप ॥

तुम ही जोगी हो, मैं न जोगी हूं ॥

४ अनन्त क़ीमत की कान (खज़ाना) (आत्मस्वरूप)
५ अज्ञान, अविद्या ६ लेकिन, किन्तु ७ खान, चश्मा: खज़ाना

ज़ाते तन्हा हूं, मैं वियोगी हूं ॥
सुन के शाह, यह फ़क़ीर की तक़रीर।
सकता ग़श कर गया बना तस्वीर ॥

८ अद्वैत सत्ता ९ अलग, जुदा रहने वाला १० बेहोश आश्चर्यमय

---

(१९) गार्गी.

जनक राजा की हुक्मरानी में।
उन वैदेहों की राजधानी में ॥
नंगी फिरती थी गार्गी लड़की।
नूर चितवन में था जलाल भरी ॥
चिहरे से रोब दाब बरसे था।
हुसन को माहताब तरसे था ॥
ज्ञान की असल ज़ात की खूबी।

१ जीवनमुक्त २ चांद

उस के हर रोम से चमकती थी ॥
तक सके आंख भर के उस रु को।
मारे दहशत से ताबँ थी किस को?
पाकबाज़ी का वह मुजस्सम नूर।
*शप्पर चशम को भगाना दूर ॥
एक दफा मार्फत की पुतली पर।
करती शक थी नगाहे ऐबँ निगर॥
दफातन गार्गी यह भांप गयी।
जान कालब में सब की कांप गयी॥
ऐब बीनों का कुफर तोड़ दीया।
रूएं अजसाम बीन को मोड़ दीया॥
ज्ञान से पुर दहानँ यूं खोला।

३ मुख ४ ताकत ५ पवित्रता ६ पूरा पूरा अर्थात प्रकाश का शरीर ७ बुराई देखने वाले की दृष्टि, चमगिदड़ दृष्टि ८ ताढ़ गयी, समझ गयी ९ पृथ्वि के पदार्थ (शरीर) देखने वाले १० मुंह * चमगिदड़, प्रकाश में न देखनेवाला

नाफ़ा तातार था, कि अग्नि था ॥
मैं वह खंजर हूं, तेज़ दम ज़ालम ! ।
कोहा माले है मिह्रो माह अंजुम ॥
तीन जामो में, या मियानों में ।
छिप के बैठी हूं तीन खानों में ॥
दूर गर पर्दा ह्या करदूं ।
फ़ित्ना मेहशर अभी बपा करदूं ॥
शमश कब ताब झलक की लाये ।
चकाचूंदी सी आंख में आये ॥
देख मुझ को फ़लक के सब अजराम ।
मिस्ल शबनम उड़ें, करें आराम ॥
*कोहर ऐसे यह दुन्या उड़ जाये ।
देखने को मुझे सज़ा पाये ॥

११ सूरज चान्द १२ तारे १३ पर्दों (कपड़ों) में १४ कोश ढकने १५ क़ियामत (प्रलय) का समय अभि पैदा कर दूं १६ सूरज १७ आकाश के तारे इत्यादि १८ मानन्द तरह * शबनम

काश! देखो मुझे, मुझे देखो।
हर मेरे मू से चशमे हैरत हो॥
मैं अहना थी तुम ने समझा क्यों?।
खाक इस समझ पर, यह समझा क्यों?॥
जिस्म मैं हूं, यह कैसे मान लीया?।
हाय! कपड़ों को जान ठान लीया॥
खप गया जिस के दिल में हुसन मेरा।
ढंग सेंकते का एक आलम था॥
जान जब होचुकी हो नोछावर।
बोलो, वह फिर कहां रहा नाज़र?॥
नाज़रो नज़र आप खुद मंज़ूर।
वसल कैसे कहां हुवा महजूर॥
टूटे पड़ता है, हाय हुसन मिरा।

१९ ईश्वर चाहे २० बाल के सिरे से २१ हैरानी की निगाह २२ अर्थ २३ अवस्था २४ दृष्टा और दृष्टि २५ दृश्य २६ जुदा किया हुवा

पर न गाहक कोई मिला उस का॥

खुद ही माशूक़ आप आशक़ हूं।

नें[27] ग़लत! मैं तो इश्के सादिक़ हूं॥

तारे कब नूर से निखरे हैं।

तुम हमारे हो हम तुम्हारे हैं॥

ए अदू! ऐंठ ले, बिगड़ तन ले।

मगन कह दे, कि सुस्त ही कहले॥

जोशे ग़ुस्सा निकाल ले दिल से।

ताक़ते तैश[31] आज़मा तू ले॥

मुझे भी इन तेरी बातों मे रोक थाम नहीं।

जिगर में थाम न कर लूं तो राम नाम नहीं॥

२७ नहीं (यह ग़लत है) २८ सच्चा असली इश्क़ अथवा प्रेम मैं हूं २९ जुदा ३० दुश्मन ३१ ग़ुस्से का बल

२० गार्गी से दो दो बातें.

राम भी एक बात जड़ता है।
खंजर तेज़ दम से लड़ता है
हुसन की बेहर[1] ग़ैरते खूबी[2]!।
इक नज़र हो ज़री इधर तो भी॥
माना दीदों[3] में है तेरे लाली।
जोत आंखों में है कपल[4] वाली॥
भसम करती है तू हज़ारों को।
कौन रोके भला अंगारों को॥
लैकं[5] मैं एक हूं हज़ार नहीं।
राम पर तिरा इखत्यार नहीं॥
झांक आईने[6] में दिल के देख ले।
तू ज़रा गर्दन झुका कर पेक्ष ले॥

१ समुद्र २ दूसरे को लजा देने वाली सुंदरता ३ चक्षू ४ कपल मुनी का नाम ५ किन्तु ६ शीशा

क़ल्ब[7] किस से तेरा मुनव्वर[8] है।
जल्वागर[9] कौन उस के अन्दर है॥
चीं जबीं हो के क़त्ल कर भृकुटि।
तिर्छे चितवन नज़र कीये टेढ़ी॥
क्यों ग़ज़ब तीर पास रखता है।
राम भृकुटि में वास रखता है॥
छोड़ दो घूर कर दिखानी आंख।
राम बैठा है तेरी दाहनी आंख॥
तल्ख़[10] कामी से किस को दी दुशनाम?।
शाहे रग[11] और कंठ में है राम॥
चल करो गर दमाग़ में तकरार।
राम बैठा है तेरे दसवें द्वार॥
हर तरह राम से [12]गुरेज़ नहीं।

७ अन्तःकरण ८ प्रकाशित ९ प्रकाश देने वाला, चमकाने वाला १० गुस्से होकर बुरी खराब बोली बोलना ११ गले के अन्दर बड़ी रग (नाड़ी) १२ भागना

जुदा आहन[13] से तेग[14] तेज़ नहीं ॥
ऐ मुहीते[15] किनार ना पैदा ! ।
हुसनो खूबी पे तेरी खुदा शैदां[16] ॥
बेहरे मव्वाज[17] है तलातुम[18] में ।
हुसन तूफां है तेरा आलम में ॥
"मैं बैहना[19] नहीं" यह क्यों बोला ।
साह्मने मेरे कुफर क्यों तोला ? ॥
पैहन कर आज मौज की चादर ।
नख़रे टखरे हमीं से यह नादर ! ॥
"मैं बैहना नहीं" यह क्या माने* ? ।
बुर्क़ा[20] ओढ़ा हुबाबे[21] लायानि[22] ! ॥
तिनका भर किशती भर जहाज़ सही.

१३ लोहा १४ तल्वार १५ ऐ बेहद (अत्यन्त) अहाता (विशालता) रखने वाली ! १६ क़ुर्बान १७ लैहरों वाला समुद्र १८ तूफ़ान् (लैहरांमें) १९ नंगा २० पर्दा २१ बग़ैर मतलब के (बेफ़ायदा:) २२ बुलबुला * मतलब

कोहे[२३] भर बैहर भर यह नाज़ सही ॥

हाय तुम ने तो क्या सितम ढाया ।

जुमला[२४] आलम द्रोग़[२५] वह आया ॥

नून आंखों में कर दीया तुम ने ।

झूठ सच कर दिखा दीया तुम ने ॥

तेरे पर्दे सभी उठा दूंगा ।

झूठ बोले की मैं सज़ा दूंगा ॥

नाम रूपों की नू उठा दूंगा ।

हू[२६] ही हू हूबहू दिखादूंगा ॥

हाय! अज़हाँर[२७] आज लूं किस से?।

रू बरू हो खड़ा बने किस से? ॥

आप ही गार्गी हूं आप हूं राम ।

कुच्छ नहीं काम, रात दिन आराम ॥

२३ पर्वत सम २४ कुल जहान २५ झूठा (असत्य) २६ ईश्वर ही ईश्वर यह सब है (सर्वं खल्विदं ब्रह्म) २७ बियान

२१ गंगा पूजा.

गंगा ! तेथों सदे[1] वलहारे जाऊं (टेक)

हाड चाम सब वार के फैंकूं ।

यही फूल पताशे लाऊं ॥१॥ गंगा०

मन तेरे वन्दरन को दे दूं ।

बुद्धि धारा में वहाऊं ॥२॥ गंगा०

चित्त तेरी मच्छली चब जावें ।

अहङ्क[2] गिरि[3] गुहा में दबाऊं ॥३॥ गंगा०

पाप पुण्य सभी सुलगा कर ।

यह तेरी जोत जगाऊं ॥४॥ गंगा०

तुझ में पडूं तो तू बन जाऊं ।

ऐसी डुबकी लगाऊं ॥५॥ गंगा०

रमण करूं सुत धारा मांहि ।

नहीं तो नाम न राम धराऊं ॥६॥ गंगा०

१ सौ बार .कुर्बान जाऊं २ अहंकार ३ पर्वत की गुफा

२२ गंगा स्तुति.

नदीयां दी सरदार! गंगा रानी !।
ठंडा जल दे देन वहार. गङ्गा रानी !॥
सानूं रब्ब[1] जिन्दड़ी दे नाल. गङ्गा रानी !।
केई[2] वार करे पार. गङ्गा रानी !॥
माँ माँ गोते गिन गिन मार. गङ्गा रानी !।
तेरीयां लैहरां राम अस्वार. गंगा रानी !॥

१ प्राण. जान २ कई

---

२३ अमर नाथ की यात्रा का हाल.

१. पहाड़ों की सैर.

राग पहाड़ी ताल [illegible].

पहाड़ों का यूं लम्बी तानें वह सोना।
वह गुंजान[1] दरख़्तों का दोशाला[2] होना॥

१ घने २ पोशाक ओढ़े हुवे अर्थात [illegible]

वह दामन में सब्ज़ाः का मखमल बछौना ।
नदी का बछौने की झालर परोना ॥
यह राहत मुजस्सम यह आराम मैं हूं ।
कहां कोहो दरया, यहां मैं ही मैं हूं ॥१॥
यह पर्वत की छाती पै बादल का फिरना ।
वह दम भर में अब्रों से परबत का घिरना ॥
गरजना, चमकना, कड़कना, नखिरना ।
छमा छम, छमा छम, यह बूंदों का गिरना ॥
अरूसे फ़लक का वह हसना, यह रोना ।
मेरे ही लिये है फक़त जान खोना ॥२॥
यह वादी का रंगीं गुलों से लहकना ।
फ़िज़ा का यह बू से सेरापा महकना ॥

३ आनन्द, आराम से भरे हुवे ४ पर्वत अरु दरया ५ बादल ६ फैलना, ७ आकाश रूपी दुल्हन, मुराद इन्दर से है ८ घाटी, ९ पुष्पों १० खुला मैदान ११ अति सुंदर सुगंधि देना

यह बुल्बुल सां[12] खंदां लबों का चहकना।
वह आवाज़े नै[13] का बेहद सू[14] लपकना॥
गुलों की यह कसरत, अरम[15] रू ब रू है।
यह मेरी ही रंगत है, मेरी ही बू है॥३॥
जो जू[16] और चश्मा: है, नग़मा:[17] सरा है।
किस अन्दाज़ से *आब बल खा रहा है॥
यह तख़्तों पै तख़्ते हैं रेशम बिछा है।
सुहाना[18] समा मन लुभाना[19] समा है॥
जिधर देखता हूं, जहां देखता हूं।
मैं अपनी ही ताब[20] और शां देखाता हूं॥४॥

१२ हंसते हुये, खिले हुये १३ बन्सरी १४ सर्व तरफ १५ स्वर्ग का बाग़ १६ नहर १७ आवाज़ दे रहा है, बोलता है १८ दिल पसंद १९ मन को मोह लेने वाला २० चमक, प्रकाश, तेज * पानी

२ आबशारों की बहार.

नहीं चादरें, नाचती सीमें तन हैं।
यह आवाज़? पाज़ेब हैं नारह ज़न हैं॥
पुहारों के दाने ज़मुर्रद फिगन हैं।
सफाई आहा! रूये मह पुर शिकन हैं॥
भँवा हूं मैं गुल चूमता बोसा लेता।
मैं शमशाद हूं, झूम कर दाद देता॥५॥
मेरे साह्मने एक मैहफल मजी है।
हैं सब सीमें सर पीर, पुर सब्ज़ जी है॥

१ चांदी के बदन वाली (अर्थात यह पानी की चादरे बल्कि: सफेद चांदी के शरीर वाली चादरे हैं जो नाच कर रही है) २ पाओं का एक ज़ेवर होता है जो चलते समय सुन्दर आवाज़ देता है ३ शोर कर रही हैं ४ एक प्रकार का मोती है मुराद यह है कि पुहारें जो अपनी बूंदे बाहर फैंक रही हैं वह मानो अति सुंदर मोती बाहर डाल रही हैं ५ चांद का मुंह ६ बल डाले हुवे है (अर्थात चांद भी इस सफाई से ईर्शा कर रहा है ७ प्रातःकाल की आनन्दित वायू ८ सरू वृक्ष को कहते हैं ९ चांदी के सिर वाले अर्थात सफेद बाल या सिर वाले

शोर क्या है, मीना पै मीना धरी है।
न झरनों का झरना है, कुल्कुल[10] लगी है॥
लुढ़ाये यह शीशे कि हैं निकलीं नहरें।
है मस्ती मुजस्सम यह, या अपनी लहरें[11]॥७॥

१० कुल्कुल ११ चिदानन्द के समुद्र

---

३ श्रीनगर से अनन्त नाग को किश्ती में जाना.

रवाँ आबे दरया है, कश्ती दवाँ है।
सबा तुन्दतर आगी, मुअत्तर-मशाम-जाँ है॥
यह लहरों पै सूरज का जल्वा अयाँ है।
बलन्दी पै बरफ़ इक नगीनी फ़शाँ है॥

१ दरया का पानी चल रहा है २ जाग रही है अर्थात् बैह रही है ३ तेजी से भरी, तुन्द वायु ४ सुगंध लाने वाली, मिश्रक ५ प्रातःकाल में बांग देती है अर्थात् (प्रातःकाल की तुन्द वायु, सुंदर गानेवाले पक्षी की तरह सुबह के समय ईश्वर आराधन कराने के लिये बांग देती है) ६ प्रकाश मानमान, ७ चमक मारने वाली.

ज़हूर[8] अपने ही नूर का तूर[9] पर है।
पदीद[10] अपनी ही दीदे[11] कुल[12] वैहेरो बर है ॥७॥

झलकता है डैल[13] दीदाए[14] मह लका सा।
धड़कता है दिल आयीनां[15] पुर सफा का॥

हलाता है कोहों[16] को सदमाः[17] हवा का।
खिले हैं कंवल फूल, है इक बला का॥

यह सूरज की किरणों के चप्पे लगे हैं।
अजब नाओ भी हम हैं, खुद [18] खे रहे हैं ॥८॥

८ नज़र आना, जाहर होना ९ पर्वत से मुराद है १० ज़ाहर ११ दृष्टि १२ कुल पृथिव और समुद्र १३ सरोवर का नाम है १४ चांद से खूबसूरत की आंख जैसा १५ शुद्धः दिल साफ शीशे की तरह १६ पर्वत १७ चोट, टक्कर १८ चला रहे हैं, ठेल रहे हैं.

---

४ अमर नाथ की चढ़ाई, पूर्णिमा रात्री

चढ़ाई मुसीबत, उतरना यह मुशकल।

फिसलनी वरफ तिस पै आफत यह बादल ॥
क़्यामत यह सरदी कि बचना है बातल।
यह बू बूटीयों की कि घबरा गया दिल ॥
यह दिल लेना जां लेना किसकी अदा है ? ।
मेरी जां की जां, जिस पै शोखी फिदा है ॥९॥
अंजब लुत्फ़ है कोह पर चांदनी का ।
यह नेचर ने ओढ़ा है जाली दुपट्टा ॥
दिखाता है आधा, छुपाता है आधा ।
दुपट्टे ने जोबन कीया है दोबाला ॥
नशे में जवानी के म़ाशूके नेचर।
है लिपटी हुई राम से मस्त हो कर ॥ १० ॥

१ प्रलैय, आखर की २ झूठ ३ नखरा, काम ४ .क़ुर्बान, सदके हैं ५ .क़ुदरत ६ सुंदरता ७ प्रकृति (क़ुदरत) रूपी प्यारी प्रिया

(९) अमर नाथ का अज़हद विशाल खुदाई
हाल (जिसे लोग गुफा कहते हैं)

बरफ जिस में सुस्ती है जड़ता, लां शै है।
अमर लिंग एस्तादः चेतन की जाः है ॥
मिले यार, हुवा वसल, सब फासला तै।
यही रूप दायम अमर नाथ का है ॥
वह आये उपासक, तअय्युन मिटा सब।
रहा रामे ही राम, मैं तूं हटा जब ॥

१ खुला, लम्बा चौड़ २ कुच्छ चीज़ नहीं ३ खड़ा हुवा २ ४ स्थान, जगह ५ मलाप, मेल मुलाक़ात ६ सब फ़र्क़ दूर हुवा, मिट गया ७ नित्य, सर्वदा रहने वाला ८ भेद भाव, फ़र्क़, क़ैद, परिछिन्नता. ९ ईश्वर, कवि के नाम से भी मुराद है

---

(२४) उत्तरा खंड में निवास स्थान का वर्णन.

रात का वक़्त है बियाबां है।

खुश वज़ा पर्वतों में मैदां है ॥
"आस्मान का बतायें क्या हम हाल।
मोतियों से भरा हुआ है थाल॥
चांद है मोतियों में लाल धरा।
अब्र है थाल पर रुमाल पड़ा॥
सिर पर अपने उठा के ऐसा थाल।
रक्स करती है नेचर खुशहाल॥
वायु को क्या मज़े की सूझी है।
राम के दिल की बात बूझी है॥
पास जो बेह रही है गंगा जी।
अबख़रे उस के लद लदाते ही॥
ला रही है लपक कर राम के पास।
क्या ही ठंडक भरी है गंगा वास?॥

१ तरीका २ बादल ३ रक्स नाच ४ खुश (आनन्द रूप) प्रकृति ५ हवा ६ जल के प्रमाणू * आकाश

फ़ख़र ख़िदमत में बाद है ख़ुरसंद।
जा मिली बादलों में हो के बलन्द॥
अब तो अटखेलियां ही करती है।
दामने अबर को लो उल्टती है॥
लो उड़ाया वह पर्दा-ओ-रूमाल।
आसमाँ दिखाया है माला माल॥
शाद नेचर है जगमगाती है।
आंख हर चार सूं फिराती है॥
क्या कहूं चांदनी में गंगा है।
दूध हीरों के रंग रंगा है॥
वाह! जंगल में आज है मंगल।
सैर कर इस तरफ़ की चल! चल! चल!

७ सेवाके गुमान ८ खुश ९ बादल का पल्ला १० खुश ११ प्रकृति १२ तरफ़ १३ आनन्द

२५ चांन्द की करतूत.

अजब घूमते घूमते राम को।
मिला एक तालाब सर शाम को॥
जुलाहे की थी पास में झोंपड़ी।
थी लड़की वहां खेलती इक पड़ी॥
हवा चुपके से सरसराने लगी।
इधर चांदनी दम दमाने लगी॥
मैं क्या देखता हूं कि लड़की वहीं।
है बुत बन रही और हिलती नहीं॥
खुला मुंह है भोले से मुसकां रही।
है आंखों से क्या चांद को खा रही॥
उतर आंख से दिल में दाखल हुवा।
दिल साफ में चांद सब घुल गया॥
कहो तो अरे चांद! क्या बात है?।

१ हस रही

यह क्या कर रहे हो, यह क्या घात है॥
पड़ा .अक्स[2] ही तेरा तालाव पर।
पै लड़की के दिल में कीया तू ने घर॥
दीया .आलमों[3] को न जिस राज़[4] को,
दिखाया न जो दूरबीन बाज़ को॥
रियाज़ी[5] का माहर न जो पा सका।
न हैयत[6] से जो भेद कुछ आ सका॥
जुलाहे के घर में दीया सब बता।
अरे चांद! क्योंजी! हूवा तुझ को क्या?
वह नन्हे[7] से दिल में यह आराम क्या।
ग़रीबों के घर में तेरा काम क्या?॥

२ साया, प्रतिबिम्ब ३ बुद्धिमानों, दाना लोगों को ४ भेद गुह्य बात ५ गणित में लायक़ ६ शकल का .इल्म, तस्वीर, नजूम ७ छोटे से

२६ आरसी.

दुलहन को जान से बढ़ कर भाती है आरसी।
मुख साफ़ चांद का सा दिखाती है आरसी॥
हस्ती इल्म सरूर का मज़हर तो ख़ूब है।
हां इस में आबरू को सजाती है आरसी।
हम को बुरी बला से यह लगती है इसलीये।
वाहद को क़ैदे दुई में लाती है आरसी॥
अज़ बस ग़नी है हुसन में वह अपने माहरू।
हैरत है उस के साम्हने आती है आरसी॥
ख़ूबी है रूये ख़ूब में, शीशे में कुछ नहीं।
हाथों में रूनुमाई को जाती है आरसी॥

१ अंगूठे में डालने का ज़ेवर जिस में शीशा लगा होता है २ सच्चिदानन्द ३ ज़ाहर होने का स्थान ४ शान, इज़्ज़त ५ एकता ६ द्वैत ७ बेहद दौलतमंद (अर्थात हुसन में ज़्यादा:) ८ चांद के मुखड़े वाला (माशूक़) ९ चेहरे १० चहरे को दिखाने को

ज़ाहर में भोली भाली, हैरां शकल[11] वले।
क्या झूठ को यह रास्त[12] वताती है आरसी॥
गेहनों में टुकड़ा आयीना का है हक़ीर[13] तर।
रुतवा[14] चले सफाई से पाती है आरसी॥
देखूं मैं या न देखूं, हूं आफ़ताब[15] रू।
ताहम हमारे दिल को लुभाती[16] है आरसी॥
गंगा ममेरु[17] अब्र[18] सही, मिहर[19]-ओ[20]-मांह सही।
मुखड़े का अपने दर्स[21] कराती है आरसी॥
है शौक़े दीद[22] चेहरः-ए[23]-तावां का राम को।
यकसू[24] दिली हरआन[25] वनाती है आरसी॥

११ लेकिन १२ सच १३ तुच्छ १४ दरजा १५ सूरज के मुंह वाल (प्रकाश वाले चेहरे वाला) १६ मोह लेती है १७ पर्वत १८ बादल १९ सूरज २० और चांद २१ दर्शण २२ देखने का शौक़ २३ प्रकाशस्वरूप (प्रकाशवाले चेहरे का) २४ एकाग्रता एकागर २५ हर वक़्त

---

२७ तस्वीरे यार.

इस लिये तस्वीरे जांना हम ने खिचवाई नहीं (टेक)
बात थी जो असल में, वह नक़ल में पाई नहीं। इस० १
पहिले तो यहां जान की तन से शनासाई नहीं॥ इस० २
तन से जाँ जब मिल गयी, तो उस में दो ताई नहीं॥इस० ३
एक से जब दो हूए, तो लुतफे यकताई नहीं॥इस० ४
हम हैं मुशताके सखुन, और उस में गोयाई नहीं॥इस० ५
पाओं लंगड़ा हाथ लुंझा, आंख बीनाई नहीं॥ इस० ६
यार का खाका उड़ाना, यह भी दानाई नहीं॥ इस० ७

१ प्यारा यार (जान की जो जान उस की तस्वीर) अर्थात अपने स्वरूप की सूरत २ पैहचान अर्थात (तन) शरीर से तो असली अन्दरूनी जाँ पैहचानी (देखी) नहीं जाती इसवास्ते तन की तस्वीर से क्या हासल ३ दो होना (अर्थात जब शरीर के साथ प्राण मिलकर बिलकुल एक हो गये तो उन को फिर अलग अलग दो कर ही नहीं सकते, तो फिर तस्वीर कैसे ४ एकता का आनन्द ५ बातों के सुनने के शौक़ वाले ६ मगर तस्वीर में बोलने की शक्ति नहीं ७ (तस्वीर में) आंख देख नहीं सकती, पाओं चल नहीं सकते, हाथ हिल नहीं सकते ८ नक़शा

कागज़ और पैरेहन, यह दिल को भाई नहीं ॥ इस० ८
दिल में डर है कि मुसव्वर ही न बन बैठे रक़ीब ॥ इस० ९
दाम मांगे था मुसव्वर, पास इक पाई नहीं ॥ इस० १०
असल की खूबी किसी नक़ल में पाई नहीं ॥ इस० ११

९ कागज़ का लबास १० तस्वीर खेंचने वाला ११ शत्रु, दूसरा आशक़, सम् प्रीतम

---

२८ ख्याल दुन्या दार का

जे न मिलदा धन मिलीयां अमीर दे ।
जे न मिले मुराद मिलियां फक़ीर दे ॥
जे न जावे पीड़ मिलियां पीर दे ।
तीनों दयो रुढ़ा विच वगदे नीर दे ॥ १ ॥

जवाब मस्त आत्मवित (फक़ीर) का

दुन्या दी मुराद जो कहन फक़ीर नूं ।
दुन्या कारण मनन मुर्शद पीर नूं ॥

छड के हीर फड़न जो लीड़ फकीर नूं ।
रोन्दे ढाईं मार सदा तकदीर नूं. ॥ २ ॥

मतलबः--(१) दुन्यादार कहता हैः—कि यदि अमीर के मिलने पर धनकी प्राप्ति न हो, और अगर फकीर के मिलने पर सर्व कामनायें और दुन्यावी मुरादें पूरी न हों, और अगर मुर्शद (गुरु) के मिलने से दुःख दूर न हो तो इन तीनों (मिलने वालों) को बहते पानी में बहादो अर्थात पानीमें डुबादो (संगत छोड़ दो).

(२) ज्ञानवान जवाब देता हैः---जो साधू को दुन्याकी मुराद की खातर मानते हैं (और किसी सबब से नहीं) या जो गुरु को दुन्या की खातर (दुन्यावी आनन्द के लिये) मानते हैं, और जो आत्मज्ञान, निजानन्द रूपी अमृत को छोड़ कर लीड़ और चीथड़े मांगते रहते हैं वह सर्वदा ढाईं मार मार कर अपनी प्रारब्ध को रोते रहते हैं.

---

२९ राम का एक प्यारे के नाम खत.

आ देख ले बहार कि कैसी बहार है ॥ (टेक)
गंगा का है किनार[1], अजब सबज़ा ज़ार है ।

1 कनारा, तट

बादल की है बहार, हवा खुशगवार है ॥
क्या खुशनमा पहाड़ पै वह चशमा सार है।
गंगा ध्वनी सुरीली है, क्या लुतफ दार है ॥ आ० १

बाहर निगह कीजीये तो गुल्ज़ार है खिला।
अंदर सरूर की तो भला हद कहां दिला ॥
कालिज क़दीम का यह मेरे मूं नहीं हिला।
पढ़ाता मारफत का सबक़ मेरा यार है ॥ आ० २

वक़्ते मुबाहे ईद तमाशा सार है।
गलगूना मुंह पै मल के खड़ा गुलऽज़ार है ॥
शाहे फ़लक से या जो हूई आंख चार हैं।
मारे शरम के चेहरा बना सुर्ख नार ॥ आ० ३

२ खुश करने (लगने) वाली ३ धारा बहती है ४ आनन्द ५ ऐ दिल ६ बाल बींका नहीं हूवा (अर्थात पढ़ाना बन्द नहीं हुवा) ७ आनन्द की प्रातःकाल ८ उबटना, (उगाल) ९ फूल जैसी गालों (कपोलों) वाला (स्वरूप) १० सूरज ११ आग की तरह लाल

क़तरे हैं ओस के कि दुर्रों[12] की क़तार है।
किरनो की उन में, वल्ल वे, नज़ाकत[13] यह तार है॥
मुर्ग़ाने ख़ुश[14] नवां, तुम्हें काहे की आर[15] है।
गाओ बजाओ, शब का मिटा दिल से वैर[16] है॥ आ० ४
माशूक़ क़द दरख़्तों पे बेलों का हार है।
नैं[17] नैं ग़लत है, ज़ुल्फ़[18] का पेचां यह मार[19] है॥
वाह वा! सजे सजाये हैं कैसा श्रृङ्गार है।
अशजार[20] में चमकता है, ख़ुश आबशार[21] है॥ आ० ५
अशजार सिर हिलाते हैं, क्या मस्त वार हैं।
हर रंग के गुलों से चमन लाला ज़ार[22] है॥
भंवरे जो गूंजते हैं, पढ़े ज़र नगार[23] हैं।

१२ मोती १३ नाज़ुक सा धागा १४ ख़ुश (अच्छा) गाने वाले पक्षी १५ शरम १६ वोस (अर्थात रात गयी और प्रातःकाल हुवा) १७ नहीं नहीं १८ पेचदार ज़ुल्फ (लटला) १९ सांप २० दरख़्तों २१ झरना २२ सुर्ख़ रंग २३ सुनहरी रंग जिन के परों पर होते हैं

आनन्द से भरी यह सदा[२४] ओङ्कार है ॥ आ० ६

गंगा के रूए[२५] सफा से फिसलती न गर नज़र ।

लैहरों पे .अक्स[२६] मिहर[२७] का क्यों बेक़रार है ॥

विश्नू के शिव के घर का असासा यह गंग है ।

यहां मौसमे खिजां[२८] में भी फसले बहार[२९] है ॥ आ० ७

साकी[३०] वह मै[३१] पिलाता है, तुर्शी[३२] को हार है ।

वाह क्या मजे से खाने को ग़म का शकार है ॥

दिलदार खुश[३३] अदा तो सदा हमकनार[३४] है ।

दर्शन शराबे[३५] नावे सखुन दिलके पार है ॥ आ० ८

मस्ती मुदाम[३६] कार, यही रोज़गार है ।

गुलबीन[३७] निगाह[३८] पड़ते ही फिर किस का खार[३९] है ॥

२४ आवाज़ २५ शुद्ध रूप २६ प्रतिबिम्ब, साया, २७ सूरज २८ श्रावन भादों की ऋतू जब पत्ते झरने लगते हैं २९ बसन्त ऋतु ३० आनन्द रूपी शराब पिलाने वाला ३१ शराब ३२ खटाई ३३ अच्छे नखरे करने वाला ३४ साथ ३५ अंगूर की शराब ३६ हमेशः (नित) ३७ फूल (नेकी) देखने वाली ३८ दृष्टि ३९ कांटा (बदी)

क्यों राम से नज़ार[40] है तू दिलफ़गार[41] है।
जब राम क़ल्ब[42] में तेरे ख़ुद यारे ग़ार[43] है॥ आ०९.

४० दुबला, पतला ४१ ज़ख़मी दिल ४२ अन्तःकरण
४३ घर का यार, अर्थात पक्का यार

---

३० बदले है कोई आन में अब रंगे[1] ज़माना। (टेक)

आता है अमन[2] जाता है अब जंगे[3] ज़माना॥
ऐ जैहल[4]! चलो, दर्द उड़ो, दूर हटो हसद[5]।
कमज़ोरी मरो डूब, बस ऐ नंगे[6] ज़माना!
ग़म दूर! मिटा रश्क[7], न ग़ुस्सा, न तमन्ना[8]।
पलटेगा घड़ी पल में नया ढंगे[9] ज़माना॥
आज़ाद है, आज़ाद है, आज़ाद है हर एक।
दिल शाद[10] है क्या ख़ूब उड़ा तंगे[11] ज़माना॥

१. ज़माने का रंग २ आराम ३ लड़ाई का समय ४ अविद्या
५ ईर्षा ६ शरम का समय ७ द्वेश ८ इच्छा, ख्वाहश ९ समय का
ढंग १० खुश दिल ११ समय की तंगी, मुसीबत

(लो काट की हंडिया मे निभे भी तो कहां तक ।
अग्नि तो जला ज्ञान की दे संगे ज़माना) ॥
आती है जहां में शाहे मशरिक़ की सवारी ।
मिटता है सियाहि का अभी ज़ंगे ज़माना ॥
वह ही जो इधर खार, उधर है गुले खंदां ।
हो दंग जो यूं जान ले नैरंगे ज़माना ॥
देता है तुम्हें राम, भरा जाम यह पी लो ।
सुनवायेगा आहंग नये चंगे ज़माना ॥

१२ काठ की हांडी को अग्नि पर रखने से क्या हाथ लगेगा अगर कुछ जलाना चाहते हो तो ज्ञानाग्नि पर समय का ग़म रूपी पत्थर रख कर फूंक दो १३ सूर्य अर्थात ज्ञान का सूर्य उदय होनेवाला है १४ धब्बा, अंधकार १५ समय का ज़ंगार (दाग़) १६ कांटा १७ खिला हुवा फूल १८ समय का जादू, खेल १९ निजानंद की मस्ती का प्याला २० ज़माने के बाजे का नया राग.

माया और उस की हक़ीक़त.

१ माया (शाम).

(यह सब कविता कलकत्ते के हाल की है और माया का विस्तार करके राम दर्शाते हैं).

गंगा की ठंडी छाती से आती है खुश हवा ।
है भीने भीने बाग़ का सांस, इस में मिल रहा ॥
गंगा के रोम रोम में रचने लगा वह वैहर ।
आया ज़ुवार ज़ोर का लैहरों पे लेके लैहर ॥
देखो तो कैसे शौक़ से आते जहाज़ हैं ॥
मारे खुशी के सीटी बजाते जहाज़ हैं ।
शादी ज़मीं की ऐ लो ! फ़लक से हूई हूई ।
वह सायवान क़नात है जब ही तनी हूई ॥
दुल्हा के सिर पर तारों का सिहरा खिला खिला ।

१ समन्द्र २ समुद्र में तुफान ३ आकाश

दुल्हन के बेक़ें दिल ने चेरागां खिला दिया ॥

४ बिजली दिल में रहने वाली अर्थात पृथ्वी (इस जगह मुराद है) ५ बिजली की रोशनी फैल गयी

---

२ मुक़ाम (कलकत्ते का ईडन बाग़)

है क्या सुहाना[1] बाग़ में मैदाने दिलकुशा[2] ।
और हाशियाः[3] है बेञ्चों का सञ्ज़ाः पे वाह वा ॥
मजम[4] हजूम लोगों का भर कर लगा है यह ।
मैदान आदमी से लबालब भरा है यह ॥
बेञ्चों पै बाज़ बैठे हैं, अक्सर खुश खड़े ।
बांके जवान बाग़ में हैं टैहलते पड़े ॥
मैदान पार सड़क पर है बग्गीयों की भीड़ ।
घोड़ों की सरकशी है, लगामों की दे नपीड़ ॥
शौक़ीन कलकत्ता के हैं मौजूद सब यहां ।
हर रंग ढंग वज़ा के मिलते हैं अब यहां ॥

१ दिलको अच्छा लगने वाला २ खुले दिलवाला अर्थात विशाल ३ किनारा ४ गरोह ५ सिर हिलाना.

३ काम.

अर्थात (कलकत्त के बाग़ में लोगों का काम क्या है)

हम सब को देखते हैं, यह देखते कहां ?।
आंखे तनी हुई हैं, क्या पीर क्या जवान ॥
मर्कज़[1] सब निगाहों का उजला[2] चबूत्रा।
खुश बैंड[3] बाजा गोरों का है जिस में बज रहा।
गाते फुला फुला के हैं वह गालें गोरियां।
क्या रौशनी में सुरख दमकती हैं कुरतियां ! ॥
ऐ लोगो ! तुम को क्या है ? जो हिलते ज़रा नहीं।
क्या तुम ने लाल कुरती को देखा कभी नहीं ? ॥

१ केन्द्र २ रौशन, चमकीला ३ अंग्रेज़ी बाजे का नाम है.

---

४ परदा.

इसरार[1] इस में क्या है, करो ग़ौर तो सही।

१ भेद, गुह्य

ठैहरा रहा है पर्दा सा सब की निगाह पर ।
इस पर्दे से परोई है हर एक की नज़र ॥
यह पर्दा तन रहा है, .अजब ठाठ बाट का ।
जिस में ज़मीनो ज़मानो मकान है समा रहा ॥
पर्दा बला है, छेद कि सियो कहीं नहीं ।
लेकिन मोटाई जो पूछो, तो अस्ला नहीं नहीं ॥
पर्दा सितम है, सैहर के नक़शो नगार हैं ।
हर आंख के लीये यां अलैहदा ही कार हैं ॥
सब सामईन के सामने पर्दा है यह पड़ा ।
हर एक की नगाह में नक़्शा बना दीया ॥
पर्दों से राग का है यह पर्दा .अजब पड़ा ।
गंधर्व शैहर का है कि फ़िरौज का मज़ा ॥

२ देश काल वस्तू ३ सीया हुवा ४ बिलकुल ५ .ज़ुलम, ग़ज़ब ६ जादू ७ काम ८ सुनने वाले, श्रोतागण ९ चढ़ाई, तरक्की, बलंदी (यहां मुराद स्वर्ग लोक से भी हो सकती है)

जादू है पियानोटिज़्म[10] है, पर्दा सुरांब[11] है।
क्या सच है रंग ढंग, यह सब नक़्शे आब[12] है?
रमीये तो यार पर्दे में देखें तो कैफीयत[13]।
आंखें सिली हैं पर्दा से क्यों? क्या है माहीयत[14]? ॥
[15]दीदों में और रंगों में क्या है मुनास्बत?

१० पियानो बाजे के बजाने का नाम है ११ रेत का मैदान जो पानी की तरह नज़र आवे (मृग तृष्णा का जल) १२ पानी के नक़्श १३ हाल १४ असलीयत १५ चक्षु

---

५ विवाह.

वह नौजवां के रूबरू नूरी[1] लिबास में।
दुल्हन खिली है फूल सी फूलों की बास में ॥
शादी के राग रंग में बाजा बदल गया।
ऐ लो! बात बैठी है, जलसा बदल गया ॥
दुल्हन का रंग है वह गोया गुलाब है।

१ प्रकाश की पोशाक

और चश्मे नीम मस्त से झड़ता शराब है ॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें।
जब रंग ही ऐसा हो, तो जड़ जायें न आंखें ॥

२ आंखें ३ आधीमस्त

---

६ यूनीवर्स्टी कौन्वोकेशन.

ऐनक लगाये लड़के को वह इस ही पर्दे पर।
हरकारह दौड़ता हुवा लाया है क्या खबर ॥
लेते ही तार हाथ में लड़का उछल पड़ा।
"मैं पास हो गया हूं, लो मैं पास हो गया"
"बी-ए-के इमतहान में बढ़ कर रहा हूं मैं।
इंगलिश में और हसाब में अव्वल रहा हूं मैं" ॥
है चांस्लर से जलसा में इनाम पा रहा।
और फैलो साहवान से है इकराम पा रहा ॥

१ यूनीवर्स्टी के हालमें प्रधान पुरुष (प्रेज़ीडेंट) २ यूनी-वर्स्टी के मैम्बर व मददगार ३ खताब इत्यादि

क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें।
जब रंग ही ऐसा हो तो जुड़ जायें न आंखें॥

---

७ बच्चा पैदा हुवा.

वह देखना किसी के लीये इस ही पर्दे पर।
पूरी हुई है आर्ज़ू पैदा हुवा पिसर[1]॥
मंगल है शादियाना[2] है खुशियां मना रहा।
दरवाज़े पर है भाट खड़ा गीत गा रहा॥
नन्हा[3] है गोल मोल, कि इक कंवल फूल है।
नाज़ुक है लाल लाल, अचंबा अमूल[4] है॥
अब तो बहू की चांदी है घर भर में बन गयी।
सास भी जो रूठी थी सो आज मन गयी॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें।
जब रंग ही ऐसा हो तु जुड़ जायें न आंखें॥

१ बेटा २ खुशी के बाजे बज रहे हैं ३ छोटा सा बच्चा
४ बेशुमार कीमत वाला

नैशनल कांग्रैस.

वह देखना! किसी के लीये इसी परदे पर।
मण्डप है कांग्रैस का। ग़ज़ब धूम कर्रोफर[1]! ॥
लैकचर वह दे रहा है धूवां धार सिहरंकार[2]।
जो चीर शक्को शुभाः को है जाता जिगर के पार॥
हक़्क़-ओ-दक्क[3] सकुब्बत[4] में हैं पड़े हाज़रीन[5] तमाम।
वह मोतियों से आंख का छल्के[6] पडा है जाम[7] ॥
"गो आन"; गो आन"[8]! कहते हैं सब अहेले जिन्दगी[9]।
हड्डी से खून से लिखेंगे तारीख हिन्द की॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें।
जब रंग ही ऐसा हो तु जुड़ जायें न आंखे॥
इस पर्दे पर है, ठेका में है, इक लाख की बचत।
इस पर्दे पर है, सेठ को, दो लाख की बचत॥

१ शान शौकत २ जादू की तरह असर करने वाला ३ हक दक अश्चर्य हैरान ४ चुप चाप ५ श्रोतागण ६ उच्छल पड़ना ७ प्याला (मोतियों का) ८ आगे बढ़ो, आगे बढ़ो ९ जान्दार

इस पर्दे पर है सिंह जवान् खूब लड़ रहा।
तन्हा है एक फौज मे क्या डट के अड़ रहा॥
इस पर्दे पर जहाज़ हैं आते खुशी खुशी।
मक़्सद मुराद दिल की हैं लाते खुशी खुशी॥
इस पर्दे पर तरक्की है रुतवा बड़ा बढ़ा।
यक दम है मेरे यार का दर्जा चढ़ा हुवा॥
इस पर्दे पर हैं सैरो तमाशे जहान् के।
इस पर्दे पर हैं नक़्शे बहिश्तो जुनां के॥
बिछड़े हुये मिले हैं मुर्दे भी उठ खड़े हैं।
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें॥
जब रंग हों दिलख्वाह तो जुड़ जायें न आंखें।

१० मुराद ११ सैर और तमाशा १२ स्वर्ग नर्क १४ दिल पसन्द, स्वेच्छा १५ दिल पसन्द, स्वेच्छा

---

९ हक़ीकी (अवधूत का राज्य)

वाह! क्या ही प्यारा नक़शा है, आंखों का फल मिला!!

उस मोहने नौजवान का जीना सफल हुवा।
महल उसका, जिस की छत पे हैं हीरे जड़े हूए[1]।
क़ौसे कज़ाह-व-अंबर[2] के पर्दे तने हूए॥
मसनद[3] बलन्द तख़्त है पर्वत हरा भरा।
और शजरे देवदार[4] का है चंवर झुल रहा॥
नग़मे सुरीले "ओम" के हैं उस से आ रहे।
नदियां, पिन्दे[6], बाद[7] हैं, वह सुर मिला रहे॥
बेहोशो हिस है गर्चिह पड़ा खाल की तरह।
दुन्या है उस के पैर को फुट बाल[8] की तरह॥
कैसी यह सल्तनत[11] है, अदू[9] का निशान नहीं!
जिस जा[10] न राज मेरा हो ऐसा मकान नहीं॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें।

१ इन्द्र धनुष २ बादल ३ बैठने की जगह ऊंची ४ देवदार के वृक्ष ५ आवाज़ शब्द ६ पक्षी ७ वायू ८ पाओंसे खेलने का गेंद ९ दुशमन १० जगह ११ बादशाहत राज्य १२ असली वास्तव

जब रंग हो दिलख्वाह तो जुड़ जायें न आंखें।

---

१० माया सर्व रूप.

माया का पर्दा फैला है क्या रंग रंग में।
और क्या ही फड़ फड़ाता है हर आबो संग में॥
इस पर्दे पर हैं झीलें जज़ीरे खलीजो बेहर।
इस पर्दे पर हैं कोह-ओ-बियाबां दियारो शहर॥
सब पीर सब जवान इसी पर्दे पर तो हैं।
बाशिन्दे और मकान इसी पर्दे पर तो हैं॥
पैग़म्बर और किताब इसी पर्दे पर तो हैं।
सब खाको आस्मान इसी पर्दे पर तो हैं॥
पील अस्प और गुलाम इसी पर्दे पर तो हैं।
शाहंशाहों के शाह इसी पर्दे पर तो हैं॥

१ पानी, पत्थर में २ सरोवर ३ द्वीप ४ खाड़ी (कोल) और समुद्र ५ पर्वत ६ जंगल ७ मुल्क और शहर ८ हाथी ९ घोड़े

क्या झिलमिलाना पर्दा है यह अनकबूंत का ।
दे है ख्याल (उगला हुआ) काम मूत का ॥

१० मकड़ी जो तन्तु अपने मुंह से निकाल कर जाला तन्ती है

---

११ नक़्शो निगार और पर्दा एक हैं.

यह दो नहीं हैं एक हैं. पर्दा कहो कि नक़्श ।
नक़्शो नगार पर्दा हैं, पर्दा ही तो है नक़्श ॥
यह इस्तआरा था, कि वह माया के रूप हैं ।
माया कहो कि यूं कहो यह नाम रूप हैं ॥
"इस्मो शकल" ही माया है, माया है इस्म शकल ।
हमंमानी माया के हैं. यह सब रंग रूप शकल ॥

१ नाना प्रकार के रंग रूप २ मुबालगा, दृष्टान्त, तमसील ३ नाम रूप ४ एक जैसे माने (अर्थ) वाला.

---

१२ फ़िलसफ़ा.

पर्दा खड़ा है माया का यह किस मुक़ाम पर।
है यह सर्व ऊपर कि हवासे आम पर॥
है भी कहीं कि मबनी है, यह वेह्मे ख़ाम पर।
क्या सच है, एस्तादाः है, यह मेरे राम पर॥

शास्त्र, युक्ति २ आम इन्द्र थे अर्थात इन्द्रिय मय ३ सहारा लिये हुवे ४ कच्चा वेह्म अर्थात आरोप भरम ५ सीधा खड़ा हुवा.

---

१३ महले पर्दाः (दृष्टान्त)

है इस तरफ़ तो शोर मेरोदे सभा का।
और उस तरफ है ज़ोर शुनीदन की चाह का॥
इन दोनों ताक़तों का वह टकराना देखिये।
पुर ज़ोर शोर लैहरों का चकराना देखिये!
लैहरें मिलीं मिटीं। ऐलो! पैदा हुवे हुबाब।

१ राग रंग (आवाज़) २ सुनना ३ बुलबुला या बुदबुदे

यह बुलबुले ही बुर्क़ा हैं, पर्दा वरूए आब ॥
मौजों ही का मुक़ाबला पर्दा का है महल[*] ।
मौजें है आब, कहते नहीं क्यों महल है जल?॥
हां यह तो रास्त है कि सरोदँ और सामयीं !
दोनो मिले मिटे हैं वह जल रूपे राम में ॥
और राम ही में पर्दा है नक़शो नगार हैं ।
यह सब उसी की लैहरों के [10]मौजों के कार[11] हैं ॥

४ पर्दा ५ पानी के चेहरेपर अर्थात पानी की सताह (तैह) पर ६ सच ७ राग ८ सुनने वाले ९ जल रूपी राम में या राम जो जलरूप है उस में १० लैहरें ११ काम * पर्दे का अधिष्टान् या आधार

---

१४ अहसासे आम. (दार्ष्टान्त)

महसूस करने वाली इधर से आई लैहर ।
महसूस होने वाली उधर से आई लैहर ॥

१ इन्द्रिगोचर पदार्थों को अनुभव करने वाली वृत्ति

दोनो के अक़्द शादी से पैदा हुये हुवाब।
यानी नमूँद "शै" हुई पानी में झट शताब॥
लहरें भी और बुल्बुले सब एक आब हैं।
इन सब में राम आप ही रमते जनाब हैं॥
माया तमाम इस की है हर फ़ैल-ओ-क़ौल में।
मफ़ऊल फ़ेलो फ़ाइल है हर डील डौल में।
आबशारों और फव्वारों की फुहारों की बहार।
चश्मासारों मर्ग़ज़ारों गुलइज़ारों की बहार॥
मैहरो दरिया के झकोले और सबा का खुश ख़राम॥
मुझ में मुसव्वर हैं यह सब "ओम" में जैसे कलाम॥
पसर कर लेटा हूं जग में सुबह में और शाम में।

२ विवाह शादी अर्थात मेल ३ बुलबुला ४ दृश्य (व्यक्त) ५ वस्तु शकल (रूप) ६ जल ७ काम और इक़रार ८ कर्म कर्ण कर्ता ९ बाग़ इत्यादि १० पुष्प के रुख़सार (कपोल) वाले प्यारे ११ समुद्र अरु दर्या १२ प्रातःकाल की वायू १३ मटक कर चलना १४ फ़र्ज़ी, आरोपत हैं १५ शब्द १६ फैलकर १७ सर्व का इन्द्रि गोचर स्पर्श वा जानना

चान्दनी में रौशनी में कृष्ण में और राम में

(१८) राम मुबर्रा है (शुद्ध स्वरूप राम)

यह तो सब रौस्न है, बल्कि अज़ रूये ज़ात भी।
देखो तो पर्दा नक़्श वग़ैरा ना थे कभी ॥
है मौज ही में रहो बदल जिस के बावजूद।
क़ायम है ज्यूं का त्यूं सदा इक आब का वजूद ॥
अज़े[9] इतबारे ज़ात यह कैहना पड़ा है अब।
पैदा ही कब हुवे थे वह अमवाज और हबाब ॥
अज़ रूये राम पूछो तो फिर वह नग़ारो नक़्श।
माया वग़ैराः का कहीं नामो नशानो नक़्श ॥
हर्कत सुकून और तग़य्युर[12] का काम क्या ?।
नुत्क़ो[13] ज़ुबां को दखल सैफ़ातों[14] का नाम क्या ॥

१ राम पाक (शुद्ध) २ सच ३ किन्तु ४ वस्तुता से भी ५ लैहर ६ वदलना इत्यादि ७ जल ८ लैहरें ९ वस्तु के लिहाजसे कहना पड़ा १० बुलबुला ११ स्थिरता १२ तबदीली १३ वाणि १४ गुण

अँकबाल कहां अँदबार कहां यां बेशी कमी को बार कहां।
यां पुण्य कहां अरु पाप कहां अरु मुझ में जीतो हार कहां॥
इक़रार कहां इनकार कहां तक़रार कहां असरार कहां।
मफ़हूम हर्वाम अहनाम कहां. ख़ाक आब अरु बादो
नार कहां॥
सब मर्कज़ मर्कज़ मर्कज़ है इकतार कहां परकार कहां।

१५ त्रिमूर्ता १६ बोझ १७ हद, निद् १८ स्वर्ग, इन्द्रिय, पदार्थ वायू १९ अग्नि २० पंक्तियें २१ पंक्ति डालने वाला औज़ार

---

१९. नतीजा.

ग़लतां है मुहीत बेपायां यहां वार कहां अरु पार कहां?।
गंगा है कहां अरु बाग़ कहां है मुल्क कहां पैकार कहां?
यां नाम कहां अरु रूप कहां अख़्फ़ा कहां अज़हार कहां?।
नहीं एक जहां दो चार कहां अरु मुझ में सोच विचार कहां?॥

१ पेच खाता हुआ (ग़र्क़ हुवा २) २ बेहद (अनन्त) महासागर ३ लड़ाई जंग ४ पोशीदगी (भेद) ५ ज़ाहिर करना

मां बाप कहां उस्ताद कहां? गुरु चेले का यां कार कहां?।
इह्सान कहां आज़ार[6] कहां? यां ख़ादिम[7] और सरदार कहां?॥
न ज़मां[8] न मकां[9] का कभी था निशां, इल्लत[10] मालूल[11] अज़कार[12]
कहां।
नहीं ज़ेर[13] ज़बर[14] पसपेश[15] कहां? तक़्ती[16] और शेर अशआर[17]
कहां॥
इक नूर[18] ही नूर हूं शोलों[19] फ़शां, गुलज़ार कहां और
ख़ार[20] कहां॥
लैकचर तक़रीर उपदेश कहां? तहरीर[22] कहां प्रचार
कहां?।
तप दान और ज्ञान और ध्यान कहां? दिल बेत्रस सीना
फ़िगार[23] कहां॥

६ दुःख ७ नौकर ८ काल ९ देश १० कारण ११ कार्य १२ ज़िकर १३ नीचे १४ ऊंचे १५ पीछे आगे १६ टुकड़े करना, वज़न कविता का बनाना १७ कविता, नज़में १८ प्रकाश १९ दमकने वाला, यां दमक मार रहा है २० बाग़ २१ कांटा २२ लिखित (लिखना) २३ सीना फाड़ने वाला या ज़ख़मी दिल [आशिक़)

नहीं शेखी शोखी औ़र[24] कहां? सिर टोपी या दस्तार[25]
कहां?।
नहीं बोली ताना: धमकी यहां, सूफार[26] कहां और
दार[27] कहां॥
इक मैं ही मैं ही मैं ही हूं, शैय[28] ग़ैर का दारो मदार
कहां।
आलायशे[29] क़ैदो नजात कहां? औहवामे[30] रसन[31] और मार[32]
कहां॥
घर बार कहां कोहसार[33] कहां मैदान कहां और ग़ार[34]
कहां।
मेह[35] अंजुम[36] फ़र्श[37] और अर्श[38] कहां? यां ख़्वाब[39] कहां
बेदार[40] कहां॥

२४ शरम हया २५ पगड़ी २६ तीर का मुंह २७ सुली २८ दूसरी वस्तु, भिन्न वस्तु २१ आलूदगी [अलेप] ३० वैहम भ्रान्ति ३१ रस्सी ३२ सांप ३३ पर्वत ३४ कन्दरा, गुफा ३५ चांद ३६ तारे ३७ पृथ्वि ३८ आकाश ३९ स्वप्न ४० जाग्रत

जब ग़ैर[41] नहीं डर ख़ौफ़ कहां, उम्मेद से हालते ज़ार[42] कहां? ॥
मैं इक तूफ़ाने वहदत[43] हूं कहो मुझ में इस्तफ़्सार[44] कहां।
इक मैं ही, मैं ही, मैं ही हूं, यां बन्दे[45] और सिरकार[46] कहां ॥

४१ अन्य, ४२ रोने की अवस्था ४३ एकता का तूफ़ान ४४ पूछना ४५ ग़ुलाम, प्रजा ४६ बादशाह, राजा

तीन शरीर और वर्ण.

१. तीनों अजसाम.

ग़ज़ल

जाने मन[2]! जिस्म[1] एक ख़िलअत[3] है।
इस के उतरे न कुछ बिगड़ता है ॥
याद रख, तू नहीं यह जिस्मे कसीफ़[4]।

१ शरीर २ ऐ मेरी जान! ऐ मेरे प्यारे! ३ चोग़ा कोट है ४ स्थूल शरीर

और हरगिज़ नहीं तू जिस्मे लतीफ़[५] ॥
जिस्म तेरा कसीफ़[६] ओवर कोट[७] ।
जिस्म तेरा लतीफ़ अंडर कोट[८] ॥
जिस्म बेरूनी[९] झट बदलता है ।
जिस्म अन्दर का देरपा[१०] सा है ॥
देह स्थूल मर गया जिस वक़्त ।
देह सूक्ष्म चला गया उस वक़्त ॥
देह सूक्ष्म फिरे है आवागवन ।
तू तो हर जाँ[११] है, आना जाना कौन ? ॥
पक्की मट्टी के बेशुमार घड़े ।
भर के पानी से धूप में धर दे ॥
जितने बर्तन हैं, अक्स[१२] भी उतने ।
मुख़्तलिफ़ से नज़र आयेंगे ॥

५ सूक्ष्म शरीर ६ स्थूल ७ कोट के ऊपर का कोट ८ कोट के नीचे का कोट ९ बाह्य (अर्थात ओवर कोट) १० देर तक रहने वाला ११ हर जगह है १२ प्रतिबिम्ब

लैक सूरज तो एक है सब में।
और जो सायंस पढ़ा हो मकतब में॥
तब तो जानोगे तुम, कि यह साया।
आँव[13] अन्दर कभी नहीं आया॥
नूर[14] बाहर है, लैक धोके से।
बीच पानी के लोग थे समझे॥
अब यह पानी घड़े बदलता है।
टूटते हैं सबू[15], यह रहता है॥
पानी जिस्मे लतीफ को जानो।
मट्टी जिस्मे कसीफ पेहचानो॥
जाने मन! तू तो मिहरे[16] ताँबां है।
एक जैसा सदा दरखशां[17] है॥
जैहल[18] से है तू कैद कालेब[19] में।

१३ पानी, जल १४ प्रकाश १५ घड़े, ठलिया १६ प्रकाश करने वाला सूर्य १७ चमकने वाला, प्रकाशस्वरूप १८ अविद्या, अज्ञान १९ शरीर

तुझ में सब कुछ है, तू ही है सब में॥
गो यह जिस्मे लतीफ पानी सां।
बदलता है हमेशा ही अबंदान[20]॥
पर तेरी ज़ाते .कुदसे[21] वाला का।
बाल हरगिज़ न हो सका वीङ्गां[22]॥
मेरे प्यारे! तू आफताब ही है।
.अक्स मुतलक़ नहीं, तू आप ही है॥
रूये[23] अनवर ज़रा दिखा तू दे।
पानी उड़ता है, .अक्स हो कैसे?॥
कैसा पानी, कहां तनासुख[24] हो?।
मैं खुदा हूं, यक़ीन रासिख[25] हो॥
.इल्मे औप्टिक्स[26] से गर करो कुछ गौर।

२० बहुत शरीर, देह २१ तेरे शुद्ध स्वरूप (आत्मा) २२ टेढ़ा २३ प्रकाश वाला मुख (अपना स्वरूप) २४ आवागमन (मरना और फिर जीना) २५ पक्का, मजबूत २६ नजर, दृष्टि का शास्त्र

तो सुबू, आब मिहर[27] से नहीं और ॥
यह ज़मीन और सारे सय्यारे[28]।
चशमा-ऐ[29]-नूर से नहीं न्यारे[30] ॥
नैवूलैर[31] मसले को जाने दो।
एक सीधी सी बात यूं देखो ॥
यह जो आबो सुबू-ओ-सैहरा[32] है।
रात काली में किस ने देखा है॥
चशम जब आफताब ने डाली।
पानी बर्तन दखाये बनमाली ॥
आप बर्तन है, आप पानी है।
क्या अजब राम की कहानी है ॥
आप मज़हर[33] है, साया अफ़गन[34] आप।

२७ पानी और सूरज २८ आकाश के तारे इत्यादि २९ प्रकाश के धाम, खज़ाने से ३० जुदा ३१ आकाश के तारे इत्यादि की विद्या के भेद ३२ जंगल ३३ जगह ज़ाहर होने की ३४ प्रतिबिम्ब डालने वाला

साया मज़हर कहां ? है आप ही आप ॥
क्या तहय्युर[35] है, हाये हैरत है।
ग़ैर से क्या ग़ज़ब की ग़ैरत है ॥
कैसी माया, यह कैसा तलिस्म[36] है।
दुन्या तो हैरते मुजस्सम[37] है ॥
अब ज़रा और ग़ौर[38] कीजेगा।
यह अचंबा अजीब है माया ॥
कहिये आश्चर्य क्या कहाता है।
इन्तहा का मज़ा जो आता है ॥
इन्तहा का मज़ा है आनन्द घन।
यैनी ख़ुद राम सच्चिदानन्द घन ॥
पस यह माया भी आप ही है ब्रह्म।
नाम रूप हैं कहां ? है ख़ुद ही ब्रह्म ॥
उमंड आयी हो गर स्पाहे[39] वैहम।

३५ आश्चर्य ३६ जादू ३७ आश्चर्यरूप ३८ विचार, सोच
३९ भ्रमकी फौज (लश्कर)

फिर भगा दो उसे, न जाना सैहम[४०] ॥
माया माया की कुछ नहीं दरअसल ।
वसल कैसे हो, अहद[४१] में कब फसल ॥
इस को देखें बइतबारे .अबद[४२] ।
तब तो माया यह जैहल[४३] है बेदर्द ॥
प्राण, अव्यक्त[४४] और अविद्या भी ।
.इल्लत[४५] .औला हैं नाम इस के ही ॥
ख्वाब[४६] ग़फलत है घन सषुप्ती है ।
दीद कारण भी यह कहलाती है ॥
.आलमे ख्वाब और बेदारी[४७] ।
इसही चशमे से होगये जारी ॥

४० डर, भय ४१ अद्वैत, एक ४२ जीव के लिहाज़से, जीव दृष्टिसे ४३ अविद्या, अज्ञान ४४ अप्रकट कारण, अमूर्तीमान ४५ सबसे पैहिला कारण, इत्यादि ४६ स्वप्न ४७ जाग्रत

२. कारण शरीर.

जॉग्रफी में नक्शा दर्या का।
ज्रूं शजर सरनगूं है दखलाया॥
गरचिः निसबत शजर से रखता है।
जड़ को ऊंचा तने से रखता है॥
(ऊर्ध्वं मूल मधा शाखा, गीता)
वेसें दर्या की बरफ जड़ कायम।
रहती कैलास पर ही है दायम॥
मुतफ़ा वेग्र की तरह कारण।
मुंजमिद सर्द ठोस ज़रींन तन॥
सख्त मस्ती गुरूर से भर्पूर।
नेसती, लाशरीक, हर्कत दूर॥

१ भूगोल २ वृक्ष ३ शिर के बल, उलटा मुंह ४ जड़ ५ मिस्ल ६ ऊंचे उठी हुई अर्थात ऊंची जड़ वाले की तरह ७ जमा हुवा ८ सुनैहरी तन वाली ९ अव्यक्त

२ सूक्ष्म शरीर.

इस ही कारण शरीर से पैदा।
यह लतीफो कसीफ[10] जिस्म हुवा॥
ऊञ्चे कोहों[11] पै बर्फ सारे है।
सोने चान्दी की झलक मारे है॥
पिघलते पिघलते वर्फ यही।
पर्वतों पर वनी है गंगा जी॥
इस से शफ्फाफ नदीयां वेहती हैं।
खेलती जिन में लैहरें रहती हैं॥
कोह का, फूल फल का, पत्तों का।
साया लैहरों पै लुतफ है देता॥
नन्हे, नन्हे[12] यह सब नदी नाले।
वर्फ ऊञ्ची के बालके वाले॥
देनी निसबत इन्हें मुनासब है।

१० सूक्ष्म और स्थूल ११ पर्वत १२ छोटे·छोटे

देह सूक्ष्म सें। अैन वाजव है॥
देह सूक्ष्म है "फिक्रो .अक्लो होश।
इमसाज़ो खियालो गुफतो नोश[१३]"॥
.आलमें ख्वाब में यही सूक्ष्म।
चलता पुरज़ा बना है क्या चम खम॥
टेढ़े तिर्छे कलोल करता है।
चोहल पोहलों में क्या लचकता है॥
वर्फ जड़ जो शरीर कारण है।
ज़ेरे अन्वारे[१४] मिहरे रौशन है॥
देह सूक्ष्म इसी से ढलता है।
जूं पहाड़ी नदी निकलता है॥

१३ .अक्ल होश तमीज़ ख्याल, वाणी और श्रोत्रादि इन्द्रिय यह सब अन्तःकरण सूक्ष्म शरीर कहलाता है .१४ प्रकाशस्स्वरूप सूर्य (आत्मा) के तले है

४ स्थूल शरीर.

ख़्वाब गुज़रा तो जागृत आई।
नदी मैदान में उतर आई॥
जूहीं सूक्ष्म ने क़दम यहां रक्खा।
गदला खाकी कसीफ़[15] जिस्म लीया॥
या कहो यूं कि जिस्मे नाज़ुक[16] ने।
सूफ़ मोटे के कपड़े[17] पेहने॥
शव को शीरीं वदन जो सोता है।
जामाँ तन से उतार देता है॥
जब ज़मिस्तां[18] की रात आती है।
नंगा दरया को कर सुलाती है॥
दरया करके मुशाहदा[19] देखा।
खिर्क़ा[20] हर साल में नया ही था॥
ठीक इस तौर पर ही, जिस्मे लतीफ़।

१५ मोटा, स्थूल १६ सूक्ष्म शरीर १७ कपड़ा, लबास १८ शरद ऋतु, शीत काल १९ दृष्टि, नज़र करना २० लबास

बदलता पैरहन[21] है जिस्मे कसीफ ॥
यूं तो हर शब लबासे ज़ाहर को
दूर करता है बदने *दरबर को ॥
इल्ला[22] फिर सुबह पैहन लेता है।
स्थूल देह में फिर आन रहता है ॥

२१ पोशाक २२ किन्तु, लेकिन * अपने ऊपर के शरीरको

---

९. आवागमन.

लैक मरते समय यह जिस्मे लतीफ।
बदलता मुतलैक़न[23] है जिस्मे कसीफ ॥
जब पुरानी यह हो गयी पोशाक।
दे उतारी यह फैंक दी पोशाक ॥
कैंचली चोला को उतार दीया।
ओर ही जिस्म फिर तो धार लीया ॥

२३ बिलकुल

इस को कहते हैं हिंदू आवागवन।
बदलना जिस्म का है आवागवन॥

---

९ आत्मा.

मिहर जो वर्फ़ पर दरख़्शां था।
साफ़ नालों पे नूर अफ़शां था॥
वही स्थूल रुदे मैदान पर।
जल्वा अफ़गन था, आबे हैरान पर॥
एक दरया के तीन मौक़ों पर।
मिहर है एक हाज़रो नाज़र॥
बलकि दुन्या के जितने दरया हैं।
तैहते परतौ सभों के सेहं जा हैं॥
आत्मा एक तीन जिस्मों पर।

१ सूरज २ चमकीला ३ प्रकाश छिड़कता था ४ मैदान की नदी (दरया) ५ प्रकाश डालने वाला ६ प्रकाश के तले ७ तीनों स्थान

जल्वा अफ़गन है, हाज़रो नाज़र ॥
सारी दुन्या के तीन जिस्मों पर।
एक आत्म है बातनो ज़ाहर[८] ॥
आना जाना नहीं आत्म में।
यह तो मफ़रूज़[९] सब हूये तन में॥
आत्मा में कहां की आवागवन।
आये किस जा: को? और जाये कौन?॥

८ अन्दर और बाहर ९ कल्पित, फ़र्ज़ कीये गये

---

७ तीन वर्ण.

असल को अपने भूल कर इन्सान।
भूला भटका फिरे है, हो हैरान॥
मरता खरगोश जबकि जाता है।
झाड़ी झाड़ी में सिर छुपाता है॥
है तअक़्क़ुब[१] में वहम का सय्याद[२]।

१ पीछे जाना, भागे हुवे का पीछा करना २ शिकारी

छोड़ता ही नहीं ज़रा जल्लाद ॥
गाह बदने कसीफ में आया ।
गाह जिस्मे लतीफ में धाया ॥
कभी कारण में है पनाहँ गज़ी ।
वैहम से बन गया है वाख्तः दीन ॥

३ मारने वाला या पोस्त उतारने वाला ज़ालम ४ कभी
५ पनाह (आश्रय) लेने वाला ६ हारा हुवा, थका मान्दा

---

८ शूदर (क्षुद्र)

जिस ने स्थूल में निशस्त करी ।
"जिस्म वेरूं हूं" ठान *जी में ली ॥
नक़्दे उलफत को बदन में रक्खा ।
.ऐशो .इशरत हवासँ में चक्खा ॥
करलीया जिस्म अपना पाया-ए-तख्त ।
खाने पीने में समझ रक्खा बख़्त ॥

१ बाह्यदेह २ इन्द्रय ३ नसीबा * दिल

न रक्खी इल्मो फज़ल से कुछ गर्ज़ ।
एक तन परवरी[4] ही समझा फर्ज़ ॥
गर्ज़ यह थी, चला जो चाल कहीं ।
कि न हो जिस्म को ज़वाल[5] कहीं ॥
जिसको परवाह नहीं है इज्ज़त की ।
है फक़त आर्ज़ू[6] तो लज्ज़त की ॥
डाल कर लङ्गरे अनानीयत[7] ।
समझा दरया कसीफ जमीयत[8] ॥
वे दरम[9] देह कसीफ का चाकर ।
इस को कहना ही चाहे शूदर ॥

४ केवल प्राण रक्षा या देहका पालन पोषन ५ गिरना, घटना ६ इच्छा, ख्वाहिश ७ अहङ्कार का लंगर ८ कट्ठा किया हुवा खज़ाना ९ एक पैसा भी जो दाम न रखता हो, एक कौड़ी क़ीमत वाला भी नहीं जो हो

९ वैश्य.

डेरा जिस ने लतीफ में रक्खा।
राजधानी उसे बना बैठा॥
कह रहा है ज़ुबाने हाल से वह।
"देह सूक्ष्म हूं मैं" जो हो सो हो॥
जो ठठोली से क़ाबू आता है।
ताना खञ्जर सा चीर जाता है॥
भूका काटेगा नंगा रैह लेगा।
ज़ाहरी पीड़ दुःख सैह लेगा॥
मौक़्या शादी का हो, कि मरने का।
मर मिटेगा नहीं वह डरनेका॥
घर गिरौ रख के खर्च करदेगा।
चोटी क़र्ज़े से भी जकड़ देगा॥
कोई मेरे को बोली मार न दे।

१ अपनी वाणी अर्थात वाणी और अमल से

जिस्म सूक्ष्म को गोली मार न दे ॥
फ़िकर हर दम जिसे यह रहती है।
देखूं क्या खल्क़ मुझ को कहती है ॥
जान जिस की है निन्दा उस्तति में।
हमनशीनों से बढ़ के इज़्ज़त में ॥
पल में तोला, घड़ी में माशा है।
पैण्डुलम की तरह तमाशा है ॥
राये लोगों की मिसले चौगां है।
गेन्द सा दौड़ता हरासां है ॥
रात दिन पेचो ताब है जिस को।
नंग का इज़तराब है जिस को ॥
रहता इसी उधेड़ बुन में है।
पासे नामूस ही की धुन में है ॥

२ खल्क़त, लोग ३ बराबर वाले साथीयों से ४ घड़ी के नीचे जो एक धातू का टुकड़ा लटकता रहता है ५ गुल्ली डंडा के खेल की तरह ६ घबराहट, बेक़रारी ७ इज़्ज़त का खियाल, डर

जीता औरों की राये पर जो है।
ख्याले वैहशर्त फ़ज़ाये पर जो है॥
क़ियास में जिस के टेढ़ा वेढ़ापन।
तेवा जिस की सदा है मुतलंव्वन॥
गाह चढ़ती है, गाह घटती है।
रुख पहाड़ी नदी वदलती है॥
ऐसा वैहमी मज़ाज है जिस का।
देह सूक्ष्म से काज है जिस का॥
वैश्य कहना वजा है ऐसे को।
शकलो सूरत में ख्वाह कैसे हो॥

८ नफरत बढ़ानेवाले ख्याल ९ प्रकृति (तबीयत) १० नाना रंग बदलने वाली

---

१० क्षत्रिय.

जिस की निष्ठा है देह कारण में।

है, अचल बज़्म में हो या रण में ॥
दुन्या हिल जाये पर ना हिलता है।
मुस्तक़िल .अज़्म क़ौल पक्का है ॥
ख्वाह तारीफ़ ख्वाह मुज़म्मत हो।
शादी और ग़म पै जिस की .क़ुदरत हो ॥
लाज से भै जिसे ना असला हो।
दो दिली से न काम पतला हो ॥
जो नहीं देखता है ख़ल्क़ को।
मर्दे नज़र वाले मुबारक हो ॥
राये पर और की न चलता है।
क़ौम को आप जो चलाता है ॥
लोग दुन्या के बन मुख़ालफ़ सब।
जान लेने को आयें उस की जब ॥

१ सभा २ मज़बूत इरादा ३ निन्दा, हक़ारत ४ ताक़त ५ बिलकुल ६ ख़ल्क़त, लोग

ज़ेहर सूली सलीब[7] या फांसी ।
हंस के सैहता है जैसे हो खांसी ॥
जिस को तारीफ की नहीं परवाह ।
खाली तारीफ से ही वह होगा ॥
पैर पूजेंगे, नाम पूजेंगे ।
लोग सब उस की बात बूझेंगे[8] ॥
उस को अवतार करके मानेंगे ।
लोग जब उस की बात जानेंगे ॥
धर्म क्षत्रिय है, यह मुबारक धर्म ।
बरतर अज़ ज़ोफ़ो नंगो आरो शरम[9] ॥
आज इस धर्म की ज़रूरत है ।
धर्म यह बरतर अज़ कुदूरत[10] है ॥
नाम को ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो ।

७ सूली ८ समझेंगे ९ लज्जा और शर्म १० मलिनता, गदला पन

नाम को वैश्य हो कि शूदर (क्षुद्र) हो ॥
सब को दर्कार है, यह क्षत्रिय धर्म।
जान नेशन[11] की है, यह क्षत्रिय धर्म ॥
इस को कहते हैं लोग कैरैक्टर[12]।
देह कारण को जान, इस का घर ॥
उस तलेटी पै रहता है क्षत्रिय।
राना पर्ताप और सेवा जी ॥
जिस से नादियां तमाम आती हैं।
वञ ब्योपार को सजाती हैं ॥
है चमक दमक और आबो ताब।
यह बलन्दी है गोया आ़लम ताब[13] ॥
इस ज़मीन पर यह है बलन्द[14] तरीं।
मसनद[15] शाही को है ज़ेब यहीं ॥

११ क़ौम १२ श्रेष्ट प्रकृति, उत्तम चालचलन १३ कुल जगत को रौशन करने वाली (प्रकाश देने वाली) १४ बहुत ऊंची १५ गद्दी, तख़्त

चशमा व्यवहार का है सम्भाला।
राज है उस का, मरतवा .आला॥
जोश है और खरोश है जिस में।
शूर्मा पन की होश है जिस में॥
शेरे नर को न लाये खातर में।
तैहलका डाले फौजो लशकर में॥
गरज से कोह को हलाता है।
दिल बब्बर[16] का भी दैहल जाता है॥
जांक[17] दरजौक, फौज दल वादल।
मिथ्या लैशै[18] है, हेच और बातुल[19]॥
धर्म की आन पर है जान .कुर्बान।
[20]गीदी बन कर न हो कभी हैरान॥
वही क्षत्रिय है, राम का प्यारा।

१६ बड़ा भारी शेर १७ झुण्ड के झुण्ड १८ कुच्छ चीज़ नहीं, तुच्छ १९ झूठी २० कमज़ोर दिल

देश पर जिस ने जान को वारा ॥
मस्त फिरता है ज़ोर में, बल में।
कौन्द जाता है बिजली बन, पल में ॥
तोप बंदूक़ की सदो[21] बलन्द से डर।
उङ्गली लेता नहीं वह कान में धर ॥
कपकपी में नहीं कभी आता।
लाले जान के पड़ें, नहीं डरता ॥
गरचिः घायल हो, फिर भी सीनासपर[22]।
शोक करता नहीं, ना कुच्छ डर ॥
तीरो तलवार की दना दन में।
अभिमन्यू[23] सा जा पडे रण में ॥
जां बाज़ी ही जिस की राहत[24] हो।
जंगो ज़ोरावरी ही फरहत[25] हो ॥

२१ आवाज़ २२ हौंसला कीये हुवे (छाती मज़बूत कीये तय्यार) २३ अरजन के बेटे का नाम २४ आराम २५ खुशी

रण हो, घमसान का क़यामत हो।
बला का हंगामाँ, और शामत हो॥
ज़ख़्म ज़ख़्मों पै ख़ूब खाता है।
पैर पीछे नहीं हटाता है॥
सख़्त से सख़्त कारज़ारो रज़्म।
शान्ति दिल में हो, अज़्म हो विलजज़्म॥
जिस्म हर्कत में, चित्त सौकन हो।
दिल तो फ़ारग़ हो, कारकुन तन हो॥
हर दो जानब समा भयङ्कर था।
तुन्द मोरो मलख़ सा लशकर था॥
हाथी घोड़ों का, शूर वीरों का।
शंख बाजे का, और तीरों का॥
शोर था आंसमां को चीर रहा।

२६ युद्ध, लड़ाई २७ महाभारत २८ बड़े मज़बूत (पक्के) इरादे वाला २९ स्थिर, अचल ३० अनगिनत, बेशुमार, अगणेय

गर्द से मिहर बन फ़कीर रहा ॥
अफ़रा तफ़री में और गड़बड़ में ।
वह दलावर कमाल की जड़ में ॥
क्या दखाता जवान मर्दी है ।
क्या ही मज़बूत दिल है, मर्दी है ॥
गीत ठण्डक भरा सुनाता है ।
फ़िलसफ़ी[31] क्या अजब बताता है ॥
33 { जिस के नुक़तों को ता अबद[32] कामल ।
सोचा चाहेंगे ग़ौर से मिल मिल ॥ }
सख़त शोरों[34] में शान्त यह सुर है ।
सच्चा यह मन चला बहादर है ॥

३१ शास्त्र (ज्ञान) ३२ हमेशा तक ३३ इस जगह कृष्ण से मुराद है ३४ शोरों में

११. ब्राह्मण.

कोह[1] पर शिव नज़र जो आता है ।

१ पर्वत

वर्फ़ को आब कर वहाता है ॥
जिस से कैलास ही न तावां है ।
रौनक़े वेहर और वियाबां है ॥
वैश्य क्षत्रिय को और शूदर को ।
दे है प्रकाश किह-ओ मिहतर को ॥
ओम आनन्द आत्मा चैतन्य ।
तीनों देहों में है जो नूर अफ़गन ॥
निष्ठा इस में है जिस की कि "यह मैं हूं"
"शिव हूं, सूरज हूं, खास शङ्कर हूं"
रूये आलम पै नूर अफ़गन है ।
वह ब्राह्मण है, वह ब्राह्मण है ॥
मुक्त खुद, दर्शनों से मुक्त करे ।
नूर और ज़िन्दगी से चुस्त करे ॥

२ जल ३ चमकीला ४ छोटे और बड़े को ५ प्रकाश, (तेज) डालने वाला ६ कुल जहान पर

तीन गुण से परे है, पर सब को ।
नूर देता है, ख्वाह क्या कुच्छ हो ॥
जिस को फरहत न दे कभी पैसा ।
ब्राह्मण है वोही जो हो ऐसा ॥
खड़ा करता है नहीं दस्ते दुआ ।
है ग़नी, ज़ात ही में वह धनी हुवा ॥
मांगता ख्वाब में भी कुछ न है ।
उस की दृष्टि से काञ्च कुंदन है ॥
(विष्णु को लात मार देता है।)[१०]
वह ब्राह्मण है, वह ब्राह्मण है ॥
तीनों अजसाम से गुज़र कर पार ।
[११]यां अदू है नहीं, न कोई यार ॥
हुसन में अपने खुद दरखशां हूं ।

७ मांगने के लीये हाथ पिसारना ८ अमीर बड़ा ९ स्वस्वरूप १० भृगू से यहां मुराद है ११ यहां से मुराद है १२ दुशमन, शत्रू १३ रौशन

मिहरे तॉबां हूं, मिहरे ताबां हूं ॥
मिह्नतें क्या मजे़ से खाता हूं।
मौत चटनी मिर्च लगाता हूं ॥
मेरी किरणों में हो गया धोका।
आबे का था सुराबे दुन्या का ॥
क़िलअ़ दुःखों का सर कीया, ढ़ाया।
राज अॅफ़लाको मिहर पर पाया ॥
हस्ते मुतलक़, सरूरे मुतलक़ पर।
झंडा गाड़ा, फुरेरा लेहराया ॥
कुच्छ न बिगड़ा था, कुच्छ न सुधरा अब।
कुच्छ गया था न, कुच्छ नहीं आया ॥

१४ चमकीला सूर्य १५ पानी १६ मृग तृष्णा के जल का
१७ आकाश और सूर्य १८ सत्य स्वरूप, १९ आनन्द स्वरूप

---

१२ दुन्या की हक़ीक़त

क्या हैं यह? किस तरह हूये मौजूद?।

इक निगाह पर सब की हस्ती-ओ-बूद[1] ॥
हां जगत है, सबूत दीजेगा ।
इन्द्रियों पर यक़ीन न कीजेगा ॥
(१) बेशक आती नज़र है दुन्या पर ।
है कहां आप ही न देखें गर ॥
माहो माही-व-शाहो ज़रींन ताज[2] ।
अपनी हस्ती को हैं तेरे मोहताज ॥
बर्क़[3] मौजूद है सभी शै में ।
गो हवासों के हो न हलके[4] में ॥
व़क्ते अज़हार, बर्क़ शोखीबाज़ ।
खुद ही मुसबत है, खुद ही मनफी नाज़ ॥
तेरी माया है बर्क़ *वश चञ्चल ।
यारों आगे कहां चलें छल बल ॥

१ स्थिती और होना २ चान्द सूर्य (अथवा मछली पर्यन्त सब जीव जन्तु) ३ बिजली ४ घेरा, हद ५ दृश्य, ज़ाहर होने के समय * बिजली की तरह

तू इधर देखता है आंख उठा ।
तू उद्धर बन गया कोहो सहरा[६] ॥
(२) ख़्वाब में हैं ख़्याल की दो शान् ।
जुज़्वी[७] कुल्ली[८] "यह एक मैं" "यह जहान्"
"मैं हूं इक मर्द" शाने जुज़्वी है ।
"जुमला आलम," यह शाने कुल्ली है ॥
ख़्वाबे पुख़्ता शुदा है बेदारी ।
जाग! सारे तिरी है गुलकारी[९] ॥
तूही शाहद[१०] बना है, तू मशहूद[११] ।
शान तेरी है आस्माने कबूद[१२] ॥
ख़्वाब तेरा, ख़ियाल तेरा है ।
जो ज़मीन-ओ-.जमान् ने घेरा है ॥
जल्वा तेरा यह, अम्बसाती[१३] है ।

६ पर्वत और जंगल ७ व्यष्टिः ८ समष्टिः ९ बाग़ बूटा १० गवाह, साक्षी ११ हाज़र कीया गया, देखा गया १२ नीला आकाश १३ अज्ञान अथवा माया की विक्षेप शक्ति

वीज माया ही फैल जाती है ॥

क्या यह दुन्या खियाल मात्र है ।

क्या यह सच मुच खियाले खातिर[14] है ॥

अगर तुझे इसमें शक नज़र आवे ।

कुछ भी विन खियाल के दिखा तो दे ॥

(मन वृत्ति (खियाल) के फ़ुरने वगैर कोई भी शै महसूस[15] नहीं होसकती)

हां यह ख्वावो खियाल माया है ॥

'एक' कसरत[16] में आ समाया है ॥

(२) मरना जीना यह आना जाना सव।

ठैहरना चलना फिरना गाना सव ॥

सव यह करतूत जान माया की।

मिहरे तावां की एक छाया की ॥

पुरँ[17] ज़िया आफतावे रौशन राये।

१४ दिल (मन) का ख्याल १५ भान १६ नानत्व १७ प्रकाश से भरपूर

गंग लेहरों पे नाचता है आये ॥
साक्षी सूरज कहीं न हिलता है।
आब वेहता है, यूं वह फिरता है ॥
छोटी बूंदों पे नूर सूरज का।
क्या धनुष बन गया है अचरज सा ॥
शीश मंदर में शमा जो रक्खा।
क्या समां हो गया चरागां का ॥
फित्नेनागर आयीना में चश्मे निगार।
झूट है, गो हैं यार से दो चार ॥
यह अविद्या में जो पड़ा आभास।
ब्रह्म कहलाया इस से जीव और दास ॥
यूं जो संसर्ग से हुवा अध्यास।
सानी यकता का ला बढ़ाया पास ॥
माया आयीनाः कैसी खुर्सन्द है।

१८ दीपक १९ फसाद डालने वाला २० अन्दर परवेश २१ दूसरा २२ खुश

मज़्हरे[23] राम सच्चिदानन्द है ॥
कुच्छ नहीं काम रात दिन आराम।
काम करता है फिर भी सब में राम ॥
क्यों जी जब आप ही की माया है।
दिल पै अन्दोह[24] क्यों यह छाया है ॥
हेच[25] दुन्या के वास्ते फिर क्यों।
भाई भाई से तीरह खातिर[26] हों ? ॥
खटका कैसा ? झजक खतर क्या है ?।
बीमो[27] उम्मेद कैसी ? डर क्या है ? ॥
बादशाह का बुरा जो चाहता है।
सख्त जुरमे कबीरह[28] करता है ॥
देखियेगा हक़ीक़ी शाहंशाह।
राज जिस का है माही[29] से ता माह ॥

२३ दिखाने वाली, .जाहर होने का स्थान २४ ग़म, फ़िकर २५ नाचीज़, तुच्छ २६ खराब दिल २७ डर २८ बड़ा भारा पाप २९ मछली से चान्द तक

तेरे नस में रगों में नाड़ों में।
ऐहले[30] सौदागरी है राहों में॥
जिस का ऐहदे हकूमते बर्कत।
चैन दे सिर में अक़ल को हर्कत॥
ऐसा सुलतान अज़ीमे आली जाह।
तेरा ही आत्मा है जाये पनाह॥
ऐसे सुलतां से जो हुवा ग़ाफ़ल।
हाये ख़ुदकुश[31] है शाहकुश[32] क़ातल॥
क्यों जी कुछ शर्मो[33] और भी है तुम्हें।
क्यों यह कङ्गलों से दान्त लिलके हैं?॥
रींगना क्यों? कमर यह टूटी क्यों?
वाये क़िस्मत तुम्हारी फूटी क्यों?॥
रास्ती के गले छुरी क्यों है?।

३० ख़ून दम इत्यादि ३१ आत्मघात करने वाला ३२ आत्म स्वरूप रूपी बादशाहको मारने वाला ३३ शर्म, हया

ह्क़[34] ही जीतेगा, सत की है जै॥
क्यों ग़ुलामी क़बूल की तुम ने।
दर बदर ख्वार भीक ली तुम ने?॥
थी यह लीला रची अनोखे ढब।
खेल में भूल क्यों गये मनसब[35]?॥
ताजे नूरी को सिर से फैंक दीया।
टोकरा रंजो ग़म का सिर पे लीया॥
अब जलालो जमाले ज़ात सम्भाल।
उठो, शब सा हों सब विषय पामाल॥
नैय्यरे आज़म[36] हो, तुम तो नूर फ़िगन[37]।
खिदमते माया में न ढूंडो धन॥
वैहम का मार[38] आस्तीन से खोल।
मत फिरो मारे मारे डाँवा डोल॥

३४ सत्य ३५ मर्तबा, दर्जा ३६ सूरज ३७ प्रकाश डालने वाले ३८ सांप

१३ ज़ाते बारी.

लैक माया यह आ गयी क्योंकर ?
रूये .आलम सजा गयी क्योंकर ?
ज़ाते बेहद को क्यों शरीक लगी ?
बे बदल हुसन को क्यों यह लीक लगी ?
बैदर को गैहन यह लगा कैसे ?
ऐसा ज़ल्ले ज़मीन पड़ा कैसे ?

१ ईश्वर, असली स्वरूप २ जहान्, दुन्या ३ एक अद्वितीय ४ चौदश का चन्द्रमा ५ ग्रहण ६ साया, परछाई पृथिव की

---

१४ जवाब.

(१) ऐ ज़मीन दोज़ चशमे दुन्या बीं ! ।
तू ही खुद है बनी ख़स्फ़ यहीं ॥
चान्द राहू ने जा न पकड़ा है ।

१ पृथिव के साथ एकसार रहने वाली २ ग्रहण की छाया, ग्रहण

वेह्म तेरे ने तुझ को जकड़ा है ॥
ज़ाते [3]बेहद सदा है ज़ूं की तूं ।
उस में रहो [4]बदल है यां न यूं ॥
दायें बायें इधर उधर हर सूं [5] ।
आप ही आप एक रस है हू [6] ॥
ईनूं [7] आनूं [8], चूं [9] चुनूं [10], चुनीं [11]-ओ चुनां [12] ।
लौट आते हैं वहां से हो हैरान ॥
[13]बरतर अज़ फ़ह्मो अक़्लो होशो गुमां ।
[14]लामकां [15]लाज़मां [16]नशां बेमकान ॥
(२) रूये [17]ख़ुर्शीद पर [18]नक़ाब नहीं ।
दुपैहर को कोई [19]हिजाब नहीं ॥

३ अद्वैत स्वरूप ४ विकार ५ तरफ ६ ईश्वर, ब्रह्म ७ यह ८ वह ९ क्यों १० किस तरह ११ ऐसा १२ और वैसा १३ समझ होश और अक़्ल से भी दूर १४ देश रहित १५ काल रहित १६ चिन्ह रहित, निराकार १७ सूरज के मुख पर १८ पर्दा १९ पर्दा

आब[20] हायल नहीं सहाब[21] नहीं।
देखने की किसी को ताब नहीं॥
मौजज़न[22] हो रही है उर्यानी[23]।
तिस पे पर्दा है तुरफ़ हैरानी॥

(३) जूं रसन[24] में पदीदे सूरते मार[25]।
मुझ में माया-नमूद है तूमार[26]॥
यह स्वरूपाख्यान[27] है अज़हार।
जान मुझको, रहे न यह पिंदार[28]॥
और संसर्ग[29] को जो माना था।
तब तलक ही था, जब न जाना था॥
मारे[30] मौहूम में मोटाई तूल[31]।
तो वही है जो थी रसन में मूल॥

२० चमक ढांपे हुये नहीं २१-बादल, पर्दा २२ लैहरें मार रही है २३ नंगा पन २४ रस्सी २५ सांप की सूरत नज़र आती है २६ ढेर, लम्बी गाथा, वैद्य २७ अपने स्वरूप का मर्म २८ ग़रूर, समझ २९ आवेश ३० कल्पित सांप ३१ लम्बाई

यह हक़ीक़ी रसन का तूलो अर्ज़[३२] ।
मारे मौहूम में हो आया फ़र्ज़ ॥
इस तरह गरचिः माया मिथ्या है ।
उस में संसर्ग सत्त ही का है ॥
दूर रहते हैं मारे देहशत[३३] के ।
नागनी काली से सभी हट के ॥
पर जो आकर क़रीब[३४] तर देखा ।
बेख़तर[३५] हो गये, मिटा खटका ॥
माहीयत[३६] पर निगाह गर डालो ।
असले हस्ती को खूब सम्भालो ॥
कैसी माया, कहां हुवा संसर्ग? ।
कब थी पैदायश-व-कहां है मर्ग[३७]? ॥
काल वस्तु का देश का मुझ में ।

३२ लम्बाई, चौड़ाई ३३ डर, भय ३४ बहुत नज़दीक
३५ निडर, निर्भय ३६ असल वस्तू, हक़ीक़त ३७ मृत्यु

नाम होगा न, है, हुवा मुझ में ॥
कौन तालिब[38] हुआ था, मुर्शद[39] कौन? ।
किस ने उपदेश करा, पढ़ाया कौन? ॥
किस को संशय शकूक उठे थे? ।
कब दलायल से हल फिर तै[40] हूये? ॥
हस्ती-ओ-नेस्ती नहीं दोनों ।
रुस्तगारी[41]-ओ-क़ैद क्योंकर हो? ॥
क्या .गुलामी कहां की शाही है? ।
.आली जाही कहां? तुबाही है ॥
मैं कहां? तू कहां सग़ीर[42]-ओ-कबीर? ।
किस का सैय्यादो[43] दाम दाना असीर[44]? ॥
किस की वहदत[45] और उस में कसरत क्या? ।
क्या खुदाई वहां .इबादत[46] क्या? ॥

३८ जिज्ञासु ३९ गुरू ४० साफ हल हूये ४१ आज़ादि, मुक्ति ४२ छोटा, बड़ा ४३ शिकारी और जाल ४४ क़ैद ४५ एकता ४६ बन्दगी

किस की तशबीह[47] और मुशब्बाह[48] क्या?।
जेह्ल[49] क्या और .इल्म हो कैसा?॥
कैसी गंगा यहां पै राम कहां?।
.जाते मुतलक़ में मेरी नाम कहां?॥
कब खिली चान्दनी? है ख्वाब कहां?।
रात कैसी हो? आफताब कहां?॥
कब रसन था? यहां पै मार नहीं।
कोई दुशमन हुवा न यार नहीं॥
अ.क्स इस जा नहीं है, .ऐन नहीं।
नुकता पैदा नहीं है, ग़ैन नहीं॥
कब जुदा थे? न पाई बीनाई[50]।
खुद खुदाई है, बल बे रँगनाई[51]॥
.कुछ बियान कीजेगा हाले .जात।

४७ हमशकल दृष्टान्त ४८ दृष्टान्त दीया हुआ, बराबरी वाला ४९ अज्ञान ५० चक्षु दृष्टि ५१ बे रंगी अथवा रंगामेज़ी

हाथ कहने में आये क्यों कर बात? ॥
कब कंवारी के फँदे में आवे।
लज़्ज़ते वँसल कौन बतलावे? ॥
दँस्पना पकड़ता है अँशया को।
कैसे पकड़े जो उङ्गली काँबज़ हो? ॥
अक़ल बुद्धि हवास मन सारे।
मिसल चिमटा हैं, दुन्या अङ्गारे ॥
आत्मा अक़ल बुद्धि मन सब को।
क़ाबू रखता है, हाथ चिमटे को ॥
दुन्यवी शै पे अक़ल का बस है।
आगे शुद्ध आत्मा के खुद बस है ॥
अक़ल से ब्रह्म चाहो पेहचाना।
हाथ चिमटे के बीच में लाना ॥

५२ समझ में आवे ५३ विषयानन्द ५४ चिमटा ५५ वस्तू
५६ जो उङ्गली चिमटा को खुद पकड़े हुवे हो

ग़ैर मुमकिन महाल ही तो है।
दम जो मारे मजाल किस को है?॥
नुत्क़! मशहूर है तू कार आरा।
राम तक पहुंचने का है यारा?॥
नुत्क़ ने ज़ोर जान तक मारा।
गिर पड़ा आख़िरश थका हारा॥
आंख छीने से अपने बाहर आ।
ढूंड बैठी है बाग़ बन सहरा॥
छान मारा जहान् को सारा।
कैसे देखियेगा आंख का तारा?
ऐ .ज़ुबान्! मोम तुझ से है ख़ारा।
कुच्छ पता दे कहां पे है दारा?॥
अपना सब कुछ .ज़बान् ने वारा।

५७ वाणि बोलने की शक्ति ५८ काम पूरा करने वाली ५९ बल ६० भूर ६१ जंगल ६२ पत्थर ६३ दारा बादशाह से भी मुराद है और अपने घर से या स्वरूप से भी मुराद है

चढ़ गया उड़ गया गले पारा ॥
यूं रोता क़ल्म है बेचारा ।
लिखते लिखते ग़रीब पै मारा ॥
ऐ क़ल्म, नुतक़! ऐ ज़बान, दीदार! ।
ज़िद्दैन में मरा, है निस्तारा ॥
आंख की आंख, जान की है जान ।
नुतक़ का नुतक़ प्राण के हैं प्राण ॥
कौन देखे यहां दिखाये कौन? ।
कौन समझे यहां सुनाये कौन? ॥
उड़ गया होशो अक़ल बनजारा ।
ओस सां कर सका न नज़्ज़ारा ॥
राम मीठा नहीं, नहीं खारा ।
राम खुद प्यार है, नहीं प्यारा ॥

६४ द्वंद ६५ छुटकारा ६६ शबनम ६७ किसी वस्तू का देखना

राम हलका नहीं, नहीं भारा।
राम मिलता नहीं, नहीं न्यारा॥
खंड टुकड़ा नहीं, नहीं कियारा।
खियाले तक़्सीम[६८] पर चला आरा॥
राम है तेग़ तेज़ की धारा।
खेल ले जान पर तू आ यांरा[६९]!॥
उस को आदिल[७०] रहीम ठहराना।
उससे दुन्या में बेहतरीं चाहना॥
ख्वाहशों का दिलों में भर लाना।
उन के वर आने की दुआ गाना॥
मतलबी यार उस का बन जाना।
चल परे हट! नहीं वह अंजाना॥
राम जारोब कश[७१] नहीं तेरा।

६८ बांटने के ख्याल पर ६९ ऐ प्यारे दोस्त! ७० मुंसफ, न्यायकारी ७१ झाड़ू देने वाला (भङ्गी)

सिर से गुज़रे, विसाल[72] हो मेरा ॥
ख़्वाहिशों को जिगर से धो डालो ।
हवसे दुन्या[73] को दिल से रो डालो ॥
आर्ज़ू को जला के ख़ाक करो ।
लज़्ज़तों को मिटा के पाक करो ॥
बहके फिरना भटक भटक मानिन्द[74] ।
छोड़ कर हूजीये अभी कामन्द ॥
तू तो मस्जूद[75] है ज़माने का ।
देवताओं का देव तू ही था ॥
ऐहले इस्लाम[76] हिन्दु ईसाई ।
गिर्जा मन्दर मसीत, दोहाई ! ॥
दे के दोहाई राम कहता है ।
तू ही तो राम गौड[77] मौला है ॥

७२ मुलाक़ात, दर्शन ७३ दुन्या के पदार्थों का लालच ७४ झटमूठ ७५ पूजनीय, ७६ ऐ मुसल्मानों! ७७ God, ईश्वर

सब मज़ाहब में सब के मोबंद में।
पूजा तेरी है, नेक में बद में॥
ऐ सदा मस्त राम मतवाला!।
रुतबा औसाफ़ से तिरा बाला॥
ऐ सदा मस्त लाल मतवाला!।
अपनी महिमा में मौज कर वाला॥
"एकमेवाद्वितीय तेरी ज़ात।
वाहदु लाशरीक मेरी ज़ात॥
पास तेरे फटक ले ग़ैरीयत।
ग़ैरमुमकन है, बल बे मक़्वीयत॥
एक ही एक, आप ही हूं आप।
राम ही राम, किस की माला जाप?॥

७८ मंदर ७९ सिफतों ८० एक, बग़ैर मिसाल के ८१ मैद्य होना * सिर्फ एक ही है दो नहीं, लासानी

१.५ आदमी क्या है?

(१.) दाना खशखश का एक बोया था।
बाबा आदम[1] ने इब्तदा में ला॥
एक दाना में ज़ोर यह देखा।
बढ़ गया इस क़दर, नहीं लेखा॥
इस क़दर बढ़ गया फला फैला।
जमा करने को न मिला थैला॥
कुठले कुठली भरे हुवे भरपूर।
बनीये सौदागरों के कोठे पूर॥
एक दाना हक़ीर[2] छोटा सा।
अपनी ताक़त में क्या बला निकला॥
आज बोने को दाना लाते हैं।
इस की ताक़त भी आज़माते हैं॥

१ हज़रत आदम जिसको ईसाई और मुसलमान अपना पैहला पैग़म्बर सृष्टि रचने वाला मानते हैं २ नाचीज़

यह भी खशखाश ही का दाना है ।
यह भी ताक़त में क्या यैगाना है ॥
हूबहू है वुही तो इस में भी ।
शक्ती आदम के बीज में जो थी ॥
सच बतायें, है यह वुही दाना ।
न यह फैला हुवा न *दोगाना ॥
खूब देखो विचार करके आप ।
मौहीयत बीज को कँलील सा नाप ॥
ग़ौर से देखिये हक़ीक़त को ।
नज़र आता है बीज क्या तुम को? ॥
असल दाना नज़र न आता है ।
न वह घटता है, बढ़ न जाता है ॥
मेरे प्यारे! तू ज़ाते बाहद है ।
तेरी क़ुदरत अगरचिः बेअँद है ॥

३ अकेला, बे मिसाल ४ असलीयत ५, थोड़ा सा ६ बे शुमार बग़ैर, गिन्ती के * दूसरी क़िस्म का

(२) जान नन्ही को जबकिः सायंसदान्।
इम्तिहान् को है काटता यक्सान्॥
जिस्म गो होगया हो दो टुकड़े।
लैक मरते नहीं वह यूं कीड़े॥
पेशतर काटने के एक ही था।
जब दीया काट दो हूवे पैदा॥
दोनों वैसा ही ज़ोर रखते हैं।
जैसे वह कीड़ा जिस से काटे हैं॥
दो को काटें तो चार बनते हैं।
चार से आठ बन निकलते हैं॥
क्या दिखाती है, खोल कर यह बात।
काटने में नहीं है आती ज़ात॥
गो मनु का शरीर छूट गया।
पर करोड़ों हनूद हैं पैदा॥

७ छोटी सी ८ सायंस विद्या का जानने वाला ९ सत्य वस्तु

हर ऋषि की नसलें[१०] में है वुही।
शक्ति आदि मनु में जो तब थी॥
हां अगर कुछ कसर है ज़ाहर में।
दुर्रे यक्ता[११] पड़ा है कीचड़ में॥
झट नकालो यह हीरा साफ करो।
ज़िद न कीजीयेगा, बस मुआफ करो॥

(३) एक शीशे में एक ही रू[१२] था।
शीशा टूटा, .अदद[१३] बढ़ा रू का॥
मुखतलिफ हो गये बहुत अबदां[१४]।
इन में ज़ाहर है एक ही इन्सां॥
ज़ैद हो बकर हो .उमर ही हो।
मज़हरे[१५] आदमी है, कोई ही हो॥

१० औलाद ११ बेमसाल मोती १२ चेहरा, मुख १३ गिन्ती, नम्बर १४ देह, जिस्म १५ ज़ाहर होने का स्थान, जताने वाला

गो है नकरे[16] का मारफों[17] में ज़हूर।
नाम रूपों में है, यही मामूर॥
पर यह नकरा बजाते खुद क्या है?
इस में हिस्सों का दखल बेजा है॥
इस्म फरज़ी, शकल बदलती है।
पर जो तू है, सो एक रस ही है॥
तू ही आदम बनाथा, तू है[18]व्वा।
तू ही लाट साहब, तूही हौवा॥
तू ही है राम, तू ही था रावण।
तू ही था वह गड़्याँ ब्रिन्द्राबन॥
झूट तुम को सनम[20]! न जेबाँ है।
तूही मौला है, छोड़ दे है है॥

१६ .आम शब्द जो बोलने वर्तने में आये १७ गुणवाचक अथवा नाम वाचक शब्द १८ आदम हव्वा मुसल्मानों के दो पैग़म्बर हैं जिन से यह पृथ्वि उत्पन्न हुई मानते हैं १९ कृष्ण से मुराद है २०. ऐ प्यारे! २१ वाजब, ठीक

सीमॅबर[22] का वह चांद सा मुखड़ा।
तेरा मज़हर है, नूर का टुकड़ा॥
दिल जिगर सब का हाथ में है तेरे।
नूरे मौफ़ूर[23] साथ में है तेरे॥
माहो ख़ुर्शीद[24], बर्क़ों अञ्जमो नार।
जान करते है राम पर ही निसॉर[25]॥

२२ चांदी वाला २३ बहुत .ज्यादा कीया हुवा प्रकाश, यानी प्रकाशस्वरूप २४ चांद, सूर्य, बिजली, तारे और अग्नि २५ क़ुर्बान्

नोट—(नम्बर १, २, ३ से मुराद तीन प्रकार की युक्तियों से है जिनसे लेखक ने सिद्धान्त को दर्शाया है)

भारत वर्ष.

१ भारत वर्ष की स्तुति.

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा।

हम बुलबुलें हैं उसकी, वह बोस्तां[1] हमारा ॥
गुर्बत[2] में हों अगर हम, रहता है दिल वतन[3] में।
समझो वुहीं हमें भी, हो दिल जहां हमारा ॥
पर्वत वह सब से ऊंचा, हमसाया आसमां का।
वह सन्तरी हमारा, वह पास्वां[4] हमारा ॥
गोदी में खेलती हैं जिस के हज़ारों नदियां।
गुलशन है जिन के दम से रश्के जहां हमारा ॥
ऐ आवे रवदँ[5] गंगा! वह दिन है याद तुझ को।
उतरा तेरे किनारे जब कार्वां[6] हमारा ॥
मज़हब नहीं सखाता आपस में वैर रखना।
हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तान हमारा ॥
यूनानो मिसरो रूमा सब मिट गये जहां से।
बाक़ी है पर अभी तक नामो नशां हमारा ॥

१ बाग़ २ परदेश ३ अपने देश में ४ चौकीदार, मुहाफ़िज़
५ ऐ गंगा नदी के जल ६ क़ाफ़ला

कुच्छ बात है कि हँस्ति[7] मिटती नहीं हमारी।
सदीयों से आस्मां है ना मिहरबान् हमारा॥
अक़बाल[8] अपना कोई मेहरम[9] नहीं जहां में।
मालूम है हमीं को दर्दे निहां[10] हमारा॥

७ मौजूदगी, वस्तुता ८ कवि का नाम है ९ वाक़फ १० छुपा हुवा दर्द

---

२ भारत वर्ष की महिमा.

चिशती[1] ने जिस ज़मीन् में पैग़ामे हक़[2] सुनाया।
नानक ने जिस क़ुलीम[3] में वहदत[4] का गीत गाया॥
तातारियों ने जिस को अपना वतन बनाया।
जिसने हजाज़ियों से दशते अरब[5] छुड़ाया॥
मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है (टेक)
यूनानयों को जिस ने हैरान कर दीया था।

१ मुसलमानों का पैगम्बर २ ईश्वर का हुक्म ३ मुलक ४ अद्वैत ५ अरब मुलक का जंगल, रेगस्तान्

सारे जहां को जिसने .इल्मो हुनर दीया था ॥
मिट्टी को जिस की हक़[6] ने ज़र[7] का असर दीया था ।
तुरकों का जिस ने दामन[8] हीरों से भर दीया था ॥
मेरा वतन वही है । मेरा वतन वही है ॥
फिर ताब[9] देके जिस ने चमकाये कहकशां[10] से ।
टूटे थे जो सतारे फारस के आस्मां से ॥
वहदत की [11] नै सुनी थी दुन्या ने जिस मकां से ।
मीरे अरब[12] को आई ठंडी हवा जहां से ॥
मेरा वतन वही है । मेरा वतन वही है ॥
गौतम[13] का जो वतन है, जापान का हरम[14] है ।
.ईसा के आशक़ों का छोटा योरूशलम[15] है ॥
मदफ़ून[16] जिस ज़मीन में असलाम का चशम है ।

६ ईश्वर ७ स्वर्ग ८ चादर का पल्ला अर्थात जेब ९ ताकत १० आकाश में दूधीया रास्ता (milky path) ११ बांसरी यानी अद्वैत का राग १२ महम्मद १३ बुद्ध भगवान १४ तीर्थ का मुक़ाम, बड़ा मंदर १५ .ईसायों के पूजने का मंदर १६ दफन कीया गया

हर फूल जिस चमन का फ़िर्दौस है, अरम है ॥
मेरा वतन वही है । मेरा वतन वही है ॥

१७ बहिश्त १८ स्वर्ग

---

३ हुब्बे वतन.

देखा है प्यारे ! मैं ने दुन्या का कारखाना !
सैरो सफ़र कीया है छाना है सब ज़माना ॥
अपने वतन से बेहतर कोई नहीं ठिकाना ।
खारे वतन को गुल से खुशतर है सब ने माना ॥
ऐहले वतन से पूछो, तुम खूबियां वतन की ।
बुलबुल ही जानती है आज़ादियां चमन की ॥ १ ॥
खाओ हवा वतन की, कुछ और ही मज़ा है ।
पानी पीयो वतन का, अमृत से भी खरा है ॥

१ अपने देश की महब्बत २ अपना देश ३ स्वदेश का कांटा अर्थात दुःख ४ उत्तम ५ स्वदेश के लोग ६ बाग़ ७ अच्छा, स्वच्छ

खाके वतन न कहिये, इक्सीरो कीमीया है।
रुतबा तेरी ज़िमी का कुछ ऐ वतन! जुदा है॥
जो शै गरज़ यहां है दुन्या से है निराली।
नामे वतन ने इस में ताज़ाः है जान डाली ॥२॥
बागों में फिर के देखो कुछ और ही है नज़हत।
खेतों से यहां के आती है आंख में तरावत॥
रखते हैं यां के दरया कुछ और ही लताफत।
यां के पहाड़ में है .अर्शे बिरीं[11] की रफ.अत॥
दुन्या में फिर के देखा हरगज़ कहीं नहीं है।
बागे बहिश्त कहिये यां की ज़िमीन नहीं है॥३॥
है धूप में वतन की कुछ और नूर तावां।
और चांदनी यहां की चांदी सी है दरख्शां॥

८ दुःखनाशक ९ दर्जा १० शुद्धताई ११ सबसे अति ऊंचा आकाश १२ मेहरबानी, बरकत १३ और सूरज चमक रहा है १४ चांदी सी है चमकीली

अन्वार[15] की तजल्ली[16] बिजली से है नुमायां[17] ॥
रैहमत की वह झड़ी है कहिये न उस को बारां[18] ॥
मिस्ले ज़मीरे[19] रौशन मतलों[20] की है सफाई ।
दिल में उठीं उमंगे, जिस दम घटा भर आई ॥ ४ ॥
देखे यहां के इन्सां अक्सर फरिश्ता[21] खो हैं ।
सब औरतें हसीं[22] हैं सब मर्द खूबरू[23] हैं ॥
रखते हैं यहां के हैवां कुछ और [24]खो-ओ-बू हैं ।
और तायरों[25] को देखो तो क्या ही खुशगुलू[26] हैं ॥
इन्सान और हैवान यूं तो हैं, देखे भाले ।
लेकिन यहां हैं सब के अन्दाज़[27] कुछ निराले ॥ ५ ॥
जौहर[28] वतन में आकर खुलता है आदमी का ।

१५ अर्थात् चांद सितारे इत्यादि १६ प्रकाश १७ ज़ाहर १८ वर्षा १९ रौशन (शुद्ध) चित्त (दिल) की तरह २० आकाश से मुराद है २१ देव स्वभाव रखने वाले २२ सुन्दर २३ सुंदर शकल २४ स्वभाव और मिज़ाज २५ पक्षी २६ उत्तम गले (सुर से गाने) वाले २७ माप, वज़न यहां क़द से मुराद है २८ गुण, खूबी

जब था वतन से बाहर, बेशक वह आदमी था ॥
यां आदमी नहीं वह है बाप या कि बेटा।
कहता है कोई भाई कोई उसे भतीजा ॥
यां गोशेजद है हरसू उलफत भरी सदायें॥
बाहर वतन से हरगज़ जो कान में न आयें ॥ ६ ॥
है हम को जानो दिल से अपना वतन प्यारा।
अच्छा वह दिन है उस की खिदमत में जो गुज़ारा ॥
कहते हैं हम वतन को आंखों का अपनी तारा।
वह जान है हमारी, ईमान है हमारा ॥
हां मेहेर! यह सखुन है, दुन्या में सब ने माना।
अपने वतन से बेहतर कोई नहीं ठिकाना ॥ ७ ॥

२९ कान भर रही या कानों को सुना रहीं ३० प्रेम भरी ३१ आवाज़ें ३२ कवि का नाम है ३३ बात, नसीहत है ३४ अच्छा, उत्तम

४ राग देश.

कभी हम भी वलन्द् इक़वाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
हर फन में रखते कमाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ १ ॥

पढ़ते थे जब हम वेद को, जानें थे सब के भेद को।
रखते न अपनी मसाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ २ ॥

पाबन्द थे जब धर्म के, माहर थे अपने कर्मके।
रौशन सभी पुर जेलाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ ३ ॥

जब से जेहालत आ गयी, तारीकी हर सूं छा गयी।
मुफलस हैं जो खुशहाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ ४ ॥

१ दबदबे वाले, बड़े तप वाले, २ अज्ञान ३ अन्धकार ४ तरफ

हाकम हैं जो महकूम थे, खादम हैं जो मखदूम थे।
शेर अब हुवे जो शृगाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद
हो ॥ ७ ॥

हालत दिगर गूं हो गयी, क़िसमत किशवर की सो गयी।
रोते हैं अब जो निहाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद
हो ॥ ८ ॥

५ प्रजा, जिन पर हकूमत थी ६ नौकर ७ खिदमत कीया गया अर्थात मालक ८ दूसरी तरह ९ मुल्क १० खुश, आनन्द

---

८ भजन.

इक दिन राहे तरक्की में हम भी रहनमा थे।
अब लोग पूछते हैं नामो नशां हमारा ॥
यूनान मिसर रूमा इंगलैण्ड गाल जरमन।
शागिर्द इक ज़माने में था जहां हमारा।

१ लीडर, रास्ता दिखाने वाला २ मुल्कों के नाम हैं

दुन्या में हो रहा था भारत वर्ष का चर्चा ।
सब की .ज़ुबान् पर था लुत्फ़े बियान् हमारा ।
गोतम व्यास भीषम थे नामवर यहीं के ।
अर्जुन सा तीर अफगन था इक जवान् हमारा ॥
रौनक़ चमन की सारी फ़सले खज़ां ने लूटी ।
वीरान हो गया है सब गुलिस्तान् हमारा ॥
हां अहले हिन्द उट्ठो, हालत ज़रा संभालो ।
नक़शा हुवा दिगर गूं है बे गुमान् हमारा ॥
राहत की गर तलब है, सब इत्तफाक़ करलो ।
छोड़ो नफाक़ इसी में होगा ज़ियान् हमारा ॥

३ हमारे ही ज़िकर के गीत अथाव महिमा ४ तीर फेंकने वाला ५ जवान मर्द, बहादर ५ बाग़ की बहार ६ भारत वर्षी ७ उलट, दूसरी तरह का ८ आराम, आनन्द ९ जिज्ञासा १० नुक्सान

६. लौनी.

(टेक) आज्ञा में जिन की जहान था, उन की कुल में हमीं तो हैं।
सात द्वीप नवखंड बीच में जिन का मान था हमीं तो हैं॥
(चौक) चौदाः[1] विद्या जो निधाने[2] थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
जिन से चतुर हैं पशू हैवान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
वेदों का मानें प्रमाण थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
बांचे हैं मिथ्या .कुरान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
सब विद्याओं की जो खान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं॥ १॥ सात द्वीप०
ब्रह्मण यहां पूरे गुणवान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।

१ चौदह विद्यामें चतुर अर्थात चौदह विद्या के खज़ाने वाले २ कान, मंधा, खज़ाना

मूर्ख हूये ज़ाती अभिमान में, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
सब का जो चाहें कल्याण थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
ठग्गी की धरली दुकान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
विद्या का करते थे दान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं॥ २ ॥ सात द्वीप०

ऋषी मुनी जहां ज्ञान वान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
भंग चर्स में हैं गलैतां[३] अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
जिन का देव सर्व शक्तिमान था, उन की कुल में हमीं तो हैं।
जिन का इष्ट है विषय ध्यान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं।
संसकृत जिन की अपनी ज़बान थी, उन की कुल में हमीं तो हैं॥ ३ ॥ सात०

आकाश में चलते विमान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
रेल देख हो गये हैरान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥

३ फंसे हुवे, डूबे हूवे

भीम सेन वाली बलवान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
घुटनों पर रख उठें हाथ अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
कृष्ण, राम, भीषम समान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं
॥ ४ ॥ सात०

ब्रह्मचर्य की जिन को बान थी, उन की कुल में हमीं तो हैं।
बल वीर्य खोय नातवाँ हुवे, ऐसे नादान हमीं तो हैं॥
लक्षसिंहारी जिन के बान थे उन की कुल में हमीं तो हैं।
चूहे का नहीं कटे कान अब, ऐसी सन्तान हमीं तो हैं॥
अंगद सुग्रीव हनूमान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
५ ॥ सात०

देश उन्नति का था ध्यान जिन्हें, उन की कुल में हमीं तो हैं।
भारत में कर बैठे हान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
प्राणियों पर देते प्राण जो, उन की कुल में हमीं तो हैं।
मद मांस को करे पान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं॥

४ कमजोर ५ लक्ष सिंहों को मारने वाले

गौ जान पर जिनकी: जान थी, उन की कुल में हमीं तो हैं ॥ ६ ॥ सात०

आर्यावर्त जिन का स्थान था, उन की कुलमें हमीं तो हैं।
जिन का स्थान हिन्दुस्थान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
वड़े वड़े यहां धनवान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
भोजन विन हो रहे विरान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
विद्या में करते शिनान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं ॥ ७ ॥ सात०

सत उपदेश करते थे गान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं।
काक शास्त्र करें विसान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
त असत लेते थे छान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं।
सुन के सत जायें बुरा मान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
नँवलसिंह कहे वेद धर्म पर धरे ध्यान फिर हम ही तो हैं ॥ ८ ॥ सात द्वीप०

६ एक शास्त्र का नाम है जिसमें विषय भोग करने की नानाविधि लिखी हुई हैं अर्थात विषय भोग का शास्त्र ७ कवि का नाम है

७ भारत को सुन्ना छोड़ के वह कहां गये महाराजे (टेक

(कली) गये राम लक्ष्मण कहां शूरवीर वलधारी

जिनके वल से पृथ्वि कांपे थी सारी

गये कहां युधिष्ठर भीम भीषम तपधारी

कहां परशुराम अरुजन से शसत्र से खिलारी

कहां करण गये अभिमानी कहां गुरु गुविंद लासानी[1]

प्रताप सिंह वलवानी जिन की विख्यात[2] कहानी

(कीये काज उन्हों ने वड़े, न मन में डरे।

युद्ध में लड़े, नहीं मुंह मोड़ के ॥)

रण अन्दर हर दम गाजे, वह कहां गये महाराजे ॥ १ ॥

कहां गये वसिष्ठ और व्यास से विद्याधर

कहां कनाद गोतम कपल जैमिनी मुनीवर

कहां पतंजल से ऋषी और पाराशर

जिन की कृपा से विद्या फैली घर घर

१ अद्वतीय, जिस की मानन्द कोई और न हो २ मशहूर, प्रसिद्ध

कहां गये पाणिनि भाई जिन रचदी अष्टाध्यायी
कहां गये कृष्ण सुखदाई, जो वैदक धर्मानुयायी
(गये नारद ब्रह्मा कहां, करूं क्या बियान।
रहे नहीं यहां, वह नाता[२] तोड़ के॥)
जा कर परलोक बिराजे॥ वह कहां गये० ॥२॥

कहां हरिश्चंद्र से, राम गये सतवादी
दीये पुत्र स्त्री त्याग और राजादि
कहां गये दशरथ और जनक धर्मानुयायी[४]
नहीं टरे वचन से प्यारी जान गंवाई
कहां शिव धधीज राजा नल, कहां मोर्ध्वज विक्रम शल
कहां दलीप अज रघू निर्मल, रहे बने धर्म में निश्चल
(अब क्या तदबीर बनायें, कहां से लायें।
मुफ्त चिल्लायें, मरें सिर फोड़ के॥)
सब हो गये काज अकाजे[५]॥ कहां वह गये० ॥३॥

२ सम्बन्ध, रिश्ता: ४ धर्म के मुताबक़ चलने वाले ५ ख़राब बेकार, बुरे

क्षत्री कुल में होगये वेश्यागामी
दी डोर धर्म की छोड़ पाप की थामी
ब्राह्मण कुल जो ऋषी मुनीयों के नामी
वह होगये विद्या हीन और बहु दामी
संध्या और गुरुमंत्र विसारा, लगे अग्निहोत्र नहि पियारा
यूं भारत करे पुकारा, कुल डूबा सभी हमारा
(अब भी सोच मतहीन, बनो प्रवीर्ण।
मुरारी चीनं, दिलो जान जोड़ के ॥)
वेदों के बजाओ बाजे ॥ कहां वह गये० ॥ ४ ॥

६ कंचनी से विषय भोग करने वाले ७ भारे के टट्टू अर्थात बहुत दाम मज़दूरी ले कर काम करने वाले, या विद्या धन को छोड़ कर जड़ माया (दौलत) अर्थात रुपय अकट्ठा करने पर लगे हुवे ८ चतुर, चालाक ९ पाओ, अनुभव करो

---

८ राग–समा कैसा यह आया है (टेक)

न यारों सें रही यारी, न भाइयों में वफादारी।

महव्वत उठ गयी सारी, समां कैसा यह आया है॥ १ ॥
जिधर देखो भरी कुलफ़त, भुलादी सब ने है उल्फ़त।
बुरी सोहबत बुरी संगत, समां कैसा यह आया है ॥ २ ॥
सभायें कीं वहुत जारी, वने खुद उन के अधिकारी।
न छोड़े कर्म विभचारी, समां कैसा यह आया है ॥ ३ ॥
वहुत उमदा: कहें लैक्चर, मगर उलटा चलें उन पर।
अक़ल पर पड़ गये पत्थर, समां कैसा यह आया है॥४॥
सचाई को छुपाते हैं, दिल औरों का दुःखाते हैं।
वृथा सांचे कहाते हैं, समां कैसा यह आया है ॥५॥
नहीं व्यवहार की शुद्धि, विपर्यय हो रही वुद्धि।
विचारें मन नहीं कुछ भी, समां कैसा यह आया है॥६॥
घटा है पाप की छाई, उपद्रव होवें हर जाई।
है इक को इक दुःखदाई, समां कैसा यह आया है॥७॥
न जानें देश के वासी, वनें कव सत्य विश्वासी।

१ द्वेष २ सच्चे पुरुष ३ उलटी ४ हर जगह, सब तरफ

मिटे अब कैसे उदासी, समां कैसा यह आया है ॥८॥

---

९ रेखता

सत्य धर्म को छिपा दिया, किसने? नफाक़ ने।
लोगों में छल फैला दिया, किसने? नफाक़ ने॥ } टेक

यह देश इक ज़माने में दुनिया की शान था
अब सब से अदना[1] कर दिया, किस ने?॥ नफाक़ ने० १

द्विज धर्म कर्म करने में रहते थे नित मगन
अब उन को पस्त कर दिया, किस ने?॥ नफाक़ ने० २

हर घर में शब्द सुनते थे वेदों पुराण के
उन सब को ही मिटा दिया, किस ने?॥ नफाक़ ने० ३

महाबली रावण को तो जानत सभी यहां
सब नाश उस का कर दिया, किस ने?॥ नफाक़ ने० ४

१ तुच्छ, नीचा २ ब्राह्मन, क्षत्री, वैश्य जाति ३ गिरा दीया

आया है वक्त अब तो हितैशी बनो सभी
घर घर में दख़्ल कर लिया, किस ने? ॥ नफ़ाक़ ने० ५

४ आपस में हित (प्यार) करने वाले

---

१० सदाये आसमानी (आकाशवाणी)

हाये चेचक ने वाये चेचक ने।
इस अविद्या के हाये चेचक ने॥
कर दिया आत्मा क़रीबुल मर्ग।
क़ैदे कसरत में हो गया संसर्ग॥
चेहरा रौशन था साफ़ शीशा सा।
हो गया दाग़ दाग़ यह कैसा॥
मिहरे तल्अत पै दाग़ आन पड़े।

१ माता नाम बिमारी को कहते हैं (small pox), यहां द्वैत रूपी बिमारी से मुराद है २ मृत्यु के तुल्य ३ नानत्व प्रच्छेद (बहुल्य नानापने की कैद में) ४ आवेश्य, प्रवेश ५ सूरज जैसे सुन्दर मुख पै

तारे सूरज पै कैसे आन चढ़े ॥
एक रस साफ रूये ज़ेबा था ।
दाग़े कसरत का लग गया धब्बा ॥
होगया पुख्त माल माता का ।
यानि वाहन यह सीतला का हुवा ॥
मर्ज़ ऐसा बढ़ा यह मुतअद्दी ।
हिन्द सारे की खबर इसने ली ॥
वह दवा जिस से मर्ज़ जायेगा ।
गौ माता के थन से आयेगा ॥
पुर ज़रूरी है वैक्सी नेशन ।
वरना मरती है यह अभी नेशन ॥
छोड़ दो तुम ज़री तेअस्सब को ।

६ सुन्दर रूप ७ सीतला देवी की स्वारी ८ सवारी अर्थात गधा क्योंकि माता का वाहन गधा होता है ९ बढ़ जाने वाला, फैल जाने वाला १० इस जगह उपनिषद् से मुराद है ११ (अहूंत का) टीका लगाना १२ कुल नसल, कौम १३ तर्फदारी

टीका लगवायेगा अब सब को ॥
गाये के थन से अलफ़[१४] की निश्तर ।
ला रही है अलाज, लीजे कर ॥
शहर हर इक में हर गली घर घर ।
टीका अद्वैत का लगा देना ॥
बच्चे लड़के बड़े हों या छोटे ।
यह सरायत[१५] भरा दवा देना ॥
गर न मानें तो पकड़ कर बाज़ू ।
टीका यह तीनें[१६] जा लगा देना ॥
दर्द भी होगा पीड़ भी होगी ।
डर का नोटस[१७] न तुम ज़रा लेना ॥

१४ अलफ़ इस जगह उस रसाले से मुराद है जिस को स्वामी रामजी महाराज ने अपनी कलम से लिखकर छपवाया था और जिस रसाले के अन्त में यह कविता दर्ज है १५ जल्दी अन्दर घुस (दाखल हो) जाने वाला १६ तीन जगह (यहां तीन शरीरों से मुराद है, कारण सूक्ष्म स्थूल) १७ ख्याल, ध्यान

"शुद्ध तू है" "निरञ्जनोसि[18] त्वम्" ।
लौरी रोते समय यह गा देना ॥
फिर जो चेचक के ज़ख्म भर आयें ।
सीतला भी खुदा मना देना ॥
ग़ैर[19] वीनी-ओ-ग़ैर[20] दीनी को ।
मार कर फूंक इक उड़ा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम तत्सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
प्यारे हिन्दुस्तान्! फलो फैलो ।
पौदे[21] पौदे को ब्रह्म विद्या दो ॥
यह है वह आवे गंग[22] मर्दुमे[23] खेज़ ।
बूटे बूटे को कर जो दे ज़ेर[24] रेज़ ॥
वन है या बाग़ खूबसूरत है ।

१८ तू कल्याण रूप है १९ द्वैत दृष्टि भेद दृष्टि २० भेद ज्ञान २१ बूटे बूटे को २२ गंगा जल २३ आंख जगाने वाला अथवा आंख खोलने वाला या पुरुषों के जगाने वाला २४ मालदार, हरा भरा

सब को इस आँब[25] की ज़रूरत है ॥
रौशनी यह सदा मुबारक है।
जान सब की है, यह मुबारक है ॥
सर्व[26] हो गुल, ग्याँह[27], गेन्दम[28] हो।
रौशनी बिन तो नाक में दम हो ॥
सिफला पन[29], दास पन, कमीना पन!।
छोड़ दे हिंद और चलना बन ॥
काशी मक्का युरुशलम[30] पैरस।
रूस अफरीका अम्रिका फारस ॥
बहरो बर[31], तूल[32] वल्दो अर्ज़ बल्द[33]।
और मरीखे सुर्ख़ों[34] माहे ज़र्द[35] ॥
कुतब[36] तारा, फ़लक[37] के कुल अंजम[38]।

२५ पानी २६ सरु वृक्ष का नाम है २७ घास २८ गेहूं अनाज २९ कमीना पन, कंजूसी ३० ईसायों का तीरथ ३१ खुश्की और तरी (पृथ्वि समुद्र) ३२ तमाम लम्बाई ३३ तमाम चौड़ाई ३४ मंगल तारा ३५ वसन्त ऋतु का मास ३६ ध्रुव ३७ आकाश ३८ तारे

काले अँगरान जो न जानें हम ॥
यह जगह, वह जगह, कहीं, हर जा ।
वह जो था, और है, कभी होगा ॥
मुझ में सब कुछ है, सब मुझी में है ।
मैं ही सब कुछ हूं, ग़ैर मैंने न्याश ॥
ऐ शिखर सीमें तन हिमालय की ! ।
ब्रह्म विद्या की तू ही माता थी ॥
गोद तेरी हरी रहे हर दम ।
गिर्जा पैहलू में खेलती हर दम ॥
मौनसूनों को यह बता देना ।
इन्द्र और वर्ण को सुना देना ॥
वर्षा जब देश में करेंगे जा ।

३९. आकाश के पदारथ ४० मेरे बिना सब नाचीज़ है अर्थात मेरे बग़ैर कुछ नहीं ४१ चान्दी के तन वाली अर्थात बर्फ से ढकी हुई हिमालय की चोटी ४२ पार्वती, ब्रह्म विद्या से मुराद है ४० ग्रीष्म ऋतु में जो तूफ़ान वायू का होता है (Mon soons)

नाज में यह असर खपा देना ॥
चाख भी ले जो नाज मेवों को ।
नशा वेहदत[44] में मस्त फौरन हो ॥
खुद बखुद उस से यह कहा देना ।
शक शुभा एक दम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
ऐ सँबा[45]! जा गुलों की मेहफल में ।
शेर मर्दों के दल में बादल में ॥
चौंक उट्ठें जो तेरी आँहट[46] से ।
कान में उन के सरसराहट से ॥
चुपके से रॉज़[47] यह सुना देना ।
शक शुभाः एक दम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।

४४ अद्वैत ४५ पर्वा की वायू (प्रातःकाल की वायू) ४६ आवाज़ ४७ गुह्य भेद

ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
बिजली ! जा कर जहान पर कौंदो ।
तीराः रवानो को जगमगा तुम दो ॥
दमक कर फिर यह तुम दखा देना ।
शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
द्वैत के, पक्षपात के, भरम के ।
कड़क कर रौंदे ! दो छुड़ा छक्के ॥
गर्ज कर फिर यह तुम सुना देना ।
शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
जाओ जुंग जुग जीयोगी गंगा जी ।

४८ अंधेरी कोठी में रहनेवाले ४९ बीजली ५० युग से मुराद है.

ले अगर घूंट कोई जल का पी ॥
उस के हर रोम में धसा देना ।
शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
गाओ वेदो ! मैना मेरी गाओ ।
जाओ जीते रहो, सदा जाओ ॥
ऐहले ट्विट विट हो, कोई पंडित हो ।
भक्ति तुमरी सदा अखंडित हो ॥
खैंच कर कान यह पढ़ा देना ।
शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
ऐहले अख़बार ! अपने पेपर्ज़ पर ।
कूक कैलास की छपा देना ॥

१,१ तारीफ़ २,२ वर्तमान काल का पढ़ा हुवा प्या। ३,३ अख़बारों में.

ऐहले तालीम! मदरस्सों में तुम।
बच्चों कच्चों को यह पिला देना॥
नौजवान! हिन्दुओं के जलसों पर।
कूक से मन के सब जगा देना॥
चौक, मन्दर में, मेले में जाकर।
ऊंचे पञ्चम का सुर से गा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम्॥
रिश्ता नाता की भी सम्बंधी सब।
शादी जलसे पै हों अकट्ठे जब॥
शादी जोयां हों, हेच दुन्या में।
भूल बैठे हों यह कि "हूं क्या मैं"॥
चोट नक़्कारे पर लगा देना।
शक शुभाः एकदम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।

५४ ऐ देखनेवालों ५५ ब्याह करनेवाले, आनन्द ढूंढनेवाले.

ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥

जाने मन ! वक़्ते नज़ा, वाल्दि को ।
पाठ गीता का यह सुना देना ॥
" तत्त्वमसि " फूंक कान मे देना ।
" तू खुदाई " का दम लगा देना ॥
बैठ पहलू में वार्दैन यह कूक ।
आह में खूब पिस पिसा देना ॥
हल आंसू में करके फिर इस को ।
सीने पर बाप के गिरा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
मौत पर यह सबक़ सुना देना ।
मातमी मुर्दा दिल जला देना ॥
लाधड़क शंख यह बजा देना ।

५६ मृत्यु काल ५७ पिता ५८ तू वह यार खास है (तूही वह ब्रह्म है) ५९ तू खुदा है ६० इज़्ज़त के साथ

शक शुभा एक दम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
मरने लड़ने को फौज जाती हो ।
सामने मौत नज़र आती हो ॥
मिसल अर्जुन के दिल बढ़ा देना ।
मारू बाजे में गीत गा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम तत् सत् है ओम तत् सत् ओम् ॥
घुर्की तुम को जो दे कभी नाफ़ैह्म ।
तुम ने हरगीज़ भी छोड़ना मत रैह्म ॥
धमकी गाली गलोच और अनबन ।
प्यारे ! खुद तू है, तू ही है दुशमन ॥
रमज़ आंखों से यह बता देना ।
हाथ में हाथ फिर मिला देना ॥

६१ ना समझदार, कमअक़ल.

कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
गर .अदालत में तुम को लेजायें ।
.ईसा सुक़रात तुम को ठेहरायें ॥
तुम तो ख़ुद मस्तीये मुजस्सम[६२] हो ।
दावा अर्ज़ी क़सूर कैसे हो ॥
चीफ जस्टस का दिल हिलादेना ।
हां ! गला फाड़ कर यह गा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
नीज़ मक़्तल[६३] में ख़ुश खड़े होकर ।
हाज़िरीं[६४] के दिलों में घर कर कर ॥
उङ्गलियां उठ रहीं हों चारों तरफ ।
हर कोई रख रहा हो तुम पर हर्फ[६५] ॥

६२ आनन्द स्वरूप ६३ कतल (फांसी) की जगह ६४ मौजूद लोग ६५ नुक्स अलज़ाम.

क़ातलों का भरम मिटा देना।
"ग़ैर फ़ानी हूं मैं" दिखा देना॥
काटा जाने को सिर झुकादेना।
नार्राअह् से गूंज इक उठा देना॥
शक शुभाः एकदम मिटा देना
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम तत् सत् है ओम तत् सत् ओम्॥

६६ न मरनेवाला, अमर ६७ गरज.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

इति रामवर्षा समाप्ताः

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

भजनों की वर्णानुक्रमणिका.

अ

भजन. पृष्ठ

ज (ज्ञ)

भजन.	पृष्ठ.

भजन.	पृष्ठ.

झ.

भजन: पृष्ठ.

भजन. पृष्ठ.

ध

न

इति वर्णानुक्रमणिका समाप्तः